

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-21/2012-14
वर्ष : 71 ★ अंक : 02 ★ मूल्य : 10 रु.
10 फरवरी, 2013 ★ माघ, 2069

ISSN
2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

गुरुद्वय हीराचन्द्र-मानचन्द्र दीक्षा अर्द्धशताब्दी

नवकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं

णमो सिद्धाणं

णमो आयरियाणं

णमो उवज्झायाणं

णमो लोए सव्वसाहूणं।।

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।



मंगल-मूल धर्म की जननी,
शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी,
महिमामयी यह 'जिनवाणी'।।



दूध की धरती खून से लथपथ..!



गोमांस निर्यात का कड़वा सच

सन २००६-०७ में
4,94,505 मेट्रिक टन गोमांस निर्यात

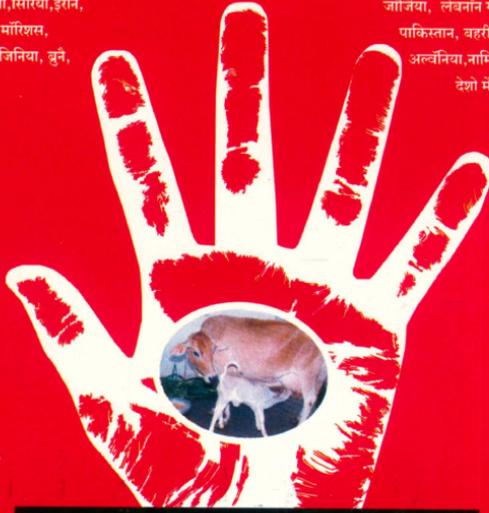
सन २००८-०९ में
4,62,750 मेट्रिक टन गोमांस निर्यात

सन २००७-०८ में
4,83,478 मेट्रिक टन गोमांस निर्यात

सन २००९-१० में
3,11,305 मेट्रिक टन गोमांस निर्यात

वियतनाम, मलेशिया, फिलिपाइल्स, कुवैत,
अंगोला, ओमन, इराक, कांगो, सिरिया, इरान,
अर्मेनिया, कोटडिव्वायर, मॉरिशस,
कोमोरोस, येमेन, इक्वतुलजिनिया, युने,
उझबेकिस्तान जैसे कई

इजिप्ट, सऊदी अरब, अरब अमिराती, जॉर्डन,
जॉर्जिया, लेबनॉन रबिन, सेनेगल, थाया, कतार
पाकिस्तान, बहरीन, अंडोवेजन, तजाकिस्तान,
अल्बानिया, नामिबिया, चीन, अफगानिस्तान,
देशों में यह मांस निर्यात हो रहा है।



पवित्र भारतभूमिपर कब तक चलेगा यह हिंसक दौर ?



अहिंसा तीर्थ

रतनलाल सी. बाफना गो सेवा अनुसंधान केंद्र

'अहिंसा तीर्थ', कुसुंबा, अजंता रोड, जलगाँव फोन : 0275-2270125, सुविधा केंद्र : 2220212

सौजन्य

रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स

'नयनतारा', सुभाष चौक,
जलगाँव
☎ 0257-2223903

'स्वर्णतीर्थ', आकाशवाणी चौक,
जालना रोड, औरंगाबाद
☎ 0240-2244520

'नयनतारा इस्टेट', उन्नावली रोड,
संभाजी चौक, नासिक
☎ 0253-2315644

जहाँ विश्वास ही परंपरा है।

मानवीय आहार जाकाहार।

Jai Guru Hasti

Jai Guru Heera

Jai Guru Maan

॥ जैनं जयति शासनम् ॥

दान से पुण्य होता है, पर संयम से कर्मों की निर्जरा होती है ।
दान हृदय की सरलता है, पर संयम हृदय की शुद्धता है ॥

DP Exports is leading Indian firm specializing in import, export and manufacture of diamonds and jewellery. We offer a wide range of rough diamonds, along with a specialization in the field of manufacturing polished diamonds and jewellery.



*timeless jewels
unmatched quality
flawless craftsmanship*



Dharamchand Paraschand Exports

1301, Panchratna, Opera House, Mumbai - 400 004. India.

t: +91 22 2363 0320 / +91 22 4018 5000

f: +91 22 2363 1982 email : dpe90@hotmail.com

॥ महावीराया नमः ॥

जयगुरु हस्ती

जयगुरु हीरा

जयगुरु मान

जिस दिन श्रद्धा जग जावेगी, अनमोल-दुर्लभ परम अंग रूप मानव जीवन को समर्पण करते देर नहीं लगेगी। श्रद्धा है तो प्राण अर्पण भारी नहीं लगेगा।

With Best Compliments From : -आचार्य श्री हीरा



S. .D. GEMS & SURBHI DIAMONDS

Prakash Chand Daga

Virendra Kumar Daga (Sonu Daga)

202, Ratna Deep, Behind Panchratna, 78- J.S.S. Road, Mumbai- 400 004

Ph. : (O) 022-23684091, 23666799 (R) 022-28724429

Fax : 022-40042015 Mobile : 098200-30872

E-mail : sdgems@hotmail.com

Jai Guru Hasti

Jai Guru Heera

Jai Guru Maan

With Best Compliments from :

Basant Jain & Associates, Chartered Accountants

BKJ & Associates, Chartered Accountants

BKJ Consulting Private Limited

Megha Properties Private Limited

Ambition Properties Private Limited

601, Dalamal Chambers, New Marine Lines, Mumbai-400020

बसंत के. जैन

अध्यक्ष : श्री जैन रत्न युवक परिषद, मुम्बई

ट्रस्टी : गजेन्द्र निधि ट्रस्ट

Tel. : (O) 22018793, 22018794 (R) 28810702

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

✠ संरक्षक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

✠ संस्थापक

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

✠ प्रकाशक

विरदराज सुराणा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

✠ प्रधान सम्पादक

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द्र जैन
श्रीमती शरदचन्द्रिका मुणोत सामायिक-स्वाध्याय
भवन, नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)
फोन : 0291-2626279
E-mail : jinvani@yahoo.co.in

✠ सह-सम्पादक

नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

✠ भारत सरकार द्वारा प्रदत्त

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-RJ/JPC/M-21/2012-14
ISSN 2249-2011



भणंता अक्करेंता य,
बंधमोक्खपइण्णिणो।
वायावीरियमेत्तेण,
समासासेति अप्पयं॥

-उत्तराध्ययन सूत्र, 6.10

बन्ध-मोक्ष के परिज्ञाता,
परमार्थ कहें, पर चले नहीं।
वचनमात्र के बल से ही,
आश्वस्त स्वयं को करें नहीं॥

फरवरी, 2013

वीर निर्वाण संवत्, 2539

माघ, 2069

वर्ष 71

अंक 2

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 120 रु.

आजीवन देश में : 500 रु.

आजीवन विदेश में : 12500 रु.

स्तम्भ सदस्यता : 21000/-

संरक्षक सदस्यता : 11000/-

साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क भेजने का पता- जिनवाणी, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-03 (राज.)

फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in

ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	जैन जीवन-पद्धति	-डॉ. धर्मचन्द्र जैन	7
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	11
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	12
	वाग्वैभव(12)	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	13
प्रवचन-	रोगकाल में भी न हो आर्त्तध्यान	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	14
	श्रद्धा को दें सही दिशा	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	22
संगोष्ठी-आलेख-	जैन जीवन शैली : एक चिन्तन	-डॉ. दयानन्द भार्गव	29
अंग्रेजी-स्तम्भ-	Significance of the six Avashyakas (essentials)	-Dr Priyadarshana Jain	35
युवा-स्तम्भ-	जैन जीवनशैली : एक समग्र विश्लेषण	-श्री रणजीतसिंह कूमट	39
पत्र-स्तम्भ-	में ही क्यों ?	-आचार्य श्री विजयरत्नसुंदरसूरिजी	50
तत्त्व-ज्ञान-	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (78)	-श्री धर्मचन्द्र जैन	55
नाटी-स्तम्भ-	जैन जीवन-शैली का बालकों में बीजारोपण कैसे हो ?	-डॉ. मंजुला बम्ब	59
स्वास्थ्य-विज्ञान -	स्वास्थ्यवर्धक जैन जीवन-शैली	-डॉ. चंचलमल चोरडिया	70
बाल-स्तम्भ -	किशोर मन की जिज्ञासाएँ (2)	-श्री मनोहरलाल जैन	78
कविता/गीत-	अन्तर से स्वीकार करो	-श्री मोहन कोठारी 'विनर'	58
	मान गुरु को करें हम नमन	-श्री धर्मचन्द्र जैन	66
	स्वाध्याय : छब्बीस नारे	-डॉ. दिलीप धींग	67
	रत्नसंघ के हैं सिणगार	-श्री गजेन्द्र कुमार जैन	77
	परम उपकारी	-श्रीमती चन्द्रलता महता	119
विचार-	पाप से करें किनारा, धर्म का लें सहारा	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	68
परिचर्चा-स्तम्भ-	संवाद	-संकलित	69
संस्मरण-	रत्नसंघ के दिव्य माणक थे माणकमुनि	-श्री अजीत भण्डारी	76
युवक-परिषद्-	आओ स्वाध्याय करें त्रैमासिक प्रतियोगिता(31)	-श्री नमन मेहता	81
श्राविका-मण्डल-	मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (34)	-संकलित	84
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-डॉ. धर्मचन्द्र जैन	88
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	90
	स्वज्जिका परीक्षा : एक मॉडल पेपर	-संकलित	120
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	121

जैन जीवन-पद्धति

❖ डॉ. धर्मचन्द्र जैन

जैन जीवन-पद्धति जैनों के लिए तो उपयोगी है ही, विश्व के लिए भी इसकी उपयोगिता असंदिग्ध है। आध्यात्मिक, मानसिक और शारीरिक तीनों स्तरों पर जैन जीवन-पद्धति मनुष्य को स्वस्थ बनाती है। किन्तु ऐसे कम ही जैन गृहस्थ होंगे जो इस पद्धति के अनुसार अपना जीवन जीते हैं। साधु-साध्वियों के लिए अलग जीवन-पद्धति है तथा गृहस्थों के लिए अलग। पूर्ण ईमानदारी के साथ भावों की विशुद्धि करते हुए यदि आगमोक्त जैन जीवन-पद्धति को अपनाया जाए तो जीवन की अनेक समस्याओं का निराकरण साधक को सहज प्राप्त हो जाता है। यहाँ पर गृहस्थों की जीवन-पद्धति पर विचार करना ही अभीष्ट है।

जैन जीवन-शैली का सबसे प्रमुख प्रतिपाद्य है- हिंसा का अल्पीकरण अर्थात् कम से कम हिंसा हो। मन, वचन और काया तीनों स्तरों पर इसके प्रति जागरूक होने की आवश्यकता है। प्रमाद के वशीभूत व्यक्ति हिंसक विचारों से ग्रस्त हो जाता है और वह तुच्छ स्वार्थों की पूर्ति के लिए अथवा अनावश्यक रूप से ही हिंसा करता रहता है। श्रावक दो करण एवं तीन योग से हिंसा का त्यागी होता है। वह प्राणिमात्र के प्रति करुणाशील होकर मैत्री का प्रसार करने वाला होता है। अतः उसका जीवन दूसरों के लिए भी आदरणीय बनता है। किन्तु जो परिग्रह की अमर्यादित आकांक्षाओं में जीता है वह हिंसा से विरत नहीं हो पाता। इसलिए जैन जीवन-पद्धति में परिग्रह की मर्यादा पर भी बल दिया गया है। परिग्रह की मर्यादा तब होगी, जब लोभ का संवरण होगा। लोभ पर संयम तब होगा जब ऐन्द्रियक विषयों के प्रति आकर्षण कम होगा तथा सम्यग्दृष्टि का विकास होगा। जीवन की वास्तविक आवश्यकताएँ सीमित होती हैं, सांसारिक करणीय कार्यों के लिए भी धन के उपयोग की सीमाएँ हैं, किन्तु मनुष्य के मन में जो असीमित आकांक्षाएँ होती हैं, वे ही दुःखदायी होती हैं। जैन-पद्धति हमें आकांक्षाओं को समझने एवं उन पर नियन्त्रण करने की प्रेरणा प्रदान करती है। यह हमें न केवल शान्ति का मार्ग प्रशस्त करती है, अपितु दूसरों के प्रति प्रेम एवं करुणा का संचार करते हुए सह-अस्तित्व तथा सामंजस्य के वातावरण को भी निर्मित करती है।

लोभ पर जब नियन्त्रण होता है तो जीवन में प्रामाणिकता का पुट अपने आप आ

जाता है। व्यापार में प्रामाणिकता के साथ जीवन-व्यवहार में भी प्रामाणिकता का समावेश जैन जीवन-पद्धति का अंग रहा है और आज भी आदर्श श्रावकों में इसका अस्तित्व दृगोचर होता है। जहाँ प्रामाणिकता हो वहाँ भ्रष्टाचार का क्या काम?

मृत्यु अवश्यभावी है, संसार से सम्बन्ध-विच्छेद होना सुनिश्चित है, व्यापार-व्यवसाय से नाता छूटना भी अवश्यभावी है। इस सत्य को ध्यान में रखकर जीवन का लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए तथा व्यापक चिन्तन के साथ अनेकान्तवाद की दृष्टि को अपनाते हुए जीवन का सम्यक् प्रबन्धन करना चाहिए। अविरति या असंयम में व्यतीत जीवन व्यक्ति को जड़ता, पराधीनता, प्रमाद, हिंसा, कटुता आदि की ओर अग्रसर करता है, जो अशान्ति उत्पन्न करने में निमित्त बनते हैं। जैन जीवन-पद्धति संयम एवं व्रत-नियमों के साथ जीवन जीने की प्रेरणा करती है, जिससे खान-पान पर तो संयम होता ही है अनावश्यक इच्छाएँ भी नियन्त्रित हो जाती हैं।

आहार-संयम पर जैन जीवन-पद्धति में विशेष बल दिया गया है। आज जैन समाज में अधिक आकर्षण आहार का है। पचासों प्रकार के व्यंजन जब विवाह-समारोह में उपलब्ध होते हैं तो लोगों को सुखद प्रतीति होती है। आयोजनकर्ता भी इसमें गौरव का अनुभव करता है। भूख हो न हो, स्वाद का रस अति आहार की इच्छा को जन्म देता है। फिर अनेक प्रकार के रोग व्यक्ति को घेर लेते हैं। सामाजिक रूप से कमजोर परिवारों पर भी इस प्रकार के आयोजनों का विपरीत प्रभाव पड़ता है। रात्रि-भोजन त्याग जैन जीवन-पद्धति की एक विशेषता है, किन्तु इसको आज कितने लोग अपना रहे हैं? इसका पता विवाह-समारोहों में चलता है, जहाँ सूर्यास्त पूर्व भोजन में बहुत कम लोग नज़र आते हैं तथा रात्रि में पाण्डाल भरे रहते हैं। दयाव्रत का आराधन करने वाले व्यक्ति भी जब रसलोलुप होते हैं तो उनकी साधना भी पूर्ण हितकारी नहीं होती।

जैन युवा यदि प्रारम्भ से जैन जीवन-पद्धति का अभ्यास करें तो उन्हें यह कहने का अवसर नहीं मिलेगा कि धर्म का आचरण व्यर्थ है। धर्म का आचरण केवल धर्म-स्थलों में ही नहीं होता, वह जीवन के प्रत्येक कार्य में रचा-बसा होता है। हम दूसरों को कितना धोखा देते हैं, कितना शोषण करते हैं, कितना अपमान करते हैं, कितना भेदभाव करते हैं, कितनी क्रूरता बरतते हैं, कितने झूठ बोलते हैं, कितनी चोरी करते हैं इत्यादि अनेकविध अपने व्यवहार का जब हम अवलोकन करते हैं तब धर्म का आचरण स्थान लेने लगता है। हमें जब यह अनुभव हो कि हमारा उक्त व्यवहार सही नहीं है, हमें इसे सुधारना है तो स्वतः जो आचरण होगा, वह भी धर्म का ही आचरण होगा। क्योंकि श्रावक के पाँच अणुव्रतों में

जीवन को इसी प्रकार संवारा गया है, जिससे जीवन में हिंसा का अल्पीकरण, सत्य का सम्प्रयोग, अदत्तादान का त्याग, मैथुन से विरमण तथा परिग्रह का परिमाण सही रूप में प्रकट होता है। ऐसा जीवन स्वयं के लिए तो संतोष एवं शांति का वाहक होता ही है, किन्तु दूसरे भी ऐसे व्यक्ति को पसन्द करते हैं। जो दूसरों के लिए पीड़ाकारी होता है, बात-बात में झूठ बोलता है, व्यापार-व्यवसाय में प्रामाणिकता नहीं रखता, वासनाओं का गुलाम होता है तथा लोभ पर लगाम नहीं रखता, वह व्यक्ति दूसरों का अहित करने में कभी नहीं हिचकता। हमारे व्यवहार से किसी का अहित न हो, ऐसा भाव जैन जीवन-पद्धति से विकसित होता है।

धर्म दिखावे का न हो, भीतर से हो तो ही उसका लाभ अवश्य अनुभूत होता है। कोई हमारे धर्माचरण की प्रशंसा करें या न करें इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, यह तो स्वयं के लिए पुण्य, संवर और निर्जरा का हेतु बनकर दुःखमुक्ति का साधन बनता है। प्रशंसा और प्रतिष्ठा में उलझ कर जो धर्माचरण करने का दंभ करता है वह तो दुःख की सरिता को ही प्रवाहित करता है।

दूसरों के साथ व्यवहार करते हुए हम आग्रह बुद्धि का त्याग करें, दूसरों के विचारों को भी सुनें और समझें, शान्ति के साथ सही तथ्यों के आधार पर निर्णय लें एवं सबका समुचित आदर करते हुए चलें तो जैन जीवन-पद्धति हमारे जीवन का अंग बन सकती है।

सप्त कुव्यसनों का त्याग जैन जीवन-पद्धति की एक अभिन्न विशेषता है। बचपन से ही इसके संस्कार बालक-बालिकाओं को दिए जाते हैं। मद्य, मांस, शिकार, जुआ, चोरी, परस्त्री-गमन, वेश्या-गमन, इन सात कुव्यसनों से दूर रहकर बालक अनेकविध बुराइयों से बच जाता है। आगे चलकर वह गुरुजनों की सत्संग करता है एवं नियमित रूप से सामायिक-स्वाध्याय को जीवन में स्थान देता है तो वह अपने जीवन को सम्यक् सोच के साथ सही दिशा देने में समर्थ होता है।

विश्व में भ्रष्टाचार की समस्या हो अथवा आतंकवाद की, पर्यावरण प्रदूषण की समस्या हो अथवा पारिवारिक विघटन की, आर्थिक मंदी की समस्या हो अथवा जलाभाव एवं भूमण्डलीय ताप की, इन समस्त समस्याओं का समाधान जैन जीवन-पद्धति में निहित है। विश्व-स्तर पर इस वास्तविकता को उजागर करने की आज महती आवश्यकता है। भगवान् महावीर के विचार इस दृष्टि से सर्वत्र प्रसारित किए जाने योग्य हैं। वैर से वैर शान्त नहीं होता, क्षमा या निर्वैरता से ही वैर को शान्त किया जा सकता है। असीमित इच्छाओं को उत्पन्न करने से समृद्धि नहीं आती, अनावश्यक इच्छाओं की अनुपयोगिता समझ में

आने पर समृद्धि का अनुभव अपने आप होता है। भोगोपभोग परिमाण व्रत इस बात का संदेश देता है कि हमें अपनी इच्छाओं को सीमित कर लेना चाहिए, इसी में अपना हित है।

तपस्या को जैन जीवन-पद्धति में विशेष स्थान दिया गया है। इससे सहिष्णुता का विकास होता है, अपनी इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने का अभ्यास होता है, प्रायश्चित्त आदि आभ्यन्तर तप के आचरण से आत्म-विशुद्धि का अनुभव होता है। विपरीत परिस्थितियों में समभाव की साधना से अपने आवेगों पर नियन्त्रण करने की क्षमता का विकास होता है। रागद्वेषात्मक प्रतिक्रियाओं का उत्पात नहीं होता। किन्तु आज तप का बाहरी रूप अधिक दिखाई देता है। तपस्या का प्रदर्शन और गणना जैन जीवन-पद्धति की असली तस्वीर नहीं है। असली तस्वीर तो आत्म-शोधन में उसकी उपयोगिता से सिद्ध होती है।

जैन जीवन-पद्धति में पुरुषार्थ का महत्त्व है। अपना सुधार अपने हाथ में है, उसके लिए आत्म-निरीक्षण करने की आवश्यकता है। आत्म-मूल्यांकन ही आत्म-सुधार का मार्ग प्रशस्त करता है। अपने दोषों का निकन्दन हम ही कर सकते हैं। स्वाध्याय, सामायिक, प्रतिक्रमण एवं धर्म-साधना के सभी पक्ष इसे ही पुष्ट करते हैं। यह जैन जीवन-पद्धति मानवमात्र के लिए उपादेय है, इस तथ्य को विश्वस्तर पर स्थापित किए जाने की आवश्यकता है।

आज मनुष्य स्वतन्त्रता के नाम पर स्वच्छन्द बन रहा है, उसे यह ज्ञात नहीं कि वह सही मार्ग पर जा रहा है या गलत मार्ग पर। उसे जो अच्छा लगता है, बस वह उसे सही मानता है, किन्तु यह दृष्टि सही नहीं है। अच्छा लगना श्रेयकारी हो, यह आवश्यक नहीं है। बालक को टॉफी अच्छी लगती है, किन्तु हम जानते हैं कि वह उसके लिए श्रेयकारी नहीं है। इसी प्रकार हमें हमारी प्रवृत्तियों एवं सोच का पुनरीक्षण कर सम्यक् सोच एवं सही मार्ग का चुनाव करना होगा।

जैन जीवन-पद्धति में व्यक्ति के सुधार की बागडोर उसके हाथ में सौंपी गई है। उसके लिए आवश्यक है कि व्यक्ति अपनी पदार्थवादी दृष्टि के स्थान पर आध्यात्मिक दृष्टि का विकास करे। पदार्थवादी दृष्टि व्यक्ति को पराधीनता, जड़ता, अशान्ति एवं दुःख की ओर ले लाती है, जबकि आध्यात्मिक दृष्टि उसे स्वाधीनता, चिन्मयता, शान्ति का अनुभव करने के साथ वास्तविक सुख का दर्शन कराती है। जैन जीवन पद्धति में प्रदर्शन को नहीं आत्म-दर्शन को महत्त्व है। पद, पैसा एवं प्रतिष्ठा की दौड़ व्यक्ति को थका देती है, किन्तु पूर्णता की प्राप्ति नहीं कराती, जबकि परम सत्य की ओर अग्रसर आत्मार्थी व्यक्ति को सभी परिस्थितियों में आनन्द का अनुभव होता है। वह पूर्णता को प्राप्त कर सकता है। ★

आगम-वाणी

कर्मों का फल

इह जीविए राय! अस्मासयंमि, धणियं तु पुण्णाइं अकुव्वमाणो।
 से सोयइ मच्चु-मुहोवणीए, धम्मं अकाऊण परंमि लोए॥
 जहेह सीहो व मियं गहाय, मच्चू नरं नेइ हु अंतकाले।
 न तस्स माया व पिया व माया, कालंमि तम्मंसहरा भवंति॥
 न तस्स दुक्खं विभयंति नाइओ, न मित्तवग्गा, न सुया, न बंधवा।
 एक्को सयं पच्चणुहोइ दुक्खं, कत्तारमेव अणुजाइ कम्मं॥
 चिच्चा दुपयं च चउप्पयं च, खेतं गिहं धणधन्नं च सत्वं।
 कम्मप्पबीओ अवसो पयाइ, परं भवं सुन्दर-पावगं वा॥
 तं इक्कगं तुच्छसरीरगं से, चिईगयं दहिय उ पावगेणं।
 भज्जा य पुत्तोऽवि य नायओ य, द्वायारमन्नं अणुसंकमंति॥
 उवणिज्जइ जीवियमप्पमायं, वण्णं जरा हरइ नरस्स रायं।
 पंचालराया! वयणं सुणाहि, मा कासि कम्माणि महालयणि॥

पद्यानुवाद:-

अस्थिर इस जीवन में भूधव! जो अतिशय पुण्य न कर पाता।
 बिना धर्म के मरण-काल, और परभव में वह पछताता॥
 ज्यों मृगपति मृगवर को धरता, त्यों मृत्यु मनुज को (गह) ले जाती।
 ना माता, भ्राता और पिता, उस क्षण में होते हैं साथी॥
 पुत्र, मित्र, या बन्धु ज्ञाति-जन, उस दुःख में भागी नहीं बनते।
 स्वयं अकेला दुःख भोगे नर, कर्ता के पीछे फल चलते॥
 द्विपद चतुष्पद क्षेत्र भवन, धन-धान्य और माया तजकर।
 परभव में सुख दुःख पाने को, वह जाता कर्म-विवश बनकर॥
 यह तुच्छ देह चिति पर रख के, पावक से उसे जलाते हैं।
 पत्नी, पुत्र, बन्धुजन सब, फिर अन्य दातृ-संग जाते हैं॥
 सतत कर्म का यह जीवन हरता, जरा कान्ति का हरण करे।
 पांचालराज! यह बात श्रवण कर, मत महाकर्मों का बन्ध करे॥

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म. सा.

ज्ञान

■ ज्ञान आत्मा का स्वभाव है। आत्मा कितनी ही मलिन और निकृष्ट दशा को क्यों न प्राप्त हो जाए, उसका स्वभाव मूलतः कभी नष्ट नहीं होता। ज्ञानालोक की कतिपय किरणें, चाहे वे धूमिल ही हों, मगर सदैव आत्मा में विद्यमान रहती हैं। निगोद जैसी निकृष्ट स्थिति में भी जीव में चेतना का अंश जागृत रहता है। इस दृष्टि से प्रत्येक आत्मा ज्ञानवान ही कही जा सकती है, मगर जैसे अत्यल्प धनवान को धनी नहीं कहा जाता, विपुल धन का स्वामी ही धनी कहलाता है, इसी प्रकार प्रत्येक जीव को ज्ञानी नहीं कह सकते। जिस आत्मा में ज्ञान की विशिष्ट मात्रा जागृत एवं स्फूर्त रहती है, वही वास्तव में ज्ञानी कहलाता है।

■ ज्ञान की विशिष्ट मात्रा का अर्थ है-विवेकयुक्त ज्ञान होना, स्व-पर का भेद समझने की योग्यता होना और निर्मल ज्ञान होना। जिस ज्ञान में कषायजनित मलिनता न हो वही वास्तव में विशिष्ट ज्ञान या विज्ञान कहलाता है। साधारण जीव जब किसी वस्तु को देखता है तो अपने राग या द्वेष की भावना का रंग उस पर चढ़ा देता है और इस कारण उसे वस्तु का शुद्ध ज्ञान नहीं होता। इसी प्रकार जिस ज्ञान पर राग-द्वेष का रंग चढ़ा रहता है, जो ज्ञान कषाय की मलिनता के कारण मलिन बन जाता है, उसे समीचीन ज्ञान नहीं कहा जा सकता।

■ सम्यग्ज्ञान जिन्हें प्राप्त है, उनका दृष्टिकोण सामान्य जनों के दृष्टिकोण से कुछ विलक्षण होता है। साधारण जन जहाँ बाह्य दृष्टिकोण रखते हैं, ज्ञानियों की दृष्टि आंतरिक होती है। हानि-लाभ को आंकने और मापने के मापदंड भी उनके अलग होते हैं। साधारण लोग वस्तु का मूल्य स्वार्थ की कसौटी पर परखते हैं, ज्ञानी उसे अन्तरंग दृष्टि से अलिप्त भाव से देखते हैं, इसी कारण वे अपने आपको कर्म-बंध के स्थान पर कर्म-निर्जरा का अधिकारी बना लेते हैं। अज्ञानी के लिए आस्रव का निमित्त ही ज्ञानी के लिए निर्जरा का निमित्त बन जाता है। आचारांग में कहा है- 'जे आसवा ते परिसवा, जे परिसवा ते आसवा।'

■ संसारी प्राणी जहाँ हानि देखता है ज्ञानी वहाँ लाभ अनुभव करता है। इस प्रकार ज्ञान दृष्टि वाले और बाह्य दृष्टि वाले में बहुत अन्तर है। बाह्य दृष्टि वाला भौतिक वस्तुओं में आसक्ति धारण करके मलिनता प्राप्त करता है, जबकि ज्ञानी निखालिस भाव से वस्तुस्वरूप को जानता है, अतएव मलिनता उसे स्पर्श नहीं कर पाती। बहुत बार ज्ञानी और अज्ञानी की बाह्य चेष्टा एक-सी प्रतीत होती है, मगर उनके आंतरिक परिणामों में आकाश-पाताल जितना अंतर होता है। ज्ञानी जिस लोकोत्तर कला का अधिकारी है, वह अज्ञानी के भाग्य में कहाँ ?

- 'बयो पुरिसवस्संभट्थीणं' ग्रन्थ से साभार

वाग्वैभव (12)

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

- ■ ■ सबसे बड़ा विश्वास अपनी आत्मा पर होना चाहिये।
- ■ ■ मिथ्यात्वी 'पर' का चिन्तन करता है जबकि सम्यक्त्वी 'निज' का चिन्तन करता है।
- ■ ■ मैं कौन हूँ, मेरा उद्देश्य और साध्य क्या है? ऐसे प्रश्नों का उद्गम सम्यग्दर्शन का द्योतक है।
- ■ ■ सिद्धि के लिए श्रद्धा नितान्त अनिवार्य है।
- ■ ■ सम्यग्दर्शन रूपी बोधिरत्न प्राप्त होने पर रंक भी चक्रवर्ती से बढ़कर होता है।
- ■ ■ सम्यग्दृष्टि व्यक्ति सांसारिक कार्यों का निर्वहन निर्लिप्त भाव से करता है।
- ■ ■ सम्यक्त्वी की दृष्टि सन्त के समान होती है।
- ■ ■ सम्यक्त्वी दूसरों के दुःख देखकर अनुकम्पित होता है तथा उनके दुःख दूर करने हेतु प्रयासरत होता है।
- ■ ■ धर्मकार्य को बाद में करने के लिए टालते रहना सम्यग्दर्शनी को शोभा नहीं देता।
- ■ ■ सम्यग्दर्शन एक दिव्य दृष्टि है, जो व्यक्ति को अधंकार से प्रकाश में लाती है।
- ■ ■ निश्चय-समकित के लिए व्यवहार-समकित की आराधना भी आवश्यक है।
- ■ ■ सम्यग्दर्शन होने के पश्चात् भोग व कषाय छोड़ने योग्य लगते हैं।
- ■ ■ सम्यक्त्व दर्पण है, जिसमें अपनी आत्मा का दर्शन किया जा सकता है।
- ■ ■ सम्यक्त्वी का प्रत्येक विचार, प्रत्येक आचार कर्मबंध को हटाने के लिए, आस्रव को मिटाने के लिए और मुक्ति की प्राप्ति के लिए होता है।
- ■ ■ आत्मा का वास्तविक घर मोक्ष है, उसकी प्राप्ति तत्त्वश्रद्धा रूप सम्यग्दर्शन से संभव है।
- ■ ■ सम्यग्दर्शी, ज्ञानी, देशविरत श्रावक तथा सर्वविरति साधु- ये चारों आत्मलक्ष्यी होते हैं। इनकी श्रद्धा-प्ररूपणा एक होती है।
- ■ ■ श्रद्धावान का कर्तव्य है कि जब भी उसे समय मिले, वह परमार्थ का परिचय करे, ज्ञान सीखे और सीखे हुए ज्ञान को जीवन में उतारने का प्रयास करे।
- ■ ■ ये नश्वर एवं पर पदार्थ अपने नहीं हैं।

रोगकाल में भी न हो आर्त्तध्यान

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म. सा.

अप्रिय वस्तु का संयोग होने पर उससे छुटकारा पाने की चिंता करना और प्रिय वस्तु का संयोग प्राप्त करने के लिए चिंता करते रहना— ये दो रूप आर्त्तध्यान के हैं। इन्हीं रूपों के अवान्तर भेद भी अनेक हो सकते हैं। जैसे— अप्रिय वस्तु का संयोग तो अभी नहीं हुआ, किन्तु उससे पहले ही उसकी संभावना से चिंतित हो जाना, उसके परिणामों की चिंता करना और उससे छुटकारा पाने के उपायों पर सोचते रहना— ये सब भी इसी आर्त्तध्यान के अन्तर्गत आते हैं।

भविष्य की चिन्ता करना मानव की आदत है। मनुष्य मन में विकल्प करता रहता है, ऐसा हो गया तो क्या करूँगा? फिर कैसे इससे छुटकारा होगा? हाय-हाय मैं तो मर जाऊँगा आदि अनेक प्रकार का दुर्ध्यान दुःख आने से पहले ही करने लग जाता है। भविष्य के प्रति जागरूक रहना, सावधान रहना यह तो बुद्धिमानी और दूरदर्शिता कही जा सकती है, किन्तु भविष्य की चिंता में डूबे रहना, उस फिक्र मैं ही गलते जाना, यह बुद्धिमानी नहीं मूर्खता है। इस चिंता से मनुष्य दुःख आने से पहले ही दुःखी हो जाता है।

एक गाँव में एक भाई के पास बहुत धन-संपत्ति थी, पुत्र-परिवार भी बड़ा था। घर में कष्ट की ऐसी कोई बात नहीं थी, किन्तु वह सज्जन जब भी देखो, उदास, चिंतातुर शोक में डूबी हुई शकल लिए रहता। एक बार किसी ने उनसे पूछा— “आप पर भगवान राजी हैं, कोई कमी नहीं है, फिर भी आप चिंता में डूबे हुए से क्यों रहते हैं?”

सेठ ने कहा— “मुझे और कोई चिंता नहीं, किंतु एक बात की चिंता है, मेरे मरने के बाद मेरे पुत्र-पौत्र घर और कारोबार कैसे चलायेंगे? ठीक से चलेंगे तो ठीक है, वरना मेरी सब कमाई मिट्टी में मिलायेंगे। बस यही चिंता रात-दिन मुझे खाये जा रही है।”

तो इस चिंता के निराकरण का कोई उपाय है? जो मनुष्य भय आने से पहले ही भय खाता है, दुःख आने से पहले दुःखी होता है। उसका क्या उपचार है? यह मन की कमजोरी है, विचार शक्ति की दुर्बलता है। इससे आर्त्तध्यान बढ़ता है, मन और कमजोर होने लगता है। भविष्य के प्रति जब तक विश्वास और निर्भयता नहीं आयेगी, तब तक यह चिंता नहीं मिट सकती।

आर्त्तध्यान का तीसरा प्रकार

आर्त्तध्यान का तीसरा भेद है— रोग आने पर उसकी पीड़ा से आकुल-व्याकुल होना

और उससे छुटकारा पाने के लिए चिंता करना।

रोग भी एक अप्रिय-संयोग है। वह किसी को प्रिय नहीं है। कोई भी अपने को रोगी रखना नहीं चाहता, सभी स्वस्थ रहना चाहते हैं। प्रश्न होता है फिर इस भेद को अलग क्यों किया? रोग भी अमनोज्ञ-संयोग की श्रेणी में आ सकता है, फिर अमनोज्ञ-संयोग और रोग-संयोग को अलग-अलग बताने की क्या जरूरत हुई?

इसका समाधान है-अमनोज्ञ-संयोग और रोगांतक-संयोग में अन्तर है। अमनोज्ञ-संयोग बाह्य पदार्थों का होता है। उससे भोग्यवस्तु विवक्षित है। जबकि रोग बाह्य पदार्थ नहीं, और कोई भोग्य वस्तु भी नहीं है। रोग शरीर से उत्पन्न होता है, रोग का अधिष्ठान शरीर है, अतः शरीर को व्याधि-मन्दिर कहा गया है- “शरीरं व्याधिमन्दिरम्। कहावत है तन रोगों की खान है, धन भोगों की खान।”

चिकित्सा शास्त्रों में बताया है कि शरीर की कोई धातु या रस जब विकृत हो जाते हैं, उनमें विषमता आ जाती है अथवा मन या मस्तिष्क विकृत हो जाता है तब रोग की उत्पत्ति होती है। शरीर में सूजन आती है तो क्या कोई बाहर की वस्तु भीतर घुस कर शरीर को फुला देती है? नहीं! किन्तु शरीर के भीतर ही रही हुई वायु कुपित एवं दूषित हो जाने पर शरीर में फुलावट आ जाती है। जब वायु का दोष शांत हो जाता है तो शरीर पुनः अपनी मूल स्थिति में आ जाता है। इसी प्रकार शरीर में अन्य रोग भी जो होते हैं, वे बाहर से आक्रमण नहीं करते, किन्तु शरीरगत वात, पित्त, कफ आदि दूषित होने से ही उत्पन्न होते हैं। ठाणांग सूत्र में चार प्रकार के रोग बताये हैं- वाइए, पित्तिए, कफ्फिए, सन्निवाइए-वातजनित, पित्त जनित, कफजनित और सन्निपात जनित। इन चारों का अधिष्ठान शरीर है। अतः रोग का संयोग शरीर में से ही प्रकट होता है, जबकि आर्त्तध्यान के प्रथम भेद में परिगणित अमनोज्ञ-संयोग बाह्य वस्तु के साथ सम्बन्ध रखता है। इसी कारण पहला और तीसरा भेद अलग-अलग अर्थ रखता है।

इसी प्रसंग में इतना और बताया कि ‘रोग’ सबसे बड़ा दुःख है। रोग आरोग्य का विरोधी है। आरोग्य मनुष्य जीवन का सबसे पहला सुख है- “पहला सुख निरोगी काया”। शास्त्र में भी दस प्रकार के सुख में पहला सुख आरोग्य को बताया है- “आरोग्यं दीहमाउ.....” और तब ‘रोग’ सबसे बड़ा दुःख स्वयं ही हो गया। वैसे तो कहा जाता है कि शरीर में जितने रोग हैं, उतने ही रोग हैं, बल्कि उससे भी ज्यादा हैं। भद्रबाहु संहिता में पाँच करोड़ से भी अधिक रोग बताये हैं। यह उस जमाने की बात है, आज तो पता नहीं, नये-नये और भी कितने रोग पैदा हुए होंगे। अतः रोगों की कोई गणना नहीं है।

रोगोत्पत्ति का मुख्य कारण तो असाता वेदनीय का उदय ही है, किन्तु वैसे अनेक

निमित्त बताये गए हैं, जिनके कारण रोग उत्पन्न होता है। आहार विहार की अनियमितता, असंयम और विचारों की अपवित्रता रोग उत्पन्न होने के मुख्य निमित्त कारण हैं। स्थानांग सूत्र में रोगोत्पत्ति के कारण बताये हैं- अधिक बैठना, प्रतिकूल आसन से बैठना, अतिनिद्रा, अति जागरण, मल के वेग का निरोध, मूत्र के वेग का निरोध, अतिगमन, प्रतिकूल भोजन और विषयासक्ति। इन कारणों से बचकर रहना, संयम एवं सद्विचार पूर्वक मन को प्रसन्न रखना यह स्वस्थ-जीवन जीने का उपाय है।

अब हम अपने मूल विषय पर आते हैं कि रोग आदि का आतंक होने पर मन में छटपटाहट व आकुलता होती है, और उसे मिटाने के लिए, रोग का निवारण करने के लिए मनुष्य चिंता एवं शोक करने लगता है तब वह आर्त्तध्यान से ग्रस्त हो जाता है।

क्या रोगोपचार आर्त्तध्यान है ?

यहाँ यह प्रश्न आता है कि क्या रोग का उपचार करना ही आर्त्तध्यान है? अथवा रोग के निवारण का उपाय सोचना भी आर्त्तध्यान में सम्मिलित है? इसके समाधान के लिए पहले हम आर्त्तध्यान क्या है, इस पर विचार करते हैं। मन की वृत्तियाँ जब चिन्ता व दुःख में इतनी गहरी डूब जायें कि बस और कुछ सूझे ही नहीं। चिन्ता, शोक एवं दुःख की धारा में ही बहने लग जाय तब वह होता है आर्त्तध्यान। अर्थात् मन की तीव्र आकुलता, गहरी चिन्ता और निरन्तर शोक-चिन्तन जब मन में चलने लगता है तब आर्त्तध्यान होता है। वैसे सामान्य रूप से रोग के निवारण का उपाय सोचना और प्रयत्न करना, यह आर्त्तध्यान की परिभाषा में नहीं आता, क्योंकि शरीर मोक्ष का साधन भी बनता है। साधु जिस प्रकार शरीर से साधना करता है, वैसे गृहस्थ भी इस शरीर से मोक्ष की साधना-आराधना कर सकता है, और उस साधना-आराधना के लिए आरोग्य भी आवश्यक है, फिर आरोग्य के उपाय को आर्त्तध्यान कैसे कहा जा सकता है? अतः यहाँ पर रोग के निवारण की तीव्र आकुलतामय चिन्तनधारा को ही आर्त्तध्यान माना गया है।

रोग में धर्म न छोड़ें

सामान्यतः देखा जाता है कि रोग उत्पन्न होने पर मनुष्य घबरा जाता है। वह आकुल-व्याकुल हो उठता है, और अपने नित्य-नियम, साधना आदि को छोड़कर बस रोग की चिन्ता, रोगनिवारण की चिन्ता इसी चक्र में पड़ जाता है। जो व्यक्ति प्रातः उठकर भजन करता था, सामायिक करता था, ध्यान करता था, कभी-कभी तप भी कर लेता था; वह रोग से आक्रांत होने पर धैर्य खो बैठता है, और सबसे पहले अपना सब धर्म-कार्य किनारे रख देता है। देखा गया है- रोग में सबसे पहले कोई वस्तु छूटती है तो वह है धर्म। सामायिक का नियम, नवकारसी का पच्चखाण या रात्रिभोजन का त्याग आदि नियम थोड़ी

सी बीमारी आने पर ताक में रख दिए जाते हैं। एक भाई को देखा कि रोज प्रातः सामायिक किए बिना कुल्ला नहीं करते थे। एकबार थोड़ी-सी सर्दी हो गई, जुकाम हो गया तो बस सुबह-सुबह बिना सामायिक के ही 'चाय' चढ़ रही है। किसी ने टोका- "क्या बात है, आज सामायिक किए बिना ही पेट पूजा हो रही है?" तो, बोले- "हाँ, कारण विशेष का आगार है।" प्रश्नकर्ता ने फिर पूछा- "क्या कारण हो गया?" बोले- "थोड़ी सर्दी हो गई, सिर भारी है।"

मन का रोग 'चिंता'

यदि कोई कारण विशेष हो भी जाय तब भी क्या 'धर्म' जैसी वस्तु छोड़ने की है? रोग होता है, चिंता होती है तो पाप के उदय से होती है। धर्म क्रियाएँ छोड़ने से क्या रोग ठीक हो जायेगा? धर्म से तो मन को धैर्य मिलता है, शांति मिलती है, रोग को सहन करने की शक्ति प्राप्त होती है, धर्म साधना से रोग की पीड़ा कम त्रास देती है, फिर रोग में धर्म क्यों छोड़ा जाय? उलटा धर्म का सहारा लेना चाहिए। आगार विशेष कारण के अवसर के लिए रखे जाते हैं। जिस स्थिति में आप अपनी धार्मिक क्रिया ठीक से कर नहीं पाएँ या उनमें चित्त की स्थिरता न रह सके उस स्थिति के लिए 'आगार' होता है। किन्तु मानव का स्वभाव ऐसा है कि थोड़ा सा रोग हो गया तो बस- इसी चिंता में डूब जाता है। "मैं बीमार हो गया" मन का धैर्य खो बैठता है, सतत यही चिंता करता है- "अब कैसे ठीक होऊँ? क्या दवा करूँ? किसके पास जाऊँ?" प्रारम्भ में आर्त्तध्यान का यह हल्का रूप मन में हल्के ज्वर की तरह उठता है। देखने वाले को और स्वयं को भी पता नहीं चलता कि मैं आर्त्तध्यान कर रहा हूँ। जैसे- हल्की बुखार, सहज में मालूम नहीं पड़ती, नाड़ी में भी नहीं आती, किन्तु जैसे ही उसका उग्र रूप प्रकट होता है तो बिना नाड़ी देखे ही पता चल जाता है कि बुखार हो रहा है। इसी प्रकार आर्त्तध्यान बढ़ता-बढ़ता जब उग्र रूप धारण कर लेता है तब मनुष्य अत्यन्त चिन्तातुर दिखाई देता है, रोग की चिन्ता करता-करता झूरने लगता है और अत्यंत मूढ़ होकर अनेक प्रकार के विलाप-क्रन्दन आदि करने लग जाता है, तब देखने वाले को सहज ही यह ज्ञात होता है कि आर्त्तध्यान कर रहा है।

आर्त्तध्यान का सम्बन्ध प्रयत्न से उतना नहीं है जितना मानसिक संक्लिष्टता से होता है। मनोभावों में दीनता, अधीरता और छटपटाहट होने से आर्त्तध्यान को बढ़ावा मिलता है। यद्यपि इस अधीरता से रोग शांत नहीं होता, वेदना की तीव्रता भी कम नहीं होती, किन्तु रोग में अधीर होने से कभी-कभी तो रोग और बढ़ जाता है। हार्ट, ब्लडप्रेसर (रक्तचाप), मधुमेह आदि अनेक रोगों का सम्बन्ध तो मानसिक उद्विग्नता से अधिक रहता है। इन रोगों की स्थिति में यदि मन ज्यादा दुःखी और संतप्त होता है, चिंतातुर रहता है

तो अल्प रूप में प्रकट हुआ रोग भी भयंकर रूप धारण कर लेता है और जान पर खतरा तक आ सकता है। इस प्रकार रोग की स्थिति में आर्तध्यान करने से न केवल आत्म-शांति भंग होती है, किंतु शारीरिक शक्ति भी अधिक क्षीण होती है, और रोग का आतंक अधिक भीषण रूप धारण कर लेता है। इसीलिए डॉक्टर लोग रोगी को उसका रोग नहीं बताते। रोगी पूछता है- डॉक्टर साहब! कब ठीक हो जाऊँगा? तो भले ही दुःसाध्य रोग हो, डॉक्टर क्या कहेगा- “जल्दी ही ठीक हो जाओगे, घबराओ मत। फिक्र मत करो” इसका कारण है, कि रोगी रोग से इतना नहीं गलता जितना चिंता से गलता है। रोग ठीक हो सकता है, और वह शरीर को एक दम क्षीण भी नहीं करता, किन्तु चिंता का रोग ऐसा है कि वह ठीक होना भी कठिन है और उससे शरीर एकदम क्षीण एवं अशक्त हो जाता है। चिंता रक्त को जलाती है, धातुओं को भस्म कर डालती है। इसलिए शास्त्रकार ने तो बताया है कि रोग आने पर चिंता-शोक करके आर्तध्यान नहीं करना। उसका उद्देश्य आत्मिक शांति का तो है ही, किन्तु उससे रोग को सहन करने की शक्ति भी मिलती है, और शरीर पर रोग का ज्यादा असर नहीं होता। चिंता से शरीर की स्थिति कैसी हो जाती है, इसका शब्दचित्र कवि के शब्दों में देखिए:-

चिंता ज्वाल शरीर बन, दावानल लग जाय,
धुके सुं धूँआं नीसरे उर अंतर धुंधवाय।
उर अन्तर धुंधवाय, धुंधे ज्यों काच की भट्टी,
जरग्यो लोहू मांस रह गई हाडकी रट्टी।
कहे ‘गिरधर’ कविराय सुनो हो मेरे मिन्ता।
वह नर कैसे जिये जाहि घट व्यापत चिंता।।

कहा जाता है:-

चिंता चिन्ता समा प्रोक्ता को भेदो चितिचिन्तयोः।

चिंता दहति प्राणान्ते चिन्ता जीवितमेव च॥

किसी ने कहा है:- “चिंता और चिन्ता समान है, इनमें कोई भेद नहीं है।” तब किसी विचारक ने कहा- “भेद क्यों नहीं है भाई! चिंता और चिंता में बहुत बड़ा भेद है।” उसने पूछा- “क्या भेद है?” विचारक ने कहा- चिंता शरीर को मरने के बाद जलाती है, और सिर्फ एक बार ही जलाती है, किंतु चिंता तो जीते मनुष्य को जलाती है और क्षण-क्षण जलाती रहती है। चिन्ता की अग्नि रात-दिन धुकती रहती है, इसलिए चिंता से भी ज्यादा कष्टदायी चिंता है।

रोग, पीड़ा आदि तन के दोष हैं तथा शरीर में धातु, रस आदि की विकृति के कारण

पैदा होते हैं, किन्तु चिंता मन का दोष है, मन का रोग है। तन में यदि रोग हो गया तो उसे तन तक ही रहने देना चाहिए, तन के रोग को मन का रोग बनाना और उसे भीतर पैठने देना क्या कोई समझदारी है? आपके द्वार पर कोई शत्रु आ गया है तो आप क्या करेंगे? यही कोशिश करेंगे कि वह बाहर से ही लौट जाये, घर के भीतर नहीं घुसे, क्योंकि यदि दुश्मन भीतर घुस गया, घर में बैठ गया तो फिर पता नहीं क्या-क्या नुकसान कर डालेगा। तो बंधुओं! यह रोग जो शरीर के द्वार पर आकर आपको सावधान करता है, आपके शरीर की विकृति और कमजोरी की सूचना देता है, तब उसे बाहर से ही लौटा देना, रोग आते ही उसका उपचार कर उसे समाप्त कर देना तो समझदारी है, किन्तु आप तो उसका स्वागत-सत्कार करने लग जाते हैं, उससे प्यार करने लगते हैं और तन के रोग को धीरे-धीरे मन तक ले जाते हैं। रोग चिंता के रूप में मन में घुस जाता है और मन के भीतर प्रवेश करने के बाद वह आपकी शांति, धीरज और शक्ति को खाता चला जाता है। आपको एकदम असहाय, चिंताग्रस्त तथा शक्तिहीन कर देता है। मन में पैदा हुआ यह चिंता का रोग ही आर्तध्यान का रूप है। शास्त्रों में बार-बार यही उपदेश दिया है कि यह रोग रूप शत्रु शरीर रूपी द्वार पर आये तो आर्तध्यान के रूप से उसे भीतर मत आने दीजिए। तन के रोग को मन का रोग मत बनाइए। तन का रोग सुसाध्य है, उसकी चिकित्सा हो सकती है, उसकी लाखों दवाइयाँ निकल चुकी हैं, किन्तु मन का रोग दुःसाध्य है, उसकी दवा किसी वैद्य के पास नहीं है। वह तो आपके ही पास है, या सद्गुरु के पास से मिल सकती है।

मन को शांत रखिए

आर्तध्यान के तीसरे भेद पर विचार करने का सार यही है कि रोग आने पर मन को व्याकुल नहीं होने दें। रोग का बाह्य कारण तो शरीर की विकृति है ही, किंतु उसके आन्तरिक कारणों पर विचार करना चाहिए, और उन्हें दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए। यदि रोग का आन्तरिक कारण दूर हो गया तो बाह्य कारण अपने आप ठीक हो जायेगा, और यदि नहीं भी हुआ तो उससे इतनी अशांति नहीं बढ़ेगी। रोग का आन्तरिक कारण बताया गया है- “अशुभ कर्म, असाता वेदनीय।” असाता वेदनीय का उदय आने पर ही प्राणी को रोग के रूप में कष्ट भोगना पड़ता है। इस सिद्धान्त पर जिसका विश्वास है वह जीव रोग में व्याकुल नहीं होता। वह सोचता है- “आत्मन्! ये कर्म जो वर्तमान में असाता के रूप में उदित हो रहे हैं, वे तेरे ही किए हुए हैं। अज्ञान, मोह एवं राग-द्वेष के वश होकर तूने ही इन कर्मों का उपार्जन किया है, तूने किसी को पीड़ा दी होगी, किसी के शरीर पर घाव किये होंगे, किसी का छेदन-भेदन किया होगा और फिर हँस-हँस कर आनन्द मनाया होगा। उसी के फलस्वरूप आज तुझे यह वेदना भोगनी पड़ रही है क्योंकि जो कर्म किए हुए

हैं, उनको बिना भोगे छुटकारा नहीं हो सकता—“पावाणं च खलु भो। कडाणं कम्माणं पुब्बिं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिकंताणं वेइत्ता मोयव्वो नत्थि अवेइत्ता, तवसा वा झोसइत्ता।” (दशवैकालिक चूलिका) पूर्व में किए हुए पाप कर्म जो कि बड़े गाढ़ बंधन हो गए हैं, उनको बिना भोगे छोड़ना असंभव है, उन्हें तो भोगना ही पड़ेगा, भले ही उदय में आने पर भोगे जायें या तप के द्वारा उदीर्ण करके— किंतु भोगे बिना छुटकारा नहीं है।” तू तो एक सामान्य प्राणी है, किन्तु बड़े-बड़े तीर्थंकर, चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव आदि को भी अपने कर्मों का फल भुगतना पड़ा है— कवि ने कहा है—

महावीर देव को दिए हैं कष्ट संगम ने,
वन में बिनाश पाये कृष्ण बिन बारी है।
राजा हरचन्द्र गेह भंगी के भय्यो है नीर,
आदिनाथ वर्ष एक भूख ही निकारी है।
चौथे चक्रवर्ती के शरीर में भयो है रोग,
सहे हैं वियोग रामचन्द्र बिन नारी है।
'सोहन' कहत ऐसे-ऐसे ही लहे हैं दुःख,
ताते नरमूढ तेरी कौन-सी चिकारी है।

भगवान महावीर जो अनन्तबली थे, उनको भी अनेक वेदनाएँ सहनी पड़ी हैं। कानों में कीलें ठोक दिए गये, पाँवों के नीचे अग्नि जलाकर उन पर हंडिया रखकर खीर पकाई गई। संगम ने एक-एक रात में बीस-मारणांतिक कष्ट दिए और असह्य वेदना उत्पन्न की, गोशालक ने तेजोलेश्या से भगवान की चमड़ी को गला डाला, जिसकी असह्य पीड़ा छह महीने तक रही। तो ऐसे महापुरुषों को भी इतने कष्ट सहने पड़े हैं तो तेरा तो कष्ट ही क्या है? और तू कायर प्राणी किस गणना में आता है? सनतकुमार चक्रवर्ती के शरीर में देखते-देखते सोलह महारोग उत्पन्न हो गए। नमि राजा के शरीर में भयंकर दाहज्वर फूट पड़ा, अनाथी मुनि जिनके पिता के पास अतुल संपत्ति और वैभव था, किन्तु अपने इकलौते पुत्र की आँख की वेदना वह भी नहीं मिटा सका, इस तरह संसार में ऐसे हजारों लाखों असंख्य समर्थ पुरुष हो गए, जिनको रोग आने पर कोई बचा नहीं सका। कोई उपचार नहीं हो सका, तो फिर तू अपने रोग की क्या चिंता करता है? यह जो कर्म उदय में आए हैं, उनकी निर्जरा होने पर स्वयं ही शांत हो जायेगा। इसके लिए मन में चिंता, शोक आर्तध्यान मत कर। इससे और नवीन कर्मों का बंध होगा और उन्हें फिर भोगना पड़ेगा।

जिसको कर्म सिद्धान्त में विश्वास है, आत्मा पर विश्वास है, वह व्यक्ति रोग आदि संकट आने पर उपर्युक्त प्रकार से चिंतन करता है। इस चिन्तन से मन को धैर्य बंधाता है,

रोग की पीड़ा को मन के भीतर प्रवेश नहीं करने देता, रोग होने पर भी मन को शांत एवं प्रसन्न रख सकता है और अपनी पीड़ा आधी कर देता है। क्योंकि रोग का असर जब मन पर नहीं होता, तो वह जल्दी शांत हो जाता है और उसकी वेदना में भी तीव्रता नहीं आती। तन में कष्ट होने पर भी मन में छटपटाहट नहीं होती। अतः रोग में आर्त्तध्यान का विसर्जन करने से मन को शांति मिल सकती है।

तन की वेदना, भव वेदना का नाश कर गई

मैंने बताया कि रोग का होना असाता वेदनीय का फल है, किन्तु कभी-कभी यह असाता वेदनीय भी अनन्त साता का निमित्त बन जाती है, कब? जब मन में ज्ञान हो, धैर्य हो और असाता में आर्त्तध्यान नहीं आए। आपने अनाथी मुनि का वर्णन सुना है, उनकी आँख की तीव्र वेदना जो सब परिवार जनों के आर्त्तध्यान का कारण बनी हुई थी वही वेदना अनाथी मुनि के धर्मध्यान का कारण बन गई। वेदना ने अनन्त सुख का राजमार्ग बतलाया। आँख की वेदना भीतर की आँख खोल गई। कैसे? यही कि वे वेदना में भी समाधि और शांति रख सके। उनकी आँख की वेदना कितनी भयंकर थी, श्रेणिक राजा के समक्ष उन्होंने शब्दों में वर्णन करते हुए कहा-

सत्थं जहा पश्मतिक्खं सरीर विवरन्तरे।

आवीलिज्ज अरी कुद्धो एवं में अच्छिवेयणा।

जैसे भयंकर क्रोध में उन्मत्त हुआ हड्डकड्ड शत्रु बड़े तीक्ष्ण नुकीले शस्त्रों से शरीर के कोमल अंगों को छेद रहा हो, शरीर के भीतर वह तीक्ष्ण शस्त्र घुसा रहा हो, उस समय जितनी वेदना होती है, उससे भी अधिक भयंकर वेदना मेरी आँख में हो रही थी। उस समय खान-पान, भोग-विलास तो क्या, किसी का बोलना भी नहीं सुहाता था। बड़ी-बड़ी चिकित्साएँ करने पर भी मेरी वेदना शांत नहीं हुई। माता-पिता ने पानी की तरह पैसा बहाया और कुशल वैद्यों ने सिर खुजला खुजलाकर तरह-तरह की औषधियों से उपचार किए, पर किसी भी उपाय से मेरी पीड़ा कम नहीं हुई।

अनाथी की वेदना कितनी भयंकर और कितनी असह्य थी, इस वर्णन से आपको पता चलता है। उस समय में उन्होंने क्या किया? आर्त्तध्यान नहीं किया, आर्त्तध्यान करते तो वेदना कम नहीं होती, बल्कि और भी असह्य हो जाती। किन्तु उन्होंने अपने मन के प्रवाह को बदला, तन की वेदना का आध्यात्मिक उपचार किया, संकल्पबल को विकसित किया, भावनाओं का शोधन किया और मन-ही-मन एक वज्र संकल्प लिया। उसी का परिणाम था- परम सुख, शान्ति की प्राप्ति।

श्रद्धा को दें सही दिशा

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा 31 जुलाई 1996 को महावीर भवन, लाखन कोटड़ी, अजमेर में दिये गये प्रवचन का आशुलेखन श्री धर्मपाल मेहता, अजमेर तथा संपादन डॉ. दिलीप धींग, चेन्नई द्वारा किया गया है।-सम्पादक

तीर्थंकर भगवान महावीर की आदेय, अनुपम वाणी द्वारा आत्म-विकास में सहायक बनने वाले तीन तत्त्वों का चिन्तन किया जा रहा है- देव, गुरु और धर्म। जिनेन्द्र भगवान के सिद्धान्त की परम्परा गुण पूजक परम्परा रही है। इस परम्परा में भाव-आराधना की विशेष महिमा है। जहाँ भावना है, वही नाम, स्थापना और द्रव्य भी बताये गये हैं। देव में सर्वज्ञता व वीतराग भाव और साधु में समताभाव के गुणों का समावेश होने पर ही वे वन्दनीय तथा आराध्य रूप में स्मरणीय माने जाते हैं।

वस्तु के विवेचन में चार बातें आधार होती हैं- नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव। पहचान हेतु संज्ञा रूप में पुकारी जाने वाली किसी भी वस्तु का कोई 'नाम' होता है। वह गुणसंपन्न भी होता है और गुणरहित भी होता है तथा उसके स्वरूप का परिचय कराने वाला भी होता है। स्वरूप से हटकर श्रद्धा, विश्वास और मन की भावना के अनुरूप भी नाम रखा जाता है। उदाहरण के लिए जैन धर्म पर श्रद्धा होने के कारण किसी व्यक्ति का नाम 'महावीर' रख दिया। लेकिन देखने जाएं तो उसमें अपने शरीर को संभालने की शक्ति भी नहीं। थोड़ी-सी टक्कर से भी फ्रेक्चर हो जाता है। थोड़ी-सी असावधानी से पैर फिसल जाए तो अस्पताल में भर्ती होना पड़ जाता है। वस्तुतः जो कर्मों को विदीर्ण करने वाले, तप सम्पन्न और ज्ञान सम्पन्न हैं, वे महावीर कहलाते हैं। जन्म के बाद ही पैर की अंगुली से जिन्होंने मेरु पर्वत को हिला दिया, धुजा दिया, असंख्य इन्द्र मिलकर जिनकी एक अंगुली को नमा नहीं सकते, उन्हें महावीर कहते हैं। परन्तु आज अनेक व्यक्ति नाम के महावीर हैं, गुण के महावीर नहीं है। कुछ लोग ऐसे होते हैं, जिनका नाम शान्ति है, किन्तु हर समय कलह, लड़ाई-झगड़ा, राग-द्वेष की उत्पत्ति करते हैं। उनके मन में शान्ति नहीं है। वे दूसरों को शान्ति देने में समर्थ नहीं हैं, तो यह मात्र नाम निक्षेप होता है।

दूसरा है स्थापना निक्षेप, जिसे आज गुणों से भी अधिक महत्त्व दिया जा रहा है। कोई माला फेरने वाला मिलेगा या नहीं मिलेगा, सामायिक साधना करने वाला मिलेगा या

नहीं मिलेगा, परन्तु मूर्ति की पूजा करने वाला जरूर मिलेगा। मूर्तिपूजा करने वाला उसे ही देव और श्रद्धास्पद मानकर चलता है। यह स्थापना निक्षेप है। उसने उसमें ही भाव बना रखे हैं। वास्तव में आराधक की आस्था गुरु में, चैतन्य में और कल्याणकारी तत्त्वों पर होनी चाहिये। कितने ही व्यक्ति जीवित माताजी की सेवा नहीं करते हैं और आलिये के माताजी पर धूप-दिया कर रहे हैं। जाने आज आदमी के मन में कितने देवता बैठ गये हैं। जो व्यक्ति जीवन्त रूप में अर्चनीय और पूजनीय हैं, उनकी उपेक्षा करते हुए देवी-देवताओं के पीछे भागना बुद्धिमत्ता नहीं।

देवाधिदेव कौन हैं? वे किन गुणों के धारक होने चाहिये? अन्य देव उनके भक्त क्यों हैं? यह सब आप सुनते और जानते हैं। इस चौमासे में पहली बार ही कहा जा रहा हो, ऐसी बात नहीं है। इससे पूर्व भी तत्त्व की बातें आपने जरूर सुनी होंगी। परन्तु सुनने के बाद भी आप पुरुषार्थवादी नहीं रहे हैं, जड़वादी हो गये हैं। इसका नतीजा यह है कि आज घर-घर में कोई न कोई देवता विराजमान है। इस वजह से आत्माराधना तक बन्द हो जाती है। आयम्बिल करना चाहिये, उसके बजाय माताजी की पूजा चलती है। धन मिले या नहीं मिले, परन्तु सैकड़ों वर्षों से आज भी लक्ष्मीजी को पूजने वाले, मानने वाले, आकृति बिठाने वाले मिल जायेंगे। हमने हमारे आसपास अनेक देवता बिठा रखे हैं। घर के देवता अलग, परिवार और कुल के देवता अलग। मौहल्ले के देवता, गाँव के देवता, गाँव के बाहर के देवता और प्रान्त के देवता अलग-अलग मान रखे हैं। घर में प्रवेश और बाहर निकलने के नमस्कार अलग-अलग हैं। अचंभा है कि आपने, अपने आपको तो मनाया नहीं और देवी-देवताओं को मना रहे हैं। साधना के समय साधना नहीं करना, परन्तु दिवाली की पूजा याद रहती है कि कहीं लक्ष्मीजी बाहर नहीं चली जाए।

हमारा विश्वास देवों पर होने के कारण उनकी पूजा का खयाल जितना रखा है, उतना हमने अपने आपको सँवारने का नहीं रखा। एक-एक मन्दिर बनाने में लाखों रुपये लगाए जा रहे हैं। अचंभा है कि जिनको कभी देखा नहीं, उनकी पूजा कर रहे हैं और जो आपके सामने हैं, उनकी पूजा नहीं हो रही है। फिर एक बात बताओ कि इतनी पीढ़ियों से और वर्षों से शीतला जी को पूज रहे हो तो क्या देवी राजी हो गई? क्या आपने कभी अपने श्रद्धा वाले देव-देवी को सपने में देखा है? लोग शीतला माता को मानते हैं, किन्तु क्या मानने वालों को चेचक नहीं निकला? लक्ष्मी को नहीं पूजने वाले क्या सब गरीब होते हैं? क्या प्रतिदिन सरस्वती की पूजा करने वाले सारे पंडित या विद्वान् होते हैं और नहीं करने वाले मूर्ख होते हैं? तो फिर माताजी को मानने का क्या औचित्य?

कर्म-सिद्धान्त के अनुसार साक्षात् देवता भी आकर उपस्थित हो जाएं तो वे दुःख

दूर नहीं कर सकते हैं। अरे, जिनकी सेवा में चौंसठ इन्द्र खड़े हैं, क्या वे कभी दुःख नहीं पाएँगे? क्या उनको कभी रोग नहीं होगा? मरना नहीं पड़ेगा? क्या उनके कानों में कभी कीलें नहीं ठोके गये? कहिये! आप देववादी हैं या कर्मवादी हैं? आपको बहुत सीधी भाषा में पूँछू कि आप कभी आसोज में ओलीजी की कहानी सुनते हैं? क्या आपने कभी श्रीपाल और मैनासुन्दरी का चरित्र सुना है? हमारी बहिनों को तो चौपाई सुनने में आनन्द आता है। बिना चौपाई के तपस्या की कितनी ही बातें कहो, उन्हें नहीं रुचती है। उनका मन होता है कि रोज चौपाई सुनाओ। रोज सुनाते हुए भी जीवन वैसा का वैसा! मैं पूँछूँ कि मैनासुन्दरी आपकर्मि थी या बापकर्मि? उसके सामने जब विचार रखे कि उसे कोढ़ी को दिया गया है तो भी उसने अपने आपको सुखी माना। सुख और दुःख देने वाला कौन है? हमारे अपने ही कर्म। इस प्रकार के कितने ही दृष्टान्त आपने सुन लिये हैं।

श्रीकृष्ण के भ्राता गजसुकुमाल, अरिहन्त भगवान अरिष्टनेमि के पास दीक्षित हुए। अरिहन्त भगवान के चरणों में असंख्य देवी-देवता रहते थे। ऐसे देवाधिदेव के पास दीक्षित, पुण्यशाली भ्राता श्मशान में ध्यान में खड़े हैं। उधर से सोमिल आया। वह गीली मिट्टी लाकर उनके माथे पर पाल बाँध देता है और उसके बीच धधकते अंगारे रख देता है। गजसुकुमाल मुनि उस असह्य कष्ट को बिना आर्तध्यान, रौद्रध्यान के समता भाव से सहन कर रहे हैं। तो ऐसे विकट समय पर भी क्या उन्हें दुःख से बचाने वाले मौजूद नहीं थे? वहाँ असंख्य देवी-देवता थे, किन्तु वे गजसुकुमाल को नहीं बचा सके। वे देवता कोई आलिये में रखे हुए और मन्दिर में बैठे हुए नहीं थे। साक्षात् मौजूद थे। फिर भी उनकी रक्षा नहीं कर पाये। कारण यही है कि आत्मा खुद ही अपने सुख-दुःख का कर्ता और भोक्ता है। जब दुःख आता है, अशुभ कर्म का उदय होता है, तब सैकड़ों सहायक बनने वाले लोग भी पल्ला झाड़कर छिटका देते हैं। अपने प्राण-प्रिय कहलाने वाले भी भाग जाते हैं। भावना में कथन किया है-

“दुलबल देवी-देवता, मात-पिता परिवार।

मरती बिरिया जीव को, कोई न राखन हार।।”

आप अरिहन्त भगवान की आराधना तो करते हैं, लेकिन बाहर की वृत्तियाँ नहीं छूट रही हैं। ऐसी स्थिति में तत्त्वों के सम्बन्ध में मिथ्यात्व कैसे छूटेगा? अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया और लोभ का साधक उपशम, क्षयोपशम व क्षय नहीं करेगा तो बाहरी वृत्तियों पर विजय कैसे प्राप्त होगी? और जब तक इन पर विजय नहीं होगी, तब तक कोई मेरे सामने ओघा-पातरा भी ले ले तो भी उसकी मुक्ति संभव नहीं है। देवाधिदेव को सर्वोत्तम आराध्य माना है तो राग-द्वेष को छोड़ने की इच्छा कीजिये। राग-द्वेष और आसक्ति को हटाओ, छोड़ो और संसार के सारे पदार्थों को ज्ञाता-द्रष्टा बनकर देखो। जब तक हमारी

मान्यता सही नहीं है, तब तक आचरण कैसे सही होगा? हम न जाने किन-किन तीर्थों में कितने-कितने रुपये लगा देते हैं। आकृतियों के निर्माण के लिए लाखों रुपये लगाये जा रहे हैं। परन्तु अपने ही भाइयों के लिए, चैतन्य के लिए देने की बात आए तो देने में मन छोटा करते हैं।

भगवान से एक प्रश्न पूछा गया कि भगवन्! एक तो आपकी सेवा-पूजा करता है और दूसरा दीन-दुःखियों की सेवा करता है तो दोनों में से ऊँचा कौन है? भगवान ने फरमाया कि दीन-दुःखियों की सेवा करने वाला ऊँचा है। तो भाई! राग में रंजित होने की जरूरत नहीं है, अपने आपको रूपान्तरित करने की जरूरत है। जो दीन-दुःखी की सेवा करता है, वह धन्य है। परन्तु जड़ को दूध से नहलाया जा रहा है। घी के दीये जलाए जा रहे हैं। तो सोचना है कि सच्ची और अच्छी भक्ति कौनसी है, इसका निर्णय करें। कहा जाता है 'मिट्टी की गणगौर बनाई, पूजे लोग लुगाई'। यदि मिट्टी की गणगौर नहीं बोलें तो क्या बोलें? और फिर उसे पानी में डुबो देते हैं। वह गणगौर कभी भी सेवा के लिए और शादी के लिए नहीं कहती है, फिर भी उसे सजाया जाता है, शादी करायी जाती है, लेकिन जिसे सजाने की जरूरत है, उसे नहीं सजाया जा रहा है। उसकी सँभाल नहीं की जा रही है। तो अपनी श्रद्धा को सही दिशा में मोड़ने की आवश्यकता है।

ज्ञानार्जन और धनार्जन होने और नहीं होने के लिए आप स्वयं जिम्मेदार हैं। सुख और दुःख देने वाला दूसरा कोई नहीं है। जितनी आराधना करोगे, किसी को सुख दोगे तो सुख पाओगे और दुःख दोगे तो पीड़ा पाओगे। इसलिए भ्रान्तियों को दूर कीजिये। आप पुरुषार्थ से अपने आपको बदलने की कोशिश करेंगे तो समाधि प्राप्त करेंगे। ■

आमन्त्रित हैं अनुभव

आप में से बहुत से श्रावक नियमित सामायिक करते होंगे। सामायिक से आप अपने जीवन में शान्ति, प्रसन्नता, तनावमुक्ति, निर्विकारता, स्वाध्याय की निरन्तरता, चित्त की निर्मलता आदि अनेक लाभों से परिचित होंगे। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा 'सामायिक' पर एक पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है। उसमें आपके अनुभव भी प्रकाशित किए जा सकेंगे, अतः नियमित सामायिक-साधकों से निवेदन है कि वे अपने अनुभव 25 फरवरी 2013 से पूर्व निम्नांकित पते पर प्रेषित कर अनुगृहीत करें।

सम्पादकीय कार्यालय, जिनवाणी,

शरदचन्द्रिका मुणोत सामायिक-स्वाध्याय भवन, कुमार छात्रावास के सामने,
नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.), फोन नं.-0291-2626279

वर्तमान को सुधारें, भविष्य सुधर ही जाएगा

महान् अध्यक्षसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा.

महान् अध्यक्षसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा. द्वारा 01 जनवरी, 2013 को रत्न स्वाध्याय भवन, तख्तेशाही रोड़, जयपुर में दिये गये प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी पत्रिका के सहसम्पादक श्री नौरतनमल जी मेहता द्वारा किया गया है-सम्पादक

कषायों का उपशमन, विषयों का वमन कर वीतरागता का वरण करने वाले अनन्त उपकारी तीर्थंकर भगवन्तों को वन्दन करने के पश्चात्। खंति-मुक्ति आदि दसविध धर्म के द्वारा चतुर्विध संघ का रक्षण और संवर्धन करने वाले जीवन नैय्या के तारक, चतुर्विध संघ के नायक, अनन्त उपकारी आचार्य भगवन्त को वन्दन!

बंधुओं,

जनश्रुति है कि देव और असुरों ने समुद्र का मंथन किया और उसमें उनको कुछ निधियाँ प्राप्त हुईं, पर आगमों की उक्ति है कि प्रभु महावीर ने आत्मा का मंथन किया, आत्मा का संधान किया और ऐसी निधि प्राप्त हुई जो आने के बाद वापस जाने वाली नहीं है।

संसार में अनेक निधियाँ हैं। खजाने अनेक हैं, सम्पत्तियाँ अनेक हैं, पर संसार के जितने भी खजाने हैं वे सब अशाश्वत हैं। पुण्यवानी के साथ खजाने प्राप्त होते हैं और पुण्यवानी क्षय होते ही प्राप्त खजाने विलीन हो जाते हैं। चक्रवर्ती के पास चौदह रत्न और नौ निधियाँ होती हैं, पर वर्णन मिलता है पुण्यवानी होती है तब तक वे निधियाँ साथ-साथ चलती हैं और ज्यों ही पुण्यवानी समाप्त होती है तो वे निधियाँ-खजाने समाप्त हो जाते हैं। पुण्यवानी है तब तक खजाने हैं, सम्पत्तियाँ हैं, निधियाँ हैं। भगवान ने केवलज्ञान की निधि प्राप्त की और वह ऐसी निधि है जो एक बार आ गई तो फिर जाती नहीं।

लोग कहते हैं- आज 1 जनवरी होने से नया वर्ष है। महासती मण्डल ने अभी-अभी संघनायक के प्रवचन-सभा में पधारने पर नव वर्ष पर गीत के माध्यम से मंगल कामना व्यक्त की। यह महासती मण्डल की भावना है। साधक का नव-वर्ष तो संवत्सरी से प्रारम्भ होता है। हमारी आगम-वाणी में आरे के परिवर्तन से नया वर्ष माना है। श्रावण कृष्णा प्रतिपदा से नव-वर्ष का प्रारम्भ भी कहा जाता है। चैत्र शुक्ला प्रतिपदा से भी विक्रम संवत् का नव वर्ष प्रारम्भ होता है। आपका नव-वर्ष आज से प्रारम्भ हो रहा है।

अभी मुनिश्री (यशवन्त मुनि जी महाराज) ने फरमा दिया कि संसार के पदार्थ सारे

पुराने हैं। नया कुछ है तो वह केवलज्ञान की निधि है। एक बार केवलज्ञान पा लिया तो फिर कुछ पाना शेष नहीं रहता। मैं यही बात कह रहा हूँ कि जो भगवान ने निधि पाई, वही जगत् जीवों के कल्याण के लिए मार्ग है। भगवान ने सुन्दर बात कही है-

जा जा वच्चइ रयणी, न सा पडिणियत्तइ।
अहम्मं कुणमाणस्स, अफला जंति राइओ।।
जा जा वच्चइ रयणी, न सा पडिणियत्तइ।
धम्मं व कुणमाणस्स सफला जंति राइओ।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 4.24-25

भगवान महावीर केवलज्ञान के प्रकाश में फरमा रहे हैं कि जो रात्रियाँ व्यतीत हो गई वे लौटकर वापस आने वाली नहीं हैं। वर्ष 2012 चला गया, कभी वह पुनः आ सकता है? लौटकर समय नहीं आता। अनुभवी तो कहते हैं चार चीजें वापस लौटकर नहीं आती। वे कौनसी चार चीजें हैं जो लौटकर नहीं आती? आप सब चुप हैं। आप नहीं बता रहे हैं, कोई बात नहीं, मैं ही बता देता हूँ- यौवन, भाषा, बहकर चला गया पानी और समय। कहा भी है:-

यौवन, भाषा, जो समय, बहुता पानी जाय।

खूब कहे ये चार तो, लौट न पाछा आय।।

कहते हैं- जवानी चली गई तो वह वापस आने वाली नहीं है। आप जवानी लाने के लिए भले ही चाहे जितनी दवाएँ ले लें, इंजेक्शन लगवा लें, मैथी के लड्डू बनवाकर खा लें पर जवानी जा चुकी है तो वह वापस आने वाली नहीं। भाषा एक बार मुँह से निकल गई वह चाहे शुभ हो या अशुभ, अच्छी हो या बुरी जो कुछ भी मुँह से निकल गया वह वापस नहीं आता। तीसरा कहा- पानी बहकर चला गया वह भी वापस आने वाला नहीं। चौथा है- समय। जो समय चला गया वह वापस नहीं आता।

जयपुर में आचार्य श्री का 2012 का चातुर्मास था। उसे वापस लाना चाहो तो क्या आ सकता है?

सभा में से- हाँ, बाबजी! आने वाले वर्षों में चातुर्मास मिल सकता है।

आप जौहरी हैं, आगे की सोचते हैं, पर भविष्य में होने वाला चातुर्मास क्या 2012 का होगा?

भगवान महावीर यही कह रहे हैं जो समय बीत गया, चला गया वह लौटकर आने वाला नहीं है। आप और हम तो क्या, भगवान भी गये समय को वापस लाने में समर्थ नहीं हैं। गया समय लौटाना हाथ की बात नहीं है। वर्तमान को या यों कहें जो समय उपलब्ध है उसे सार्थक कैसे किया जाय? आपके समक्ष भी यही प्रश्न है, नए वर्ष को सार्थक कैसे

किया जाय? उत्तराध्ययन में महावीर वाणी कह रही है- अधर्म करने वालों का समय निरर्थक-असफल हो रहा है और धर्म करने वालों का समय सार्थक-सफल हो रहा है। कई लोग आते हैं, कहते हैं- “बाबजी! हमें ऐसा आशीर्वाद दो, जिससे हमारा नव-वर्ष सार्थक हो जाय, सफल रहे।”

हर व्यक्ति अच्छा भविष्य चाहता है। जिसे भी अच्छा भविष्य बनाना है तो वह वर्तमान को अच्छा बना ले, भविष्य अच्छा बन जायेगा। आप अपना भविष्य सुखद, रम्य और सफल बनाना चाहें तो वर्तमान को अच्छा बना लें। जो समय चला गया, वह लौटकर आने वाला नहीं है। गया सो गया, हमें तो वर्तमान सुधारना है। वर्तमान हमारे हाथ में है। हम वर्तमान को सुधार लेंगे तो भविष्य की चिन्ता करने की जरूरत नहीं।

वर्तमान सुधारने पर भविष्य स्वतः सुधर जायेगा। आपको आपके जो दोष कष्ट देते हैं एवं भय उत्पन्न करते हैं, आप उन दोषों को दूर कर सदगुणों की बगिया लगा दें। आप- सब भाग्यशाली हैं। आपको मनुष्य जन्म मिला, आर्य क्षेत्र मिला, पूर्ण इन्द्रियाँ प्राप्त हुई, वीतराग आज्ञानुसार धर्म-साधना कराने वाले आचार्य भगवन्त का सान्निध्य प्राप्त हुआ, आप-हम ऐसा पुरुषार्थ करें जिससे हमारा वर्तमान अच्छा बने। वर्तमान अच्छा होगा तो भविष्य अच्छा हो ही जाएगा।

आप अपना चिन्तन करें। आप यहाँ (महाराज के पास) तो बड़ी सुन्दर बात कहते हैं, लेकिन गुरु सान्निध्य और धर्म स्थान छोड़ने के बाद क्या करते हैं? आप वीतराग वाणी बराबर सुन रहे हैं, सुनना और बात है तथा सुनकर ग्रहण करना दूसरी बात है। भगवान की वाणी कह रही है, धर्म की साधना-आराधना में आगे बढ़ोगे तो भविष्य सफल हो जायेगा। वर्तमान सुन्दर, भविष्य सार्थक। आप वीतराग वाणी का हार्द समझें, गुरु के वचनों को जीवन में आचरित करें और समय का सदुपयोग करना सीख जायें तो आपको वर्तमान और भविष्य दोनों की चिन्ता करने की जरूरत नहीं है।

आपको नव-वर्ष सुखद बनाना है तो आप गुरु की दीक्षा अर्द्धशती पर कुछ-न-कुछ नया संकल्प स्वीकार करें। वह चाहे रात्रि-भोजन त्याग हो, रात्रि चौविहार-त्याग हो, शीलव्रत का खंड हो, ज्ञान की आराधना हो। आप-हम नव-वर्ष पर नया संकल्प करके जीवन को पावन-प्रशस्त करें, इन्हीं मंगल भावों के साथ.....।

वर्तमान का सदुपयोग ही विकास का मूल है। भूत एवं भविष्य की चिन्ता करने से वर्तमान का सदुपयोग नहीं होता। भूतकाल से शिक्षा लेने पर एवं भविष्य को निर्दोष बनाने के संकल्प से वर्तमान सुन्दर होता है।

जैन जीवन शैली : एक चिन्तन *

डॉ. दयानन्द भार्गव

जैन कौन ?

जो जैन हैं उनके सम्मुख यह प्रश्न प्रायः नहीं आता कि जैन कौन है? वे मान लेते हैं कि हम जैन हैं, क्योंकि हम जैन घर में पैदा हुए हैं। किन्तु भगवान महावीर ने जन्म से किसी को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अथवा शूद्र नहीं माना, तो क्या किसी को जन्म से जैन माना जा सकता है? मेरी दृष्टि में जैनत्व सम्यक्त्व अर्थात् सम्यग्दर्शन से प्रारम्भ होता है। मिथ्यादृष्टि तो सब एक से ही हैं- क्या जैन, क्या अजैन। जैन-अजैन का भेद सम्यग्दर्शन अर्थात् चतुर्थ गुणस्थान से प्रारम्भ होता है।

अब इस सम्यग्दर्शन को भी कोई क्रियाकाण्ड (Rituals) नहीं समझ लेना चाहिये। तिर्यंच को भी सम्यग्दर्शन होने की सम्भावना मानी गयी है। सोचने जैसा है कि तिर्यंच को किस गुरु, देव या शास्त्र में श्रद्धा हो सकती है कि जिसके कारण उसमें सम्यग्दर्शन की सम्भावना हो सके? सम्यग्दर्शन एक सूक्ष्म भेदविज्ञान है। यह समझ कि मैं चेतन आत्मा हूँ, जड़ शरीर नहीं, तिर्यंच में भी आ सकती है। यही सम्यग्दर्शन है। इस समझ वाला व्यक्ति ही वास्तव में जैन है।

जीवन क्या है ?

जीवन जड़ शरीर और चेतन आत्मा की संयुति है। शरीर की अपनी आवश्यकता है- रोटी, कपड़ा और मकान। आत्मा की अपनी माँग है- स्वतन्त्रता अर्थात् मुक्ति। जीवन इन दोनों अपेक्षाओं के बीच सन्तुलन बनाने का नाम है। अथवा कहना चाहिये कि सामान्य व्यक्ति के लिये जीवन शैली वह उत्तम उपाय है जो इन दोनों- शरीर की आवश्यकता और आत्मा की माँग के बीच सन्तुलन बना सके।

सिद्धों की केवल आत्मा है अतः उनके लिये इस सन्तुलन की समस्या ही नहीं है। घट-पटादि का केवल शरीर है, उनमें आत्मा नहीं है, अतः उनके लिये भी कोई समस्या नहीं है। पशु के पास शरीर और आत्मा दोनों हैं, अतः वह भी अधिकतर सहज बुद्धि (Instinctively) से जीवन जीने के बावजूद स्वामिभक्ति जैसे नैतिक गुण अथवा अहिंसा

* आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म. सा. के सान्निध्य में 6-7 अक्टूबर 2012 को जयपुर में आयोजित 'जैन जीवन-शैली' विषयक राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेख।

जैसे आध्यात्मिक गुण से युक्त देखने में आता है। विशेषकर जैन कथाओं में पशुओं में अहिंसात्मक वृत्ति मिलने का उल्लेख है। इसीलिए तिर्यञ्च में भी सम्यग्दर्शन की सम्भावना मानी गयी है।

जैन जीवन शैली क्या है : साधन-साध्य विवेक

आत्मा और शरीर को भिन्न-भिन्न मान लेने पर प्रश्न आता है कि इन दोनों की आवश्यकताओं के बीच सन्तुलन की कसौटी क्या हो? जैन दृष्टि है कि शरीर साधन है, साध्य तो आत्मा ही है। शरीर की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति इसलिये की जाती है कि शरीर द्वारा साधना करके आत्मा परमात्मा पद को प्राप्त कर सके। यदि शरीर इस साधना के योग्य न रह जाये तो संथारा/संलेखना द्वारा शरीर की आवश्यकता की पूर्ति करना भी छोड़ दिया जाता है। वह साधन व्यर्थ है जो साध्य की प्राप्ति में सहायक न बनकर बाधक बन रहा हो। संथारा/ संलेखना जैन जीवन शैली का चरम बिन्दु है।

गृहस्थ की जीवन शैली

जीवन शैली का पटल बहुत व्यापक है। गृहस्थ के लिये जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण अंग आजीविकोपार्जन है। आजीविका द्वारा ही गृहस्थ अपने शरीर-मन की आवश्यकताएँ पूरी करता है। अब यदि शरीर को साधन मान लिया और साध्य आत्मा का परमात्म-पद प्राप्त करना है तो स्पष्ट हो जाता है कि हमें आजीविका उसी प्रकार अर्जित करनी चाहिये जो परमात्म-पद की प्राप्ति में बाधक न हो। यही श्रावक के व्रतों का आधार है। वह आजीविकोपार्जन में हिंसा, अनृत, चौर्य, अब्रह्म तथा मूर्च्छाभाव का क्रमशः न्यूनीकरण करता चला जायेगा, क्योंकि ये सब सावद्यभाव आत्मा को मलिन बना कर परमात्म पद-जो कि जीवन का लक्ष्य है, की प्राप्ति में बाधक बनते हैं। इन सावद्य भावों के क्रमिक न्यूनीकरण को श्रावक की प्रतिमाओं द्वारा प्रकट किया गया है।

आधुनिक युग की माँग

प्रतिमाओं द्वारा सावद्य कर्मों के त्याग का मार्ग ही श्रावक की वास्तविक जैन जीवन शैली है। श्रावक की प्रतिमाओं का चरमोत्कर्ष भी साधु जीवन के महाव्रतों के रूप में होता है, जहाँ सभी सावद्य कर्म सर्वथा त्याग दिये जाते हैं। यह जैन जीवन शैली का पारम्परिकरूप है।

जरा आधुनिक युग पर भी दृष्टिपात करें। मानलें कि हममें से अधिकतर न प्रतिमाधारी बनना चाहते हैं, न साधु बनना चाहते हैं, तो क्या उनके लिये भी कोई जैन जीवन शैली प्रतिपादित की जा सकती है? यह प्रश्न जैन-अजैन सभी धार्मिक आध्यात्मिक परम्पराओं

के लिये है कि साधना के चरम बिन्दु, संन्यास अथवा गृहत्याग को छोड़कर भी क्या आधुनिक युगानुरूप कोई जीवन शैली प्रतिपादित की जा सकती है।

उत्तर यह है कि सभी परम्पराएँ पुण्य को लौकिक अभ्युदय का कारण मानती हैं। पुण्य क्या है— इस विषय में भी सभी परम्पराएँ (कुछ दार्शनिक बारीकियों को छोड़कर) सहमत हैं। आम आदमी की आज बहुत चर्चा है। अतः दार्शनिक सूक्ष्मताओं में न जाकर आम आदमी के लिये जीवन शैली की बात करें तो चार बिन्दु उभर कर आयेंगे— ईमानदारी, परिश्रमशीलता, कार्यकुशलता और संवेदनशीलता। जैन परम्परा में ईमानदारी सत्य और अचौर्यव्रत के रूप में विस्तार से परिभाषित है। श्रम को महत्त्व देने के कारण तो जैन का पुराना नाम ही श्रमण पड़ गया था। कुशलता प्रमाद के अभाव का ही नाम है। सारे पाप प्रमादयोग के कारण होते हैं। यह बात तत्त्वार्थसूत्र के 'प्रमत्तयोगात्प्राणव्यपरोपणं हिंसा' आदि सूत्रों से स्पष्ट है। संवेदनशीलता अहिंसा का ही दूसरा नाम है।

सांसारिक सफलता का स्वरूप

इस प्रकार हम देखते हैं कि सांसारिक रूप से भी सफलता के सारे सूत्र जैन धर्म में उपलब्ध हैं। जो अध्यात्मप्रधान जीवन जीना चाहें उन्हें परम्परा का त्याग-प्रधान मॉडल उपलब्ध है, किन्तु जो मुख्यतः लौकिक जीवन ही जीना चाहते हैं उनके लिये भी जैन परम्परा में संवेदनशीलता के साथ ईमानदारीपूर्वक श्रम और कुशलता से जीवन निर्वाह करने का मार्ग पूर्णतः प्रशस्त है।

आज एक भ्रम फैल गया है कि बिना बेईमानी, छल-कपट और तिकड़म के संसार में सफलता नहीं मिलती। यह सच है कि अधर्म के मार्ग से भी पैसा मिलता हुआ देखने में आता है, किन्तु जिन्होंने अधर्म से पैसा कमाया, उन्हें अपमान के रूप में उसकी भारी कीमत भी चुकानी पड़ी। अखबारों में प्रतिदिन भ्रष्टाचारियों के नाम मुखपृष्ठ पर आ रहे हैं। क्या हम इन लोगों को सांसारिक दृष्टि से सफल मानेंगे? गीता में कहा कि अपयश मृत्यु से भी अधिक भयंकर है— अकीर्त्तिर्मरणादतिरिच्यते। दिलीप राजा ने नन्दिनी गौ से प्रार्थना की थी कि वह उसका प्राण ले ले, किन्तु यशःशरीर को कृपा करके बचा ले— यशःशरीरे भव मे दयालुः।

मानलें कि हमने अपने भ्रष्टाचार को छिपाने में सफलता प्राप्त कर ली तो भी हम भ्रष्टाचार को किस-किस से छिपा पाते हैं? क्या हमारी पत्नी, सन्तान, निकट सम्बन्धी भी हमारे भ्रष्ट आचरण को नहीं जानते? उनकी दृष्टि में हमारा कितना सम्मान रह जाता है? सबसे बड़ी हानि तो यह है कि गलत काम करके हम अपनी दृष्टि में ही गिर जाते हैं। जो

अपनी दृष्टि में ही गिर गया उसे संसार भर का सम्मान मिल भी जाये तो उसकी क्या कीमत है?

नवयुवकों के लिये धर्म

जो धर्म के मार्ग से भौतिकता में आगे बढ़े हैं उनका अभ्युदय तो सिद्ध हुआ ही, उन्हें सम्मान भी मिला। ऐसे लोगों की संख्या भी कम नहीं है। उनके नाम केवल अखबार में ही नहीं, इतिहास में भी स्वर्णाक्षरों में अंकित होते हैं। आवश्यकता है कि ऐसे लोगों की एक केस-स्टडी करके यह बताया जाये कि उचित साधनों से भी लौकिक उन्नति की जा सकती है।

जैन परम्परा के आचार्य कुन्दकुन्द की भाषा में कहूँ तो शुभोपयोग से भले ही मोक्ष न मिले, सुख तो मिलता ही है। यह संदेश आज के नवयुवक तक पहुँचना चाहिये। वह अभी जीवन के प्रवेशद्वार पर खड़ा है। उसे जीवन के अन्त की चिन्ता अभी नहीं है कि त्याग-तपस्या की अधिक चिन्ता करे, उसे जीवन के प्रारम्भ की चिन्ता है। उसके सामने रोजी-रोटी का प्रश्न है। उसे बताया जाये कि ईमानदारी, कठोरश्रम, कार्यकुशलता और व्यवहार में नम्रता आदि आध्यात्मिक गुण ही नहीं हैं, सांसारिक सफलता के भी सूत्र हैं।

मेरा अनुभव

इस परिप्रेक्ष्य में जैन शब्दावली की मूलभावना को सुरक्षित रखते हुए भी उसकी युगानुरूप व्यावहारिक व्याख्या करना सम्भव है। मैं व्यवसाय से एक अध्यापक हूँ। अध्यापक के रूप में जैन व्रतों की मैंने अपने अध्यापन के व्यवसाय में तदनु रूप व्याख्या करके उसे यथाशक्ति जीवन में उतारा तो मुझे सफलता मिली। इसी प्रकार प्रत्येक व्यवसाय के सन्दर्भ में जैन जीवन शैली अर्थात् व्रतचर्या की व्याख्या किया जाना सर्वथा सम्भव है और ऐसा होना भी चाहिये। मैंने अपने अनुभव से सीखा कि अध्यापन कार्य में भी अहिंसा, सत्य आदि व्रतों का व्यवहार सम्भव है। अहिंसा का अर्थ है किसी को किसी प्रकार का कष्ट न देना। इस व्रत का विस्तार करें तो अध्यापक के लिए यह अर्थ होगा कि उसे कक्षा में अपना पाठ्य विषय पूरी तरह तैयार करके ही जाना चाहिये। यदि वह बिना तैयारी के कक्षा में जाता है तो उसकी कक्षा के विद्यार्थी को यह कष्ट होता है कि उसे अध्यापक से अपेक्षित ज्ञान प्राप्त नहीं हो रहा और उसके समय तथा शक्ति का अपव्यय हो रहा है। विद्यार्थी के इस कष्ट का दायित्व अध्यापक पर है और वह इस कारण अहिंसा-व्रत का उल्लंघन कर रहा है। इसी प्रकार अध्यापक का समय पर कक्षा में न जाना भी छात्रों को कष्ट देता है।

श्रावकाचार का दूसरा व्रत है- सत्य। समस्त शिक्षा मूलतः सत्य की खोज है। विद्यार्थी

विद्या अर्थात् सत्य का अर्थी अर्थात् इच्छुक है। अध्यापक का दायित्व है कि सत्य की खोज में वह विद्यार्थी की सहायता करे। इसके लिये उसे स्वयं निरन्तर सत्य की खोज करनी होती है। इसलिये अध्यापक को अनिवार्यतः निरन्तर शोध करना होता है। इसके लिये नवीनतम खोजों का परिचय होना आवश्यक है। न्यूटन के बाद आइन्स्टीन ने न्यूटन के सिद्धान्तों में परिवर्तन कर दिया। यदि कोई अध्यापक केवल न्यूटन को ही पढ़ाता रहे और आइन्स्टीन को न पढ़ाये तो वह सत्यव्रत का पालन नहीं कर रहा है।

अचौर्य— किसी दूसरे के ज्ञान को अपना बताकर उसका श्रेय स्वयं लेना चोरी है। अध्यापक का कर्तव्य है कि न वह स्वयं ऐसा करे न अपने छात्र को ऐसा करने दे। यदि प्रचार की दृष्टि से पुराने का ही पिष्टपेषण करना है तो उसे शोध की महनीय संज्ञा न दी जाये। पुराने को दोहराया जा सकता है, किन्तु वह शोध नहीं है।

ब्रह्मचर्य— ब्रह्म का एक अर्थ ज्ञान भी है। ब्रह्मचर्य का अर्थ एक ज्ञानी की चर्या है। विद्यार्थी का पुराना नाम ब्रह्मचारी है। अध्यापक का पुराना नाम आचार्य है। अध्यापक जिस आचरण की अपेक्षा विद्यार्थी से करता है, उस आचरण का पालन उसे स्वयं कठोरता से करना होता है। विद्यार्थी उपदेश से कम सीखता है, अध्यापक के आचरण से अधिक सीखता है। यदि अध्यापक स्वयं शिथिलाचारी है तो उसके विद्यार्थी सदाचारी होंगे, यह बहुत कम सम्भव है। पाँचवा व्रत **अपरिग्रह** है। परिग्रह दो प्रकार का है— बाह्य और आन्तरिक। अध्यापक यदि बाह्य परिग्रह को जुटाने में अपनी शक्ति लगा देगा तो ज्ञानार्जन के लिये उसके पास समय और शक्ति बचेगी ही नहीं या बहुत कम बचेगी। अतः बाह्य परिग्रह की सीमा बाँधना आवश्यक है।

आन्तरिक परिग्रह से बचना और भी आवश्यक है। “मेरा मत ही सत्य है और सब गलत हैं” — ऐसा आग्रह अध्यापक की प्रगति में सबसे बड़ा बाधक है। नये ज्ञान के द्वार बन्द न हों, इसके लिये आवश्यक है कि अध्यापक सत्याग्रही बने, दुराग्रही नहीं।

उपर्युक्त विवेचन का विस्तार किया जा सकता है, किन्तु इस संक्षिप्त विवेचन से भी इतनी बात स्पष्ट हो जाती है कि जैन परम्परा समस्त श्रावकाचार के नियमों की सही समझ एक आदर्श अध्यापक की आचार संहिता भी प्रस्तुत करने में पूर्णतः सक्षम है।

एक अध्यापक—श्रावक श्रावकाचार की आत्मा का पालन करके न केवल अपने लिये मोक्ष का मार्ग प्रशस्त कर लेता है, अपितु एक आदर्श अध्यापक बनकर समाज के प्रति अपना दायित्व भी बखूबी निभा सकता है।

कहने की आवश्यकता नहीं कि ऐसा करके वह अध्यापक—श्रावक यश एवं

लोकप्रियता आदि सहज ही प्राप्त कर लेता है। किन्तु यह सब फल तो आनुषङ्गिक हैं। मूल फल तो वह आनन्द है जो किसी भी व्यक्ति को अपना दायित्व कुशलता पूर्वक निभाने से ही मिल पाता है, अन्यथा नहीं।

निष्कर्ष

परम्परागत श्रावकाचार के अणुव्रतों का पालन करते समय यदि अध्यापक निम्न व्रतों का भी समावेश करले तो वह अपने अध्यापकीय दायित्व का भी समीचीनतया निर्वाह कर सकेगा और इस प्रकार वह व्यक्तिगत निःश्रेयस की ओर अग्रसर होने के साथ-साथ सामाजिक अभ्युदय में भी अपना योगदान अध्यापन के माध्यम से दे सकेगा-

1. मैं कक्षा में अध्यापन करने जाने से पहले पाठ्य विषय की यथाशक्ति पूरी तैयारी करके जाऊँगा ताकि कम से कम समय में विद्यार्थी को अधिक से अधिक ज्ञान दे सकूँ।
2. मैं अपने विषय की नवीनतम प्रगति की जानकारी के लिये अधुनातन ग्रंथ तथा शोध-पत्रिकाओं का अध्ययन करूँगा ताकि मेरा ज्ञान पुराना न पड़ जाये।
3. मैं किसी दूसरे की विषय-वस्तु को अपनी कह कर प्रकाशित नहीं करूँगा न अपने छात्रों को ऐसा करने की अनुमति दूँगा।
4. मैं कक्षा में पूरे समय विषय की ही चर्चा करूँगा, इधर-उधर की बातों में समय नहीं गवाऊँगा।
5. मैं स्वयं संयम तथा अनुशासन का ऐसा जीवन जीऊँगा जैसा जीवन कि मैं अपने विद्यार्थियों का बनाना चाहता हूँ।
6. मैं ऐसी विलासिता से बचूँगा जो ज्ञान की आराधना में बाधक हो।
7. मैं निरन्तर सत्य की खोज में अपना समय तथा शक्ति लगाऊँगा।
8. मैं किसी प्रकार के दुराग्रह से मुक्त रहकर सत्य को ग्रहण करने में तत्पर रहूँगा चाहे वह सत्य कहीं से भी मिले।

वस्तुतः उपर्युक्त व्रत परम्परागत श्रावकाचार के अन्तर्गत आने वाले अहिंसादि व्रतों की आत्मा का ही विस्तार हैं। यह इस तथ्य का निदर्शन है कि अध्यात्म लौकिक जीवन के लिये भी एक सुरक्षित मार्गदर्शक का काम कर सकता है।

-जे 1/7, एल.आई.सी. फ्लैट्स, विद्याधर नगर, जयपुर (राज.)

निमन्त्रण-पत्र में 'सूर्यास्त पूर्व भी भोजन की व्यवस्था है' के स्थान पर निम्नानुसार लिखना अधिक उचित लगता है-

1. भोजन सायं 5 बजे से (सूर्यास्त के समय को ध्यान में रखकर समय का उल्लेख करें।)
2. सूर्यास्त के पूर्व सादर आमन्त्रित हैं।

SIGNIFICANCE OF THE SIX AVASHYAKAS (ESSENTIALS)

Dr Priyadarshana Jain

INTRODUCTION

Spirituality, spiritual way of living and universal human values like compassion, tolerance, peace, universal brotherhood etc., are decreasing due to the ever-increasing, multi-farious, dreadful, dangerous complexities of the modern world that is predominantly materialistic. The great advancements made in the field of science and technology encompass all aspects of modern living be it education, medicine, entertainment, travel, communication, etc., and above all our day to day life style. All these advancements have not come without a price. We face grave consequences of our anthropocentric and materialistic attitude and lifestyle which is fast deteriorating the environment. In this race for material progress, man has become insensitive to the sufferings of others and has caused all kinds of problems at all levels. As the world faces multidimensional challenges like global warming, climate change, environmental degradation, species extinction, poverty, ethnic conflicts, etc at the global level; corruption, communal riots, disharmony, divisive politics, etc at the national level, unemployment, suicidal tendencies, growing materialistic culture, etc at the social level and ignorance, intolerance, lack of values, etc at the personal level - all these go to disturb the unity of mankind and at most times religion is blamed for all the external and internal conflicts. The problem today is not of guided missiles but of misguided men who use religion for promoting violence and terror. Life today is more stressful, audacious, diseased, harmful and impulsive than ever before. In search for happiness we are distorting the very fabric of life and life forms. Non-violence, honesty, equanimity, mutual-co existence, stress-free and disease free life, devotion, repentance, respect for all, tolerance etc., seem to be mere ideals today.

At this crucial juncture it is important to understand the significance of ancient wisdom. Our ancestors did not have access to the

technology we have today, but they surely led a more peaceful and stress-free life. They were not connected to the vast world through media, internet, face- book, etc., but the inner connectivity was vibrant and they led a more meaningful and harmless life. They were guided by inner wisdom which enabled them to lead a compassionate life style and not a destructive life style. They were aware that all life is interconnected. The sound system of ethics grounded in sound metaphysics inspired them to be non-violent, contented, respectful and spiritual. They did not live in a state of illusion that mere material progress alone can make mankind happy. The spiritual aspect, which held a foremost place in the ancient world, is relegated to an insignificant position today. Hence the problem of improving human nature is no doubt the most baffling of all modern problems. (The basic thought of Bhagawan Mahavir by Dr Jaykumar Jalaj)

In this context let us thoroughly analyze the vision of the *Tirthankaras, Arihantas, Jinas* - the Gods of the Jains who have given the universal message of spirituality and rightful living. They are the enlightened, pure souls who have become blemish-less by conquering perversion, passions, delusion and ignorance. They are the omniscients who have revealed the right way of living and the everlasting nature of bliss experienced in emancipation. The *Acharyas, Upadhyayas* and *Siddhas* follow the path of right living, of self- realization, self-purification, self-conquer in order to be liberated like the Jinas and the dharma preached by them is that of non-violence, self-restraint and austerity. Dr. Vastupal Parekh remarks, "Right from its inception and certainly since its revival in 600 BCE, by *Mahavira*, Jainism has championed an all-inclusive spirituality. Development of human potential has no doubt been its main concern, but the welfare and happiness of all living forms has been equally important". He further says that, "Enabling human spirit to become free and blissful is Jain spirituality. The Jain spirituality blends an experience-based worldview of the universe as a reality, a rational cause and effect-based theory of karma, a soul based spirituality, a code of conduct that reveres all life, and a life-style that preserves our ecosystems, respects differing viewpoints and thus promotes personal and global peace". (Jainism and

the new spirituality by Dr Vastupal Parakh)

NOTE ON THE AVASHYAKA SUTRA

The *Avashyaka* Sutra is one of the important Jaina texts. It is the 32nd Agama and the most prominent one. Hence it is termed as *Avashyaka* meaning the 'Essential' one. Irrespective of caste, creed, status, gender, nationality etc any person who aspires to accomplish the purification of the self can study the *Avashyaka Sutra* and follow it. The contents of the *Avashyaka* Sutra are beyond all isms and dogma. It is important to follow a spiritual discipline for self-realization and this spiritual discipline is termed as *Avashyaka* which is taken up as a ritual and followed by the members of the four-fold Jaina community. This daily ritual is called '*Pratikramana*' which is the fourth essential of the six essentials. This fourth essential of *Pratikramana* is the penitential retreat, designed for self-introspection, it has become so popular that when one recites or does the ritual of *Avashyaka*, they do not say that they are doing the *Avashyaka* but they say that they are doing the *Pratikramana*. *Pratikramana* is indicative of the six *Avashyakas* although it is the largest part of the *Avashyaka Sutra*. *Avashyaka* is the essence of all Jaina beliefs and practices, and so the *Avashyaka Sutra* is the first Agama text that is studied, memorized, contemplated upon by around 4-5 million Jains worldwide. Their day begins with the chanting of the *Avashyaka Sutra* lessons like *Namaskara Sutra*, *Mangala Sutra* etc and their day ends with the *Pratyakhyana Sutra*. The spirit or *Avashyaka* is the very fabric of a Jain individual and the Jain community and it can be reflected in their attitude towards the self and the environment at large and also in their peace-loving, eco-friendly lifestyle.

AVASHYAKA AND JAIN LIFESTYLE

Avashyaka means '*Essential*'. That which has to be essentially followed is *Avashyaka*. There are six essentials to be observed by all aspirants and each one is equally important. These six are the six essentials of spiritual, ethical and social life. They serve the purpose of spirituality, ecology and sociology. They are important for establishing ntra healthy as well as inter personal relationships. It is only through

the practice of these six essentials by thought, word and deed can an aspirant realize his spiritual goal and accomplish his spiritual quest of purification and perfection.

To control and rule others is terror and to control and conquer oneself is termed as '*Avashyaka*'. It is not at all important to control others nor is it actually possible to do so, it is only an illusion that one thinks that he can control, conquer and rule other people and lands. When one turns inwards and tries to realize and release oneself from bondage and misery, the discipline that he follows to do is termed as *Avashyaka*. To fight with oneself and the five great enemies of the soul viz., perverse attitude (*mithyatva*), vowlessness (*avirati*), invigilance (*pramada*), passions (*kasaya*) and inauspicious activities of mind, body and speech (*asubha yoga*) is termed as *Avashyaka*. The pathway of purification and perfection is *Avashyaka*. To introspect and to realize one's shortcomings, blemishes, evil thoughts and practises in order to be relieved of them alone are essential for an aspirant. All the other mundane activities are taken up by an aspirant with a detached spirit, minimizing violence, attachment etc., to the extent possible until one becomes spiritually pure and self-sufficient. To discover the imperfections and to seek perfection in one's life is *Avashyaka*. To give up all mundane attachments and to be focused in the centrifugal tendency of the soul in order to terminate the cycle of worldly existence which is characterized by birth, death, old-age and disease is termed as *Avashyaka*. *Avashyaka* is the journey of the soul from untruth to truth, from darkness to light, from death to immortality. *Avashyaka* is coming home to oneself, to the realization and manifestation of the pure self.

Anybody who takes to the six *Avashyakas* in spirit and deed becomes a seeker of perfection and liberation and eventually becomes liberated. Such people are rare on this earth. Those who make this commitment for a lifetime are the ascetics (*sadhus* and *sadhvis*) and those who try to balance their spiritual life and social life are the Jain householders (*shravakas* and *shravikas*).

(Continue)

जैन जीवनशैली : एक समग्र विश्लेषण*

श्री रणजीतसिंह कूमट

जीवन शैली हमारे संस्कारों, संस्कृति और सामाजिक व पारिवारिक वातावरण से निर्धारित होती है। संस्कार और संस्कृति का आधार परम्परा, धार्मिक उपदेश, धार्मिक ग्रन्थ और माता-पिता एवं गुरुजनों के आचार, विचार व उपदेश होते हैं। सामाजिक वातावरण में सामाजिक संस्थाओं व उनके संस्थापकों के आचार, विचार, मित्र मंडली, अखबार, दूरदर्शन, चलचित्र, शिक्षा प्रणाली, राजनैतिक वातावरण आदि सम्मिलित होते हैं। आज के युग में इण्टरनेट जिस पर कई सामाजिक नेटवर्क यथा फेसबुक, ट्विटर आदि प्रमुख हैं, भी जीवन शैली पर गहरा प्रभाव डालते हैं।

संस्कारों की प्राथमिक भूमिका परिवार से ही मिलती है और जैसा महात्मा गाँधी ने कहा- “माता बच्चे की प्रथम शिक्षक होती है।” बालक के संस्कारों के लिए माता-पिता मूल रूप से जिम्मेदार हैं। बालक के गर्भ में आते ही बालक में संस्कारों का बीजारोपण प्रारम्भ हो जाता है और इसीलिए माताओं से अपेक्षा की जाती है कि वे इस समय खाने, पीने, पढ़ने, सुनने व विचार करने के मामले में काफी सचेत रहें, क्योंकि जो भी हम पढ़ते, लिखते, देखते और सोचते हैं, उन सबका बालक पर प्रभाव पड़ता है। अच्छे व सकारात्मक विचार बालक में अच्छे संस्कारों का बीजारोपण करते हैं। जन्म के बाद भी बालक देखता ज्यादा है और सुनता कम है। जैसा वह देखता है वैसा ही अपने आचरण व संस्कारों में आत्मसात् करता है। बालक को हम कहें कि सच बोलो और वह देखता है कि सच का प्रयोग घर में नहीं हो रहा है तो वह देखे हुए का अनुसरण करेगा न कि सुने हुए का। अतः बालक के संस्कार व आचरण के लिए मुख्य रूप से परिवार के लोग ही जिम्मेवार होते हैं। बाद में स्कूल, दोस्त, शिक्षक, पड़ोसी आदि का प्रभाव पड़ता है और कोशिश यही करनी चाहिए कि बालक के शिक्षक संस्कारी हों। दोस्त अच्छे हों और अड़ोस-पड़ोस का वातावरण भी अच्छा हो। फिर भी यदा-कदा विपरीत वातावरण भी मिल जाये तो घर के संस्कार मजबूत होने पर बाहरी विपरीत वातावरण का असर भी नगण्य होगा। यदि आज कोई बच्चों के संस्कार न होने, चरित्र में गिरावट आने और अपसंस्कृति के प्रभाव की

* आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म. सा. के सान्निध्य में 6-7 अक्टूबर 2012 को जयपुर में आयोजित 'जैन जीवन-शैली' विषयक राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेख।

शिकायत करते हैं तो सबसे पहले मैं माता-पिता और परिवार के सदस्यों को जिम्मेदार मानूँगा। हमने अपने बच्चों के साथ संवाद छोड़ दिया, उनके प्रति लगाव कम कर दिया और उनके संस्कारों की ओर ध्यान देना बंद कर दिया। अपने ही कार्य में मशगूल हो कर बच्चों पर ध्यान नहीं दिया तो बाहरी वातावरण हावी होगा ही और इसमें बच्चों का दोष न होकर हमारा दोष है, इसे स्वीकार करना चाहिए।

जैन संस्कारों का मूल आधार

जैन संस्कारों का यदि घर में वातावरण हो तो बच्चे संस्कारी, विनम्र और अच्छे चाल-चलन वाले होंगे, क्योंकि जैन जीवन-शैली का आधार श्रावकों के लिए निर्धारित व्रत या नियम हैं जिनका मूल आधार अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह है। जैन धर्म का विशेष आधार अहिंसा अथवा करुणा है। अहिंसा की व्यापक दृष्टि में सत्य, अस्तेय आदि सब समाविष्ट हो जाते हैं। सभी प्राणियों की रक्षा और उनके प्रति दया का भाव तो मूल रूप से अहिंसा है ही, परन्तु वैचारिक रूप से अहिंसा के लिए सत्य बोलना, सामाजिक अहिंसा के रूप में अस्तेय या अचौर्य, पारिवारिक अहिंसा व भोग की सीमा के रूप में ब्रह्मचर्य या शील का पालन, तथा आर्थिक अहिंसा या शोषण पर रोक के लिए अपरिग्रह (धन संग्रह पर सीमा) ये सब अहिंसा के दायरे में आ जाते हैं। श्रमण इन व्रतों का बिना किसी अपवाद के पालन करते हैं, अतः उनके व्रत 'महाव्रत' कहलाते हैं। श्रावक या गृहस्थ के लिए अपवाद भी हैं और वे अपनी क्षमता के अनुसार व्रतों को धारण कर सकते हैं। अतः श्रावक के व्रत 'अणुव्रत' या छोटे व्रत कहलाते हैं। इन व्रतों के अतिरिक्त विचारों में उदारता व अनाग्रह के लिए अनेकान्त के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया गया है ताकि हम अपने ही विचारों को सत्य न मानें, दूसरों के विचारों को भी आदर दें। गृहस्थों के लिए पाँच अणुव्रत के अतिरिक्त तीन गुणव्रत व चार शिक्षाव्रत भी हैं, जिनका उल्लेख आचार्य समन्तभद्र द्वारा रचित 'रत्नकरंड श्रावकाचार' तथा श्रावकों के लिए निर्धारित प्रतिक्रमण के पाठ जो 'आवश्यक सूत्र' में दिए हैं, में आता है। सुदूर क्षेत्रों में जाने पर सीमा (दिशाव्रत), भोजन में सीमा (भोगोपभोग परिमाण व्रत) व अनर्थ दण्ड (बिना कारण जीवों को दण्ड देना) पर रोक आदि तीन गुणव्रत हैं। सामायिक, देशावकाशिक व्रत, पौषध, आदि करना व अतिथि से संविभाग करना अर्थात् उन्हें भोजन, वस्त्र, शयन, पात्र आदि का दान करना (अतिथि संविभाग व्रत) आदि चार शिक्षा व्रत हैं। इसके अतिरिक्त विनय या विनम्रता को भी उच्च स्थान दिया है और इसे धर्म का मूल (उत्तराध्ययन सूत्र) कहा है। विनय से ही बड़ों के प्रति आदर, उनकी आज्ञा को मान और अपने अहम् को संयमित करने के संस्कार मिलते हैं। हम अपने से बड़ों से कैसे बोलते हैं। उनको किस प्रकार आदर से बुलाते हैं, यह

बालक घर में प्रयोग में आने वाली भाषा से सीखते हैं। अनेक व्यक्ति घरों में सेवा देने वाले भाई-बहिनों (काम करने वाली बाई, ड्राईवर आदि) को भी आदर की भाषा से संबोधित करते व बोलते हैं और ये संस्कार भी जैन घरों में मिलते हैं।

श्रमणों द्वारा शास्त्रों की व्याख्या के आधार पर दिए उपदेश के अनुसार गृहस्थ व्रतों को धारण करते हैं और अपना आचार, विचार, रहन-सहन निर्धारित करते हैं। अहिंसा मूल व्रत के कारण समस्त जैन बंधु शाकाहार (Vegetarian food) करते हैं और मांस, अंडा, मछली आदि का प्रयोग नहीं करते। कुछ बंधु जमीकंद (भूमि के नीचे उगने वाली वस्तु यथा आलू, प्याज, गाजर आदि) का प्रयोग नहीं करते और अब बहुत से स्थानों पर 'जैन शाकाहार' की मांग करेंगे तो उसमें आलू, प्याज, गाजर आदि जमीकंद का प्रयोग नहीं मिलेगा। इन्हीं व्रतों के साथ सात कुव्यसनों पर भी रोक लगाने पर साधु-संतों ने बहुत जोर दिया और इसका उल्लेख रत्नकरंड श्रावकाचार में भी आता है। उसी के प्रभाव से अधिकांश जैन घरों में शराब, धूम्रपान, नशीली वस्तुओं, जुआ, वेश्यागमन आदि का प्रयोग निषिद्ध है। जैन गृहस्थ की पहचान ही शाकाहार का प्रयोग, व शराब, नशीली वस्तु, धूम्रपान आदि का निषेध है। इसका मूल आधार अहिंसा के अतिरिक्त शील पालन व कुव्यसनों पर प्रतिबन्ध का उपदेश है। जितने कुव्यसन कम होंगे जीवन उतना ही सरल व तनावरहित होगा तथा स्वास्थ्यप्रद भी होगा। अधिकांश बीमारियाँ कुव्यसन व अभोज्य पदार्थों के सेवन से होती हैं। शराब, धूम्रपान, मांसाहार, जुआँ आदि शरीर और धन का नाश कर परिवार का भी नाश करते हैं। शराबी और जुआरी व्यक्ति से परिवार के लोग दिन-रात परेशान रहते हैं। पारिवारिक हिंसा (Domestic violence) का तांडव-नृत्य होता है। बच्चों को पूरा भोजन व कपड़े नहीं मिलते, न उनकी उचित शिक्षा का प्रबंध होता है। अतः पाँच व्रतों के साथ कुव्यसनों पर रोक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। हमारा सौभाग्य है कि हम जैन कुल में जन्मे और हमें ये उच्च संस्कार मिले, जिसके कारण कुव्यसनों से बच पाए। वे परिवार वास्तव में हतभागी हैं, जिनमें इन कुव्यसनों का प्रचलन है या हो गया है। यदि जैन घरों में इनका प्रचलन पाया जाता है, जैसा कि कुछ लोगों से सुनने में आता है, तो अधिक दुर्भाग्य की बात क्या होगी कि जैन कुल पाकर भी कुव्यसनों से मुक्ति न पा सके। जो कुव्यसनों से मुक्ति न पा सके वे जीवन में कैसे मुक्ति या आनंद पा सकते हैं?

चरित्र का आध्यात्मिक आधार

चरित्र या जीवन शैली हमारा बाहरी आवरण है। यह प्रतीयमान है और इसे देखकर हमारे आचार-व्यवहार का अनुमान लगा सकते हैं, परन्तु इस आचार-व्यवहार का वैचारिक एवं अध्यात्मिक आधार है, जो हमें आचार या चरित्र में अडिग बनाता है, हमारे

विचारों को सृष्टि बनाता है और विषम परिस्थिति में भी अपने आचार-विचार से विचलित नहीं होने देता। इससे हम अपने विश्वास में अडिग रह सकते हैं जिसे अंग्रेजी भाषा में *Courage of conviction* कह सकते हैं। जैन जीवनशैली का आध्यात्मिक आधार है सम्यक्त्व, समभाव और समता। ये तीनों शब्द समानार्थक दिखते हैं, परन्तु तीनों के अर्थ की गहराई अलग-अलग है। इनका विश्लेषण विस्तार से करना उपयुक्त होगा।

सम्यक्त्व

इसका अर्थ है जैसा है उसे वैसा ही जानें, सत्य को सत्य मानना व असत्य को असत्य मानना। उदाहरण के लिए जो वस्तु अनित्य है, नश्वर है उसे नाशवान ही मानना सम्यक्त्व है, परन्तु नाशवान को अक्षय मान कर उसके प्रति आग्रह करना या मोह करना सम्यक्त्व के विपरीत मिथ्यात्व है। अधिकांशतः में हम नाशवान को स्थायी मानकर उसी के मोहजाल में फँसे रहते हैं। धन-दौलत यद्यपि नाशवान है, परन्तु उसको स्थायी मानकर उसके संग्रहण में लगे रहते हैं। यह सम्यक्त्व के विपरीत व्यवहार है। इसी प्रकार सगे-सम्बन्धी, पति-पत्नी, पुत्र-पुत्री आदि को भी अपना मानकर उनके मोह में भ्रमित रहते हैं। विषयों के प्रति लगाव ही भ्रम है जो हमारे दुःखों का मूल कारण है। इसीलिए जैन धर्म विरक्ति या विरति का धर्म है, जो विषयों व कामना से मुक्त होने के लिए प्रेरित करता है।

सम्यक्त्व अर्थात् सही रूप से देखना व समझना ही सम्यग्दर्शन व सम्यग्ज्ञान कहलाते हैं। पर-द्रव्यों (सांसारिक या भौतिक वस्तुओं व व्यक्तियों) में आत्मबुद्धि छोड़कर अपने ज्ञाता-द्रष्टा स्वरूप स्वभाव में श्रद्धा (सम्यग्दर्शन), अनुभव या अनुभूति (सम्यग्ज्ञान) व ज्ञायक स्वभाव में प्रवर्तन रूप आचरण ही चारित्र (सम्यक्चारित्र) है। ज्ञान, दर्शन व चारित्र का समन्वय ही आदर्श जीवन का आधार है। चारित्र के पीछे यदि ज्ञान और दर्शन की भूमिका न हो तो चरित्र बिना नींव का महल है, जो कभी भी धराशायी हो सकता है। ज्ञान हो, परन्तु उसके अनुकूल आचरण न हो तो ज्ञान बोझ मात्र है। (ज्ञानं भारः क्रियां विना) ज्ञान और चरित्र के बीच दर्शन एक महत्वपूर्ण कड़ी है। जिसका दर्शन सम्यक् है उसका ज्ञान भी सम्यक् है और जिसका ज्ञान और दर्शन सम्यक् है उसका चरित्र भी सम्यक होगा, यह निश्चित है। हमारी दृष्टि सही है तो राह भी सही होगी। दृष्टि ही गलत है तो राह गलत होगी और तदनुसार चरित्र भी गलत ही होगा। इसीलिए आचार्य उमास्वाति ने कहा “सम्यग्दर्शनज्ञानचरित्राणि मोक्षमार्गः” (तत्त्वार्थ सूत्र) अर्थात् सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन व सम्यक् चारित्र (तीनों मिलकर) मोक्ष का मार्ग हैं।

समभाव

इसका अर्थ है सबके प्रति प्रेम और समानता का भाव। किसी को ऊँचा या नीचा नहीं

मानना, किसी से द्वेष न रखना, और सबके कल्याण के काम में संलग्न होना। सब प्राणी एक समान हैं। सब मनुष्य एक समान हैं। सब के प्रति समभाव रखना इस बात का द्योतक है कि हम किसी से जाति, लिंग, देश, रंग आदि के आधार पर भेद-भाव नहीं करते। सबमें मेरी जैसी आत्मा है। सबकी अनुभूति एक है और जैसा मैं अनुभव करता हूँ वैसा ही अन्य प्राणी अनुभव करते हैं। यही समभाव अहिंसा की नींव है। सब प्राणियों को अपने जैसा माने और भिन्न न माने तो सब प्राणियों के प्रति प्रेम व करुणा का भाव स्वतः प्रकट होगा, जो अहिंसा का आधार है। आचारांग सूत्र में स्पष्ट किया है कि जिन प्राणियों को तू पीड़ित, दमित या शासित करना चाहता है वह तू ही है, अन्य नहीं। यदि सब प्राणी वही हैं, जो मैं हूँ तो मैं उनको कैसे दमित, पीड़ित या शासित कर सकता हूँ। जब मैं दूसरे प्राणी को 'दूसरा' मानता हूँ तब ही उस पर अत्याचार या अनाचार करता हूँ। यदि मैं उनको अपने जैसा मानूँ तो कभी अत्याचार नहीं कर सकता। जहाँ तक ऊँच-नीच का सवाल है, उत्तराध्ययन सूत्र में कहा है- व्यक्ति कर्म से ब्राह्मण (उच्च कुल) होता है न कि जन्म से। भगवान महावीर ने जाति-पाँति की सब दीवारें गिरा दी थी।

समता

इसका अर्थ समभाव तो है ही, इसका अर्थ संतोष भी है। जो प्राप्त है उसमें संतोष करना अपरिग्रह व्रत का आधार है। इसके अतिरिक्त विकट परिस्थिति में भी अविचलित व अनुद्वेलित रहना भी समता है। जो विषम परिस्थिति में अपना संतुलन न खोये और सुयोग या अच्छी परिस्थिति में अहम् से परिपूर्ण न हो जाये वह समतावान या समत्व वाला कहलाता है। प्रशंसा व निंदा दोनों में समान भाव रखे वह समतावान कहलाता है। जिसका अहम् विसर्जित हो गया वह ही इस गहरी समता में स्थित हो सकता है। समता या समत्व को उच्चतम योग भी कहा है। (समत्वंयोग उच्चते- श्रीमद्भगवद्गीता)

स्वभाव ही धर्म

धर्म की परिभाषा करते हुए 'वत्थु सहावो धम्मो' कहा है। जो वस्तु का स्वभाव है वह ही उसका धर्म है। आग का स्वभाव जलना है तो वही आग का धर्म है। पानी का स्वभाव शीतल करना है वही पानी का स्वभाव है। इसी प्रकार जो हमारा स्वभाव है वही हमारा धर्म है। हमारा स्वभाव क्या है? मानव का स्वभाव है मानवीय गुणों को धारण करना व उनका विकास करना। क्या हमारा स्वभाव क्रोध करना, झूठ बोलना, हिंसा करना, चोरी करना है? यदि ये हमारे स्वभाव नहीं हैं तो हम क्यों हिंसा करते हैं, चोरी करते हैं, झूठ बोलते हैं? जो भी इस प्रकार के कार्य करते हैं, वह विभाव है, स्वभाव नहीं है। जब भी हम स्वभाव से विचलित होते हैं, तो धर्म से विचलित होते हैं, धर्म के पालन का सीधा और सरल उपाय है

अपने स्वभाव को पहचान कर उसमें स्थापित होना अथवा विभाव को छोड़ स्वभाव में रमण करना। इसलिए सबसे पहले हम पहचानें कि हमारा स्वभाव क्या है और विभाव क्या है। जैसे ही स्वभाव का भान हो जाए, तो हम स्वभाव में रमण करें और वही हमारी धर्म में स्थापना है। स्वभाव की जानकारी हमें स्वभाव से विचलित नहीं होने देगी। जब तक हम अपने स्वभाव से अपरिचित हैं तब तक ही हम विभाव में रहते हैं। यदि स्वभाव को केवल बुद्धि के स्तर पर जानते हैं तो यह स्वभाव को जानना नहीं हुआ। स्वभाव को सही रूप से जानने का अर्थ है अपनी अनुभूति से जानना। केवल बुद्धि से जानते हैं वह आचरण में नहीं आता क्योंकि हमारे कषाय यथा अहम् (मान), क्रोध, लोभ हमें शीघ्र ही विचलित कर देते हैं। अनुभूति से स्वभाव जानने पर हम आचरण में अडिग बनते हैं और इसके लिए ध्यान की विधा आवश्यक है। यही हमें अध्यात्म की ओर ले जाएगी। अध्यात्म के बिना बाहरी आचरण दिखावा भी हो सकता है और कमजोर भी।

आध्यात्मिकता का अर्थ

अध्यात्म का अर्थ कई प्रकार से किया जाता है। आत्मा में लीन होना, आत्मा से जुड़ना, अंतर्मुखी (introvert) होना, स्व में स्थित होना, अंतर में झांकना आदि अध्यात्म के पर्याय माने जाते हैं। इसके विपरीत भौतिक साधनों या भौतिक जगत की चकाचौंध में लिप्त होना, बहिर्मुखी (extrovert) होना भौतिकता का पर्याय माना जाता है। जिन महापुरुषों ने वास्तविकता की पहचान कर ली है वे प्रतीति कर चुके हैं कि असीम आनंद की सत्ता आत्मा में ही है, न कि भौतिक साधनों में। उनका लक्ष्य होता है साधना द्वारा आत्म-बोध प्राप्त करना। यही संबोधि, स्वबोध, समाधि एवं मुक्ति है। आत्मबोध ही अध्यात्म है और इसकी गहराई में जाने से आभास होता है कि मुक्त जीवन आनंदमय, तनावरहित और सरस होता है। जिसको आत्मबोध हो गया उसका विवेक जग गया, अप्रमत्त हो गया और वह अपने मार्ग का निर्णायक, नियामक और सृजक हो गया। अब उसे किसी उपदेश की आवश्यकता नहीं है। (उद्देशो पासगस्स नत्थि-आचारंग सूत्र)

प्रत्येक प्राणी कभी न समाप्त होने वाली शांति, स्वतंत्रता और आनन्द चाहता है, परन्तु अधिकांश लोग अपने आपको दुःख में पाते हैं और इसका कारण है अकुशल या दूषित चिंतन व चित्त की अनियंत्रित चंचलता। अनियंत्रित चित्त बाह्य भौतिक जगत् में उपलब्ध उपभोग-परिभोग की चीजों के संग्रह व उपभोग में व्यस्त रहता है, चाहना करता है, भविष्य के सुनहरे सपने संजोता है और कभी भूतकाल में, तो कभी भविष्य में रमण करता है। इन्द्रियों के विषय के अनुरूप प्रेरित हो इन्द्रियों को तृप्त करने में लगा रहता है। इसी में सुख की तलाश करता है। इसे ही सुख मानकर इसका दास बन जाता है। इसी उधेड़-बुन में सारा

जीवन बीत जाता है और संजोये सपने पूरे नहीं होने पर या वस्तु से बिछोह होने पर सुख के स्थान पर दुःखी होता है। शाश्वत सुख और आनंद के लिए चितवृत्ति को भौतिक जगत् की चकाचौंध से मोड़कर स्व में स्थित होने व स्वबोध प्राप्त करने के लिए अध्यात्म की ओर मुड़ना होगा।

भौतिक वस्तुओं से विरक्ति अध्यात्म की प्रथम आवश्यकता है। बिना विमुख हुए अध्यात्म की सीढ़ी चढ़ना असंभव है। गृहस्थ को छोड़ श्रमण-जीवन में प्रवेश द्रव्य रूप से भौतिक वस्तुओं के त्याग का प्रथम कदम है। वस्तुओं व भौतिकता का त्याग अन्तरंग से हो, इसके लिए श्रमण जीवन में भी कठिन परिश्रम व साधना की आवश्यकता है, मात्र गृहस्थ जीवन छोड़ने से मुक्ति मार्ग तय नहीं हो जाता। इसीलिए श्रमण की आचार संहिता बहुत शोध व अनुभव के आधार पर बनाई गई है। गृहस्थ को भी सुखी जीवन के लिए भौतिक वस्तुओं के पूर्ण त्याग के स्थान पर उनके संग्रहण पर नियंत्रण एवं उनमें अनासक्ति भाव लाना आवश्यक है। सम्यक्त्व भाव आने पर स्वतः ही अनासक्त भाव का प्रादुर्भाव होता है। सम्यक्त्व भाव के लिए अंतर्मुखी होना अत्यंत आवश्यक है। आचारांग सूत्र में उल्लेख आया है—“जे अज्झथं जाणइ से बहिया जाणइ। जे बहिया जाणइ से अज्झथं जाणइ” जो अपने अन्दर को जानता है वह बाहर की बात को भी अच्छी तरह जानता है और जो बाहर को जानता है वह अन्दर को भी जानता है। अपने अन्दर क्या है उसे जानने पर ही हम सम्यक्त्व के दर्शन कर पाएंगे। बाहर की वस्तुएँ भ्रमित कर सकती हैं। परन्तु अन्दर की जानकारी भ्रमित नहीं करेगी। इसीलिए आध्यात्मिकता ही हमारे दर्शन व ज्ञान का सही आधार है। उस पर आधारित चरित्र व आचरण सम्यक् और सही होगा। अन्दर की बात कैसे जानें? स्वबोध कैसे प्राप्त हो? स्वबोध प्राप्त हो तो ही सम्बोधि प्राप्त हो सकती है। सम्बोधि से ही समाधि अथवा शांति प्राप्त हो सकती है। स्वबोध और समाधि के लिए ध्यान का प्रयोग अत्यन्त आवश्यक है। इसका विस्तृत उल्लेख आचारांग सूत्र में आता है और ध्यान के आधार पर स्वात्मोपलब्धि प्राप्त करने के तरीके बताये हैं। दुःख की बात यह है कि हमने ध्यान की यह विरासत भुला दी और बाह्य तप व आचरण पर जोर देकर चरित्र की नींव कमजोर कर दी। जब श्रावकों का विवेक ही जाग्रत नहीं हुआ, अपनी अन्तरात्मा से साक्षात्कार नहीं हुआ, तो मात्र उपदेशों से ग्रहण किये गए धर्म के द्वारा आचरण की नींव मजबूत कैसे हो सकती है? हमने अपने आप को पहचाना नहीं, इस पर एक छोटी सी कविता प्रस्तुत करता हूँ:-

मैं अपने आपसे कितना दूर हो गया हूँ,
कि अपनी पहचान भूल गया हूँ,

बाहर की सब बातें जानता हूँ,
 इतिहास और भूगोल जानता हूँ,
 विज्ञान और अंतरिक्ष जानता हूँ,
 शास्त्र और वेद जानता हूँ,
 गीता और रामायण जानता हूँ,
 पर खुद के बारे में कुछ नहीं जानता हूँ,
 मैं अपने आप से कितना दूर हो गया हूँ,
 कि अपनी पहचान भूल गया हूँ।

वर्तमान प्रसंग

आज जीवन शैली व पारिवारिक प्रसंगों पर निगाह डालने पर कुछ अच्छी बातें नज़र में आती हैं तो कुछ दुःखप्रद। विगत पचास वर्षों में शिक्षा का प्रसार हुआ है और युवा ही नहीं युवतियाँ ने सभी क्षेत्रों में अच्छी सफलता हासिल की है। डॉक्टर, इंजीनियर, सी.ए., आई.ए.एस. आदि सब क्षेत्रों में अपनी धाक जमाई है। खुशी की बात यह भी है कि अभिभावकों ने लड़कियों की शिक्षा के प्रति पुरानी धारणा को छोड़कर उन्हें पढ़ने व आगे बढ़ने की छूट दी है। अब लड़कियों में आत्मनिर्भर होने से स्वाभिमान जगा है जो अच्छी बात है। यद्यपि मेरे कई साथी मुझसे सहमत नहीं होंगे और वे नहीं चाहते कि लड़कियाँ स्वाभिमानी बनें। वे चाहते हैं कि लड़कियाँ पुराने जमाने की तरह पति पर निर्भर रहें और उनमें प्रतिकार करने की जरा भी हिम्मत न हो। स्वाभिमान सबमें होना चाहिए, परन्तु स्वाभिमान का अर्थ अभिमान या अहम् नहीं है। अभिमान या घमंड एक बुराई है जो पुरुष व स्त्री दोनों में नहीं होनी चाहिए। लेकिन स्वाभिमान सबमें होना चाहिए। माताओं के शिक्षित होने से पूरा घर शिक्षित व संस्कारित हो जाता है। परन्तु स्कूली शिक्षा के साथ धार्मिक शिक्षा का विकास नहीं हुआ और हमारे नवयुवक व युवतियाँ धार्मिक शिक्षा से महरूम रह गए। उन्हें न जीवन की मंजिल का पता है, न अच्छे संस्कारों का। उनकी बस एक मंजिल है कि पैसा कमाओ चाहे कोई भी तरीका काम में लेना पड़े इसकी परवाह नहीं है। तकनीकी जानकारी के साथ मानविक गुणों का प्रादुर्भाव नहीं हुआ, न विकसित करने का मौका मिला। इसका मूल कारण धार्मिक संस्कारों का अभाव है। धार्मिक संस्कार न तो स्कूल और कॉलेज की शिक्षा में मिलते हैं और न ही घरों या धार्मिक स्थानों पर मिलते हैं।

धार्मिक संस्कार न मिलने के लिए माता-पिता का दोष तो है ही, साथ ही यह भी एक कारण है कि हमारी धार्मिक शिक्षा प्रणाली पुरानी ही रही और उसमें समुचित विकास व

संशोधन नहीं हुआ, पुरानी पाटियाँ व थोकड़े रटने के अलावा कोई शिक्षण का नया तरीका इजाद नहीं हुआ। चिंतन, मनन व ध्यान के अभाव में किताबी ज्ञान पर ही जोर रहा जो अनाकर्षक व उबाने वाला है। पढ़ने की सुविधाओं का भी विकास नहीं हुआ। इन पर कोई ध्यान नहीं दिया गया। स्थानक व मंदिर बहुत बने, पर धार्मिक पाठशाला या धार्मिक विश्वविद्यालय नहीं बना। बिखरे-बिखरे प्रयास किये गए, परन्तु संघटित व वैज्ञानिक तरीकों से विकसित पाठ्यक्रम का चलन नहीं हुआ और इसीलिए युवाओं का इसके प्रति आकर्षण नहीं हुआ। हमारे सम्प्रदायों के बिखराव व झगड़ों से भी वे बिदक गए और धर्म से दूर रहना ही अच्छा समझा। धर्म के कर्म-कांडों व परिपाटियों ने भी उन्हें आकर्षित करने की बजाय विमुख कर दिया। नुकसान यह हुआ कि नई पीढ़ी धर्म के अच्छे हिस्से से भी पहचान नहीं कर पाई। श्रावक धर्म क्या है, अणुव्रत क्या हैं, गुणव्रत क्या हैं आदि का कोई ज्ञान नहीं है। नवकार मंत्र भी उन्हें याद हो तो बड़ी बात है। धर्म के संस्कार न मिलने से घरों में विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ रहा है। शाकाहार के स्थान पर मांस, मदिरा, धूम्र-पान, गुटखा आदि का चलन होने लगा है, नशीले पदार्थों जैसे ब्राउन शुगर, अफीम आदि कई पदार्थों का उपयोग होने लगा है, जिनसे युवाओं के जीवन नष्ट हो गए हैं। जब धुरी से गाड़ी हट जाती है तो कहाँ जायेंगे इसका पता नहीं लगता। शादी-ब्याह में, मैं अंतरजातीय विवाह का विरोधी नहीं हूँ, परन्तु अन्य जाति में शादी करने से पूर्व यह तो देखना चाहिए कि उनके संस्कार हमसे मिलते हैं या नहीं। संस्कारों की अनदेखी करने पर शादी खुद खतरे में पड़ जाती है।

आज के व्यस्त जीवन ने एक नई खतरे की घंटी बजाई है। माता-पिता व बच्चों के बीच संवाद ही खत्म हो गया। माता-पिता अपने कार्यों या व्यवसाय में इतने व्यस्त हैं कि उन्हें अपने बच्चों से बात करने की फुरसत नहीं है। बच्चों के पास स्कूल या कॉलेज की व्यस्तता के अतिरिक्त टी.वी., कम्प्यूटर, फोन, आई.टच, वीडियो गेम्स, फेस बुक आदि इतने उपकरण हैं कि उन्हें भी अपने माता-पिता से बात करने की फुरसत नहीं है। बच्चों से संवाद के अभाव में माता-पिता को यह पता नहीं कि बच्चा क्या संस्कार प्राप्त कर रहा है। किस प्रकार की संगत में है और क्या आदतें या व्यसन पनपा रहा है। जब बचपन में माँ-बाप ने अपने बच्चों की परवाह नहीं की तो बुढ़ापे में वे बच्चों से क्या अपेक्षा करते हैं? यदि बच्चे अपने माँ-बाप का खयाल नहीं रखते या वे उनसे बात नहीं करते तो त्रुटि किसकी है? आपने अपने माता-पिता की सेवा की क्या? यदि आपने की तो बच्चे आपका अनुकरण करेंगे। यदि आपने नहीं की, तो उन्होंने आपसे जो सीखा वही वापस देंगे।

जैन की पहचान

जैन की पहचान क्या है? क्या हम निश्चित रूप से जैन की पहचान को प्ररूपित कर सकते हैं? क्या हम कह सकते हैं कि जो जैन है उसकी दुकान या दफ्तर में असत्य का प्रयोग नहीं होगा। सही तोल मिलेगा और कोई मिलावट नहीं होगी? क्या हम कह सकते हैं कि जैन की फैक्ट्री या दफ्तर में किसी प्रकार का शोषण नहीं होगा। कर की चोरी नहीं होगी, तस्करी नहीं होगी? क्या जैन के घर में कभी दहेज की मांग नहीं होगी? क्या जैन के घर में दहेज के लिए बहू को प्रताड़ित, पीड़ित या उसका दाह नहीं किया जायेगा? क्या हम कह सकते हैं कि जैन किसी भी चुराई वस्तु को नहीं खरीदेगा? क्या जैन के यहाँ रखी अमानत (Deposit or entrusted property) की खयानत (Breach of trust or embezzlement) नहीं होगी? क्या हम कह सकते हैं कि जैन है तो रिश्वत नहीं लेगा?

आज आवश्यकता है जैन श्रावक के प्रामाणिक होने की। जैन को केवल भाजी खाने, जमीकंद न खाने, या धोवन पानी पीने से ही नहीं पहचाना जाय। जैन केवल उपवास और मासखमण करने वाला न कहलाये। चींटी की रक्षा करे और अपने बूढ़े माँ-बाप की अवहेलना करे तो क्या जैन कहलाने लायक है? पति और पत्नी में झगड़ा हो और पत्नी के साथ मार-पीट हो तो क्या अहिंसा की दुहाई दे सकते हैं? जैन घरों में मांस और शराब के चलन की छुपी-छुपी खबरें सुनने को मिलती हैं तो शर्म से सिर नीचे हो जाता है। आप कितनी ही सामायिक कर लो, परन्तु भाई-भाई और सास-बहू में झगड़ा और तनाव है। भाई-भाई में संपत्ति को लेकर कोर्ट में मुकदमा चल रहा है तो सामायिक का कोई महत्त्व नहीं है। सामायिक का सही फल तब ही माना जायेगा जब घर-परिवार में शांति हो। घर में शांति होगी तो जीवन सरस होगा, आनंदमय होगा। यह आनंद धर्म से प्राप्त होता है। यदि जीवन में शांति और आनंद नहीं है तो आप कुछ भी करते हों, परन्तु धर्म के मार्ग पर नहीं हो। धर्म की वास्तविक कसौटी ही जीवन में आनंद व शांति है।

बहुत चोट लगती है जब खबर छपती है कि जैन व्यक्ति ने घी में गाय की चर्बी की मिलावट की, हवालाकांड में जैन की डायरी का उल्लेख आया, शेयर बाजार के सबसे बड़े घोटाले में जैन का उल्लेख था। JIATO के सम्मेलन में जब गया और बड़े-बड़े उद्योगपतियों व व्यापारियों के नाम सुनने में आये तो गर्व से सिर ऊँचा हुआ, परन्तु गर्व से सिर और अधिक ऊँचा होता जब सुनने में आता कि हमारे सभी बड़े उद्योगपति व व्यापारी उच्च आदर्श के धनी हैं और उनके आदर्श अनुकरणीय हैं। व्यवसाय जगत में अपनी ईमानदारी और नीति के लिए श्री नारायणमूर्ति की कंपनी इनफोसिस ने विश्व भर में नाम कमाया और सिद्ध किया कि नीति व न्याय से चलने पर व्यवसाय में कमी नहीं आती, बल्कि व्यवसाय

और बढ़ता है। प्रबन्धन (Management) के विशेषज्ञों ने भी इस बात पर जोर दिया है कि सच्चाई और ईमानदारी अंत में स्थायी फल देती है और अपना लक्ष्य निर्धारण इन्हीं सिद्धांतों के आधार पर होना चाहिये और ये सिद्धांत हमारा मार्ग दर्शन इसी प्रकार करें जैसे समुद्री यात्रा में कुतुबनुमा (compass) करता है।

हमारे अहिंसा, सत्य आदि व्रत दिखावे के न हों। श्रीमद् राजचंद्र की तरह प्रामाणिक ही नहीं, करुणावान व्यवसायी हों जो अपने कर्जदार पर रहम खा कर कर्ज की चिट्ठी को फाड़ दें। हमारा आचार व्यावहारिक धरातल पर घर-परिवार व समाज से जुड़ा हो। जो भी आदर्श और व्यवहार में खाई आज दिखाई देती है उसका मूल कारण है व्रतों आदि की बाहरी व्याख्यान से जानकारी, न कि स्व के अनुभव व अध्यात्म से जानकारी। जब हम अपने अध्यात्म में रमण कर अपनी अनुभूति से करुणा से भर उठेंगे तब आदर्श व आचरण में कोई खाई नज़र नहीं आयेगी। तब हम अनुभूति के स्तर पर सब प्राणियों से एकत्व अनुभव करेंगे और किसी के साथ अनुचित व्यवहार नहीं करेंगे। ऐसा होने पर ही हमारे व्यवहार पर जैन की छाप स्पष्ट नज़र आयेगी। सब जैन जिस दिन ऐसा व्यवहार करेंगे तब यदि कोई कहे कि जैन ने कोई अनुचित व्यवहार किया तो हम निडर होकर कह सकेंगे कि ऐसा जैन व्यक्ति कर ही नहीं सकता। यह जैनोचित व्यवहार नहीं है। परन्तु आज हम नहीं कह सकते।

प्राणियों से एकत्व भाव न होने और अपने आपके स्वार्थ में लगे रहने से मुझे अपने पड़ोसी का पता नहीं है। पड़ोसी तो दूर, अपने घर में क्या हो रहा है इसका भी पता नहीं है। हम अपने स्वार्थ में कितने उलझ गए हैं, यह निम्न चार पंक्तियाँ सुनाकर अपना वक्तव्य समाप्त करता हूँ—

तू और मैं, मैं और तू,
कहाँ था इन दोनों में भेद,
पर अब मति बदल गई है,
मैं मैं हूँ और तू तू है,
नहीं है दोनों में मेल।

-सी 1701, लेक प्रिम रोज, लेक होम्स फेज-IV पवर्ड, मुम्बई-400076 (महा.)

परिचर्या-स्तम्भ

संवाद के लिए नया प्रश्न

प्रश्न 2. वर-वधू में परस्पर विश्वास कैसे उत्पन्न हो? उनमें विश्वास टूटने के क्या-क्या कारण हैं? उनका निराकरण किस प्रकार किया जा सकता है?

में ही क्यों? (2)

आचार्य श्री विजयरत्नसुंदरसूरिजी

धर्मनिष्ठ नमन के मन में यह प्रश्न उठता है कि दुःख, अन्याय, अपमान, कष्टों की अधिकता मेरे जीवन में ही क्यों? इस प्रकार धर्म के प्रति आस्था को डगमगाने वाले ये विचार नमन के मन को झकझोर देते हैं, जीवन में अंधकार भर देते हैं। इस अंधकार में प्रकाश की किरण की तरह रहेंगे महाराज के समाधान अक्टूबर-2012 के पश्चात् यह द्वितीय अंश प्रकाशित है।-सम्पादक

महाराज साहब,

आपके दोनों पत्र पढ़े।

बहुत सारी गलतफ़हमियाँ दूर हो गई।

एक बात मैं अच्छी तरह समझ गया कि

मार्ग चाहे मूल्यों की सुरक्षा का हो या

अध्यात्म का हो,

साधना का हो या भक्ति का हो,

समाधि बनाये रखने का हो या

सद्गुणों के प्रादुर्भाव का हो,

समर्पण भाव को जीवंत रखने का हो या

अंतःकरण को सद्भावयुक्त रखने का हो,

उस मार्ग पर कष्ट हैं ही,

संघर्ष हैं ही,

असुविधाएँ और आपत्तियाँ हैं ही,

अपमान और अन्याय हैं ही।

परन्तु, प्रश्न मेरा यह है कि

सीधे रास्ते पर चलने के बावजूद

जीवन में दुःख क्यों आते हैं?

धर्म के मार्ग पर कदम रखने के बावजूद

तकलीफें क्यों आती हैं?

स्पष्ट शब्दों में कहूँ तो
 पाप के मार्ग पर चलने वाले
 मौज-मस्ती करते हैं,
 ऐसा मुझे दिखाई देता है, जबकि
 धर्म के मार्ग पर चलने के बावजूद
 मेरे जीवन में असुविधाएँ ही असुविधाएँ हैं,
 दुःख ही दुःख हैं, तकलीफें ही तकलीफें हैं।
 धर्म से सुख मिलता हो तो मैं दुःखी क्यों हूँ?
 पाप से दुःख आता हो तो
 पापी सुखी क्यों हैं?
 मेरी इस उलझन का समाधान देने की कृपा करें।

नमन,

तुमसे जो अधिक बुरे हैं
 वे तुमसे अधिक सुखी क्यों हैं,
 यह तुम्हारा प्रश्न है ना ?
 तो जवाब दो-

तुमसे जो अधिक अच्छे हैं, अधिक संस्कारी और
 अधिक सज्जन हैं, वे तुमसे अधिक दुःखी क्यों हैं ?
 कितने ही सज्जन आज झुग्गी-झोंपड़ियों में जीवन बिता रहे हैं।
 उत्तम कोटि की धर्माधनाएँ करने वाले कितने ही धर्मी आज
 अनेक असुविधाओं के बीच जीवन व्यतीत कर रहे हैं।
 दो जून के भोजन के भी जिनको लाले हैं, ऐसे
 अच्छे आदमी इस दुनिया में कम नहीं हैं।
 उन सबके लिए तुम्हारा क्या जवाब है ?

“पापी मुझसे अधिक सुखी क्यों ?” यह प्रश्न तुम्हारा है ना ? तो
 “धर्मी तुमसे अधिक दुःखी क्यों ?” यह प्रश्न मेरा है।

महाराज साहब,

आप नहीं मानेंगे, परन्तु
 आपका गत पत्र पढ़कर मैं पूरी रात सो नहीं पाया।
 सच कहूँ तो आज तक ‘मुझसे अधिक पापी,

मुझसे अधिक सुखी क्यों’,

इस प्रश्न पर ही मेरा ध्यान केन्द्रित था, परन्तु

‘तुमसे अधिक धर्मी तुमसे अधिक दुःखी क्यों?’

यह प्रश्न पूछकर आपने मुझे झकझोरकर रख दिया है।

आपकी बात बिल्कुल सही है-

आपकी नज़रों के समक्ष मैं ऐसे कई सज्जनों और

साधुपुरुषों को देख रहा हूँ जो मुझसे स्वभाव के मामले में,

वाणी के मामले में, व्यवहार के मामले में,

और आचरण के मामले में कई गुना अच्छे हैं,

जिनको देखते ही मेरा सिर स्वतः उनके चरणों में झुक जाता है,

जिनकी प्रशंसा करते मेरी जुबान नहीं थकती, और फिर भी

उनके जीवन में अनगिनत कष्ट हैं, असुविधाएँ हैं, तकलीफें हैं।

मुझसे अधिक परेशानियों में वे अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। परंतु,

‘ऐसा क्यों?’

आपके इस प्रश्न का मेरे पास कोई उत्तर नहीं है।

बिल्कुल सच कहूँ तो जीवन में पहली बार मुझे महसूस हो रहा है कि-

“मेरी बुद्धि कुंठित हो गई है, मेरी तर्कशक्ति कमजोर हो गई है।”

आश्चर्य तो मुझे इस बात का हो रहा है कि

जीवन के इतने वर्षों में यह प्रश्न मेरे मन में कभी उठा ही क्यों नहीं?

मुझसे अधिक पापी मुझे अपने से अधिक सुखी दिखाई दिए

और मेरे मन में उनके विषय में प्रश्न यदि पैदा होने लगे तो

मुझसे अधिक धर्मी मुझे अपने से अधिक दुःखी दिखाई देने के

बावजूद उसके कारण जानने की उत्कंठा मेरे मन में पैदा हुई ही क्यों नहीं?

ऐसा तो नहीं होगा ना कि

‘अधिक पापी-अधिक सुखी’, इस बात की आड़ में

मैं धर्म ही छोड़ देना चाहता था?

अपने आपको अधिक सुखी बनाने के लिए

बे-झिझक पाप के मार्ग पर ही दौड़ना चाहता था?

कुछ समझ में नहीं आ रहा।

विनति करता हूँ मैं आपसे कि आपने मेरे समक्ष जो प्रश्न उठाया है

उसका समाधान आप ही दीजिए।

आपकी ओर से प्राप्त होने वाले समाधान से
मेरे प्रश्न का समाधान स्वतः हो जायेगा,
ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है।

नमन,

सुख का सम्बन्ध धर्म के साथ अवश्य है,
परन्तु,

इसका अर्थ यह नहीं है कि तुम

अभी धर्म करो और उसके फलस्वरूप

तुम्हें अभी इसी वक्त सुख मिल जाए।

नहीं। जमीन में आज बोई गई आम की गुठली

जैसे कालान्तर में फल देती है, वैसे ही

आज किया गया धर्म कालान्तर में फलदायक बनता है।

इसी तरह, दुःख का सम्बन्ध पाप के साथ अवश्य है,

परन्तु,

इसका अर्थ यह नहीं है कि

तुम जिस पल पाप करो

उसी पल तुम पर दुःख के पहाड़ टूट पड़ें।

नहीं, जमीन में आज बोया गया नीम जिस प्रकार

कालान्तर में फल देता है,

उसी प्रकार, आज किया गया पाप

कालान्तर में उसका फल देता है।

संक्षेप में,

जीभ पर शक्कर रखते ही

मधुरता का अनुभव होता है, पर

धर्म करते ही सुख मिलने लगे, ऐसा नहीं होता।

आग में हाथ डालते ही हाथ जलने लगता है, पर

पाप करते ही दुःखों का अनुभव होने लगे, ऐसा नहीं होता।

तुम्हारी भाषा में तुम्हें समझाऊँ ?

पेट में बादाम जाते ही तुरन्त उसका खून नहीं बन जाता,

पेट में ज्यादा मात्रा में खमन जाते ही तुरन्त
दस्त नहीं हो जाते, बस इसी तरह,
धर्म करते ही तुरन्त सुख नहीं मिल जाता* और
पाप करते ही तुरन्त दुःख के पहाड़ नहीं टूट पड़ते।
तुम हो तो बुद्धिमान ना ?
तो उपरोक्त समाधान के आधार पर ढूँढ लो
उत्तर मेरे द्वारा तुम्हें पूछे गए प्रश्न का,
किसी के जीवन में
आज धर्म का आचरण प्रचुर मात्रा में
होने के बावजूद यदि दुःख,
असुविधा और परेशानियाँ हैं
तो इसका अर्थ यही है कि
भूतकाल के किसी भव में उसके द्वारा
जाने या अनजाने किए हुए पाप
आज अपना फल दे रहे हैं।
और इसी तरह,
किसी का वर्तमान जीवन पापप्रचुर होने के बावजूद
उसके पास यदि सुख, सुविधा और वैभव संपन्नता
दिखाई दे रही है तो इसका अर्थ यही है कि
भूतकाल के किसी भव में उसके द्वारा किया गया
धर्म आज उसे सुख-सुविधा आदि का
उपहार दे रहा है।
एक प्रश्न तुम अपने मन से पूछोगे ?
धर्म का फल वह जैसे शीघ्र और तुरन्त ही चाहता है,
वैसे ही पाप का फल भी शीघ्र और तुरन्त ही मिल
जाता हो तो उसके लिए वह तैयार है भला ?

(क्रमशः)

*धर्म का फल तत्काल भी मिलता है। क्रोधादि कषायों में कमी आने रूप धर्म का तत्काल फल शान्ति, पवित्रता, सद्भाव आदि की प्राप्ति है।-सम्पादक

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

श्री धर्मचन्द्र जैन

(गमा)

जिज्ञासा- 'गमा' किसे कहते हैं?

समाधान- 'गमा' शब्द संस्कृत की गम् धातु से बना है। जिसका अर्थ है जाना अथवा जानना। अर्थात् वस्तु तत्त्व को जानने का उपाय या तरीका 'गमा' कहलाता है। कोई भी संसारी जीव जब एक गति से दूसरी गति में अथवा एक भव से दूसरे भव में जाता है, तो उसकी कैसी स्थिति होती है, उस जीव में क्या-क्या विशेषताएँ होती हैं, उन्हें जानना भी 'गमा' कहलाता है।

जिज्ञासा- गमा का थोकड़ा कहाँ से लिया गया है?

समाधान- गमा का थोकड़ा पाँचवें अंगशास्त्र भगवती सूत्र के 24 वें शतक के 1 से लेकर 24 उद्देशकों से लिया गया है। अर्थात् एक-एक दण्डक के जीवों का वर्णन एक-एक उद्देशक में होने के कारण कुल 24 उद्देशकों में समस्त संसारी जीवों का वर्णन किया गया है।

जिज्ञासा- गमा के थोकड़े में कितने द्वार बतलाये गये हैं?

समाधान- गमा के थोकड़े में कुल आठ द्वार बतलाये हैं। द्वारों के नाम इस प्रकार हैं- (1) घर-44, (2) जीव के भेद-48, (3) आगति स्थान-321, (4) भव स्थान-16, (5) शुद्ध गमा- 2805, (6) नाणत्ता-1998, (7) गमा-9, (8) लब्धि के बोल-20

जिज्ञासा- 'घर' किसे कहते हैं?

समाधान- जहाँ पर रहकर संसारी जीव अपने शुभाशुभ कर्मों का फल-भोग करते हैं, सुख-दुःख आदि का भोग करते हैं, उस स्थान-विशेष को 'घर' कहते हैं।

जिज्ञासा- 'गमा' के थोकड़े में कितने घर बतलाये हैं?

समाधान- गमा के थोकड़े में घरों का वर्गीकरण मुख्य रूप से दो प्रकार से किया है। पहला-वैक्रिय शरीर को प्राप्त करने वाले जीवों के घर। दूसरा- औदारिक शरीर को प्राप्त करने वाले जीवों के घर।

वैक्रिय शरीर यद्यपि भव प्रत्यय और लब्धिप्रत्यय की अपेक्षा से दो प्रकार का होता है, तथापि यहाँ पर भव प्रत्यय (भव के निमित्त से प्राप्त होने वाला शरीर) की अपेक्षा से वैक्रिय शरीरधारी जीवों के कुल 34 घर इस प्रकार बतलाये हैं-

7 नारकी के जीवों के घर-	7
10 भवनपति के जीवों के घर-	10
26 वाणव्यन्तर के जीवों के घर-	1
10 ज्योतिषी के जीवों के घर-	1
12 देवलोक के जीवों के घर-	12
9 ग्रैवेयक के जीवों के घर-	1
4 अनुत्तर विमान के जीवों के घर-	1
1 सर्वार्थ सिद्ध विमान के जीवों के घर-	1
कुल घरों की संख्या-	<u>34</u>

जिज्ञासा- औदारिक शरीरधारी जीवों के कुल कितने घर बतलाये गये हैं?

समाधान- हम जानते हैं कि औदारिक शरीर तिर्यच व मनुष्य गति के जीवों में ही पाया जाता है। औदारिक शरीर को प्राप्त जीवों के कुल 10 घर इस प्रकार से बतलाये हैं-

5 स्थावर के जीवों के घर-	5
3 विकलेन्द्रिय के जीवों के घर-	3
तिर्यच पंचेन्द्रिय जीवों के घर-	1
मनुष्यों के घर-	1
इस प्रकार कुल	<u>10</u>

जिज्ञासा- 'गमा' के इस थोकड़े में जीव के भेद कितने बतलाये गये हैं?

समाधान- 'गमा' में जीव के कुल 48 भेद बतलाये गये हैं, जो इस प्रकार हैं-
वैक्रिय के 34 घरों के 34 जीव के भेद।
औदारिक के 10 घरों के 14 जीव के भेद।

औदारिक के 10 घरों के 14 भेद इस प्रकार से बनते हैं- 5 स्थावर के 5 जीव, 3 विकलेन्द्रिय के 3 जीव, तिर्यच पंचेन्द्रिय के 1 घर के 3 जीव- (1) संख्यात वर्ष की आयु वाले सत्री तिर्यच, (2) असंख्यात वर्ष की आयु वाले सत्री तिर्यच, (3) असत्री तिर्यच पंचेन्द्रिय।

मनुष्य के 1 घर के 3 जीव- (1) संख्यात वर्ष की आयु वाले सत्री मनुष्य, (2) असंख्यात वर्ष की आयु वाले सत्री मनुष्य, (3) असत्री (सम्मूर्च्छिम) मनुष्य।

जिज्ञासा- घर के भेद और जीव के भेदों को सरलता से याद कैसे रख सकते हैं?

समाधान- घर के जो 44 भेद बतलाये गये हैं, उन्हें याद रखने के लिए ऐसे समझ सकते हैं- 24 दण्डकों में से पहले दण्डक के 7 घर, अन्तिम 24 वें दण्डक के 15 घर तथा बीच के 22 दण्डकों के 22 घर। इस प्रकार कुल 44 घर होते हैं।

जीव के 48 भेदों को सरलता से इस प्रकार याद रख सकते हैं- तिर्यच पंचेन्द्रिय व मनुष्य के एक-एक घरों के तीन-तीन जीव होते हैं तथा बाकी बचे 42 घरों के 42 जीव, इस प्रकार कुल '48' जीव के भेद होते हैं।

जिज्ञासा- घर के भेद और जीव के भेदों में परस्पर क्या-क्या सम्बन्ध घटित हो सकते हैं?

समाधान- घर के भेद और जीव के भेदों की संख्या अलग-अलग होते हुए भी इनमें भवों की गिनती की अपेक्षा से सम्बन्ध घटित होते हैं।

जिन जीवों के घर स्वतन्त्र रूप से बतलाये गये हैं, उन जीवों के भव भी स्वतन्त्र रूप से समझने होंगे। जैसे सात नारकी के जीवों के घर 7 हैं। अर्थात् एक-एक नारकी के जीवों के एक-एक स्वतन्त्र अपने-अपने घर हैं। अतः घरों के आधार पर जीवों में बनने वाले भव भी अलग-अलग हो सकते हैं। उदाहरण के रूप में- सत्री मनुष्य यदि मरकर पहली नरक में जाता है तो सत्री मनुष्य और पहली नरक इन दोनों के मिलाकर कम से कम 2 तथा अधिक से अधिक 8 भव लगातार हो सकते हैं।

दूसरे शब्दों में 2 भव में एक भव सत्री मनुष्य का तथा दूसरा भव पहली नरक का माना जायेगा तथा 8 भवों में 4 भव सत्री मनुष्य के तथा 4 भव पहली नरक के (सत्री मनुष्य, पहली नरक, सत्री मनुष्य, पहली

नरक, सत्री मनुष्य, पहली नरक, सत्री मनुष्य, पहली नरक) इस प्रकार कुल 8 भव लगातार हो सकते हैं। इससे अधिक नहीं। 9वें भव में वह जीव पहली नरक से निकलकर मनुष्य में न जाकर तिर्यच पंचेन्द्रिय के घर में ही जायेगा। (क्रमशः)

-रजिस्ट्रार, अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

अन्तर से स्वीकार करो

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

चरणों को गतिशील करो तुम, सपनों को साकार करो,
जिनवाणी को जीवन में तुम, अन्तर से स्वीकार करो॥

जिनवाणी का सम्बल पाकर, काम सफल हो जाते हैं,
जिनवाणी को धारण करके, पाप कर्म कट जाते हैं।
जिनवाणी तो यह कहती है, सबसे मधुर व्यवहार करो,
जिनवाणी को जीवन में तुम, अन्तर से स्वीकार करो॥1॥

जिनवाणी की महिमा तो, सचमुच अपरम्यार है,
जिनवाणी पर श्रद्धा हो तो, होता बेड़ा पार है।
अपने तन के रग रग में तुम, जिनवाणी संचार करो,
जिनवाणी को जीवन में तुम, अन्तर से स्वीकार करो॥2॥

परम साधना के पथ पर तो, आगे कदम बढ़ाना है,
जीवन के इस नन्दनवन में, त्याग सुमन खिलाना है।
तप त्याग से जीवन का तुम, सुन्दरतम शृंगार करो,
जिनवाणी को जीवन में तुम, अन्तर से स्वीकार करो॥3॥

सम्यक् शौर्य के जगाने से ही, सपने सच्चे होते हैं,
सम-विषम परिस्थितियों में भी, धैर्य नहीं वो खोते हैं।
सद्ग्राहों पर चल करके तुम, जीवन का उद्धार करो,
जिनवाणी को जीवन में तुम, अन्तर से स्वीकार करो॥4॥

-जन्ता साड़ी सेण्टर, स्टेशन रोड़, दुर्ग-491001 (छतीसगढ़)

जैन जीवन-शैली का बालकों में बीजारोपण कैसे हो?*

डॉ. मंजुला बम्ब

बचपन जीवन का एक बहुत ही महत्वपूर्ण अंग है। प्रायः सभी मनोवैज्ञानिकों की यह धारणा है कि व्यक्तिगत और सामाजिक अनुकूलन के लिए जीवन के प्राथमिक कुछ वर्ष सबसे अधिक महत्वपूर्ण होते हैं। पूरे जीवन का ढाँचा शैशवकाल में ही एक रूप ग्रहण कर लेता है। बचपन में ही बालक की प्रवृत्तियों और स्वभाव की नींव पड़ जाती है। बालक के भावी जीवन को बनाने के लिए उसके बचपन पर विशेष ध्यान देना अत्यन्त आवश्यक है। बालक को उसके बचपन में ही बहुत सारी बातें सिखाई जा सकती हैं। परन्तु बड़े होने पर उसमें परिवर्तन लाना बड़ा ही कठिन हो जाता है। उसमें संस्कारों का बीजारोपण कैसे हो? यह चिन्तन अनिवार्य है।

अब प्रश्न उठता है कि बालक से हमारा तात्पर्य क्या है? मनोवैज्ञानिक तथा शिक्षा शास्त्रियों के अनुसार बालकों के विकास का अध्ययन जन्मकाल से किशोरावस्था तक होता है।

बालक का विकास जन्म के पहले गर्भ से ही प्रारंभ हो जाता है। गर्भाधान के तीन-चार मास बाद ही गर्भस्थ शिशु में विशिष्ट विकास का संचार होता है। गर्भ में शिशु विकास की प्रक्रिया निम्न प्रकार से है-

1. प्रथम सप्ताह में कोशिकाओं का बँटवारा होता है।
2. दूसरे सप्ताह में माँ के द्वारा किए भोजन में से जीव पोषण पाने लगता है।
3. तीसरे सप्ताह में जीव की आँखें, रीढ़, मस्तिष्क, स्पाइनल कोर्ड, स्नायु-तंत्र, पेट, लीवर, फेफड़े, गुर्दे आदि की निर्माण-प्रक्रिया शुरु हो जाती है।
4. चौथे सप्ताह में सिर बनने लगता है, हाथ-पाँव बनने लगते हैं।
5. पाँचवें सप्ताह में छाती व पेट विकसित होकर एक दूसरे से पृथक् हो जाते हैं। आँखों पर लेंस व रेटिना आ जाता है। कान बन जाते हैं।
6. छठे व सातवें सप्ताह में शरीर के सब अंग-सिर, चेहरा-मुँह व जीभ बनकर तैयार हो

* आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म. सा. के सान्निध्य में 6-7 अक्टूबर 2012 को जयपुर में आयोजित 'जैन जीवन-शैली' विषयक राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेख।

जाते हैं। मस्तिष्क पूरी तरह विकसित हो जाता है। बच्चे के लिंग का पता लग सकता है। वह अपने हाथ-पैर हिला सकता है।

7. आठवें समाह में बच्चा स्पर्श व दर्द का अनुभव कर सकता है व अंगूठा चूस सकता है।
8. नवें एवं दसवें समाह में बच्चा तैरने की मुद्रा में हिलता है जागने व सोने की क्रिया करने लगता है। उसके दिल की धड़कन अल्ट्रासोनिक स्टैथस्कोप पर सुन सकते हैं।

माता अपनी सन्तान के भविष्य का निर्माण कब से करती है? इस प्रश्न के उत्तर में एक समाजशास्त्री ने कहा है कि जिस दिन से वह गर्भ में आता है, उसी दिन से। गर्भ से ही माता के अच्छे-बुरे विचारों की स्याही से सन्तान के संस्कारों का लेख लिखना प्रारम्भ हो जाता है। माता का विचार, आचार एवं व्यवहार ही संतान की जीवन रेखाओं का निर्माण करते हैं।

बाल-विकास के विज्ञान का अध्ययन अभिभावकों के लिए अत्यन्त उपयोगी है। बाल विकास के अन्तर्गत बालक के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक एवं संवेगात्मक विकास का अध्ययन होता है। यदि इस आधार पर हम बालक को उचित रूप से निर्देशित करते रहें तो निःसंदेह बालक को लाभ होगा। बालक अपने भावी जीवन में कलाकार होगा या वैज्ञानिक, समाज सुधारक होगा या पंचमहाव्रतधारी साधु, यह भी इसके अध्ययन से ज्ञात हो जाता है।

भगवतीसूत्र शतक 1 उद्देशक 7 में गौतम स्वामी पृच्छा करते हैं- “हे भगवन्! गर्भ का जीव देवलोक में जाता है या नहीं?” भगवान ने उत्तर दिया- “हे गौतम! जाता है,” अहो भगवन्! संसारी जीव तो दान देता है, शील पालता है, जिससे देवलोक में जाता है, परन्तु गर्भ का जीव क्या पुण्य करता है, जिससे देवलोक में जाता है? यह प्रश्न पूछने पर भगवान् कहते हैं- “अहो गौतम! कोई सम्यग्दृष्टि जीव माता की कुक्षि में आकर उत्पन्न होता है। माता सामायिक करे, प्रतिक्रमण करे, पौषध करे, दान देवे, शील पाले, तपस्या करे, एकाग्र चित होकर व्याख्यान सुने तब गर्भ का जीव चिन्तन-मनन करे कि मैं भी दान देऊँ, शील पालूँ, शुभ भावना भाऊँ, उदय भाव आवे तो साधु पणा लेऊँ, ऐसा चिन्तन करता हुआ जीव काल करे तो दूसरे देवलोक तक में चला जाता है।”

हमारे जीवन को जन्म देने वाली माता केवल जननी और कोख में धारण करने वाली धारित्री ही नहीं है, वरन् वह तो हमारे जीवन की गुरु और शिक्षिका भी है। अपने बच्चों को बेहतर संस्कार देकर उन्हें बेहतर इंसान बनाना किसी भी देश की सरकार को चलाने से भी अधिक चुनौतीपूर्ण है। चाहे पौराणिक काल की पार्वती हो या त्रेतायुग की कुंती या यशोदा, चाहे राजा महाराजाओं के युग की जीजाबाई या अहिल्याबाई हो अथवा हमारे युग की मदर टेरेसा अथवा जन्म देने वाली माँ हो। अपने द्वारा दी जाने वाली ममता, स्नेह, प्यार,

मोहब्बत, बेहतर संस्कार और बेहतर जीवन के कारण ही वह सदा पूजनीय रहती है। जार्ज वाशिंगटन ने लिखा है कि मैं अपने जीवन में झूठ इसलिए नहीं बोल पाया, क्योंकि बचपन में एक बार झूठ बोलने पर माँ ने यह कहते हुए झन्नाटेदार चांटा मारा था कि मैं झूठे बेटे की माँ कहलवाने की बजाय बाँझ कहलवाना ज्यादा पसंद करूँगी। माँ, माँ ही नहीं संस्कारों को देने वाली गुरु भी है।

आज के संस्कारहीन भौतिकयुग में माता ही अपने प्रयत्नों से सन्तानों का उचित मार्गदर्शन कर, धार्मिक संस्कृति के अनुरूप योग्य संस्कारों के द्वारा उनका जीवन अमृत तुल्य बना सकती है। जिस माँ की आँखों में विनय, विवेक और कोमलता झलकती है, प्रेम बरसता है, विनम्रता और आज्ञापालन जिसके जीवन का पाठ है, जिसकी जिह्वा पर अमृत का वास है, वह अपनी सन्तान के मानस पर प्रभावी संस्कार डालती है। सत्संगति और सदाचरणों की प्रतिबिम्ब स्वरूप माता जैन जीवनशैली का बालकों में बीजारोपण करती है।

बालकों में अनुकरण की प्रवृत्ति अधिक पायी जाती है। सीखने की प्रक्रिया अनुकरण द्वारा सम्भव हो सकती है। अनुकरण द्वारा काम को जल्दी सीखा जा सकता है। बालक के जीवन में अनुकरण का अत्यन्त महत्त्व है।

सीखने के सिद्धान्त को व्यवस्थित रूप से तीन मुख्य नियमों की सहायता से समझा जा सकता है। ये नियम बालकों के जीवन निर्माण में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं, उपयोगी हैं—

1. तत्परता का नियम:— जब व्यक्ति किसी कार्य को करने के लिए तैयार रहता है तो जल्दी सीख लेता है। बाध्य करने पर जल्दी नहीं सीख पाता है। अतः बालक को कुछ भी सिखाने से पहले उसे मानसिक तथा बौद्धिक रूप से तैयार करना चाहिए। शिक्षक बालकों में प्रश्न, पहेलियों आदि शिक्षण की नवीन विधियों द्वारा विषय जानने के प्रति तत्परता का विकास कर सकते हैं। जैसे— हमें अहिंसा, सत्य, अचौर्य, अपरिग्रह, सामायिक आदि सिखाने हैं तो हम चित्रों व कहानियों के माध्यम से उनमें रुचि पैदाकर उनको सिखाने के लिए तैयार कर सकते हैं। उनको दैनिक जीवन में उपभोग-परिभोग की वस्तुओं की जानकारी देकर उनको अपरिग्रही बनने तथा त्यागमय जीवन जीने के संस्कार दिए जा सकते हैं। उदाहरण स्वरूप— जयपुर में चल रही रविवारीय पाठशाला में धोवन पानी, जमीकंद और पानी छानकर पीना के बारे में बताया गया। बालक का हृदय कोमल होता है। एक बालक इसकी जानकारी मात्र से वह इतना प्रभावित हुआ कि घर पर पहुँचने पर अपनी मम्मी से पूछता है कि “मम्मी आपने पानी छाना कि नहीं? मैं बिना छाना पानी नहीं पीऊँगा और आज से ही मैं आलू-प्याज नहीं खाऊँगा।” बालक की इस भावना से बालक की माता ने पाठशाला में शिक्षक को अवगत कराया।

2. **अभ्यास का नियम:**— किसी क्रिया को बार-बार करने से वह दृढ़ हो जाती है। बार-बार अभ्यास करने से मांसपेशियों तथा मस्तिष्क के नाड़ी तन्तुओं में उस क्रिया को करने की आदत पड़ जाती है। बालकों के शिक्षण में इस नियम की सार्थकता भली-भांति देखी जा सकती है। पढ़ना, लिखना, चित्रांकन, गणित, खेलना, साइकिल चलाना आदि क्रियाओं में अभ्यास का बहुत बड़ा हाथ रहता है। अभ्यास के द्वारा किसी कार्य में निपुणता आती है तथा भविष्य में वही कार्य करने में सरलता आ जाती है।

3. **परिणाम का नियम:**— सीखने से सफलता मिलती है या असफलता, इसका सीखने पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। बालक वही कार्य करना चाहता है जिसमें उसकी रुचि होती है और उसे सुख मिलता है। ईनाम पाने पर उस क्रिया को दोहराना चाहता है, वहीं असफलता प्राप्त करने पर उस क्रिया को दोबारा नहीं करना चाहता। प्रशंसा, ईनाम, शाबासी आदि का सीखने पर काफी प्रभाव पड़ता है। बालकों की शिक्षा में इस नियम का व्यापक प्रयोग देखा जा सकता है। जिस काम को करने में बालक को माता-पिता तथा अध्यापक द्वारा प्रशंसा मिलती है उसे जल्दी करना सीख लेता है, डांट पड़ने पर जल्दी नहीं सीख पाता।

बचपन में दादी-नानी द्वारा सुनाई जाने वाली नैतिक-धार्मिक कहानियों से लेकर सामायिक, व्रत, नियम, ध्यान आदि दैनिक जीवन में संस्कार के आधार बनते हैं। बचपन में सुनी कहानी कथा से मिलने वाली व्यवहार सम्बन्धी नैतिक शिक्षा सुसंस्कार का सबसे बड़ा आधार है। आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्य श्री आनन्दऋषि जी म.सा. आदि महापुरुषों के प्रेरणादायी जीवन का निर्माण गर्भ व बचपन में मिले सुसंस्कारों से ही हुआ था। आगमों में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं— विजयराजा और श्रीदेवी दोनों धर्मनिष्ठ थे। उसका असर अतिमुक्त कुमार पर भी पड़ा। लगभग नौ वर्ष की उम्र में गौतम स्वामी ने भगवान की वाणी सुनी एवं वैराग्य जागृत हुआ। माता-पिता की आज्ञा लेकर दीक्षा ली और उसी भव में मुक्ति प्राप्त कर ली।

मनोविज्ञान बताता है कि बालमन में अनेक सूक्ष्म ग्रन्थियाँ होती हैं। छोटी-छोटी घटनाओं का उन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। जिस प्रकार के संस्कार उनके मन पर पड़ते हैं वे ही भविष्य में प्रबल होकर स्वभाव का रूप धारण कर लेते हैं।

घर, पाठशाला और समाज, बच्चे के बनने बिगड़ने के ये तीन स्थान हैं। जिस घर में हर समय लड़ाई-झगड़ा, गाली-गलौच, राग-द्वेष लगे रहते हैं; जहाँ धूम्रपान, शराब, अभक्ष्य भोजन, अस्त-व्यस्तता, अनुशासनहीनता, चरित्रहीनता, असत्य भाषण, हिंसा, उदंडता का तांडव हो उस घर के बच्चों में शील, क्षमा, समता, सेवा, सहकार के संस्कार कहाँ से आयेंगे। बच्चों के ऊपर माता-पिता एवं घर के अन्य छोटे-बड़े लोगों के आचरणों का

प्रभाव पड़ता है। क्योंकि सांचा जिस प्रकार का होता है उसमें ईंटों का आकार भी उसी प्रकार का बनता है। अपनी भावी पीढ़ी को सच्चरित्र, सुखी एवं सम्पन्न बनाने के लिए पहले स्वयं को सच्चरित्र, सुसंस्कृत एवं सुसम्भ्य बनना होगा। यह तभी संभव है जब घर का प्रत्येक सदस्य धर्मप्रेमी हों। घर में सत्संग, सद्ग्रंथों का स्वाध्याय एवं धार्मिक क्रियाकलाप होते रहते हों। घर के वातावरण की पवित्रता, माता-पिता का सदाचार और परिवार के उत्तम व्यवहार से बालक-बालिकाओं के चरित्र का विकास अच्छी दिशा में होगा, उनमें जैनजीवन कला जीने का बीजारोपण होगा। वे सुसंस्कारी बनेंगे।

जैसे बच्चों को स्कूल भेजने का ध्यान रखते हैं वैसे ही धार्मिक पाठशाला में भेजने का ध्यान रखें तो संस्कारी होने में देर नहीं लगेगी।

बच्चों में आध्यात्मिक वातावरण बना रहे, इसके लिए अभिभावक निम्नलिखित बातों का ध्यान रखें, तो बालक-बालिकाओं का जीवन सरल शांतिमय बन सकता है-

1. बच्चों को धार्मिक पाठशाला एवं धार्मिक शिक्षण शिविरों में भेजना चाहिए।
2. घर के सभी सदस्यों के साथ प्रतिदिन सामूहिक प्रार्थना एवं यथासमय आध्यात्मिक चर्चाओं का आयोजन हो।
3. बालकों को समय-समय पर पूज्य संत-सतियों का सान्निध्य मिलता रहे, ऐसा प्रयास होना चाहिए।
4. उन्हें अपने साथ सामायिक, प्रतिक्रमण, संतदर्शन और जिनवाणी-श्रवण करने के लिए ले जाना चाहिए।
5. उन्हें व्रत-नियम का महत्त्व समझाएँ।
6. यह भी प्रयत्न करें कि बालकों को समय-समय पर विद्वानों, महापुरुषों का सान्निध्य प्राप्त होता रहे ताकि उनके आदर्श व प्रेरणादायक जीवन से वे शिक्षा ले सकें।
7. घरों में गंदा, कामुक और अश्लील साहित्य नहीं आने दें। उनके स्थान पर सत्साहित्य का संग्रह करें। स्वयं अच्छे साहित्य का पठन-पाठन, स्वाध्याय करें और बच्चों को भी वैसी प्रेरणा दें।
8. घरों में सिने अभिनेत्रियों के अश्लील चित्र नहीं टांगें, उनके स्थान पर आदर्श पुरुषों या प्रकृति पर्यावरण के सुन्दर चित्र टांग सकते हैं, या दीवारों पर जीवन निर्माणकारी आदर्श वाक्य लिखाये जा सकते हैं।
9. घर में पारिवारिक जीवन में परस्पर सहयोग एवं अपनत्व की भावना का विकास करें। बच्चों में पारस्परिक घृणा और विद्वेष के बीज न बोयें।
10. स्वावलम्बी सदा स्वस्थ और सुखी रहता है। इसलिए बच्चों को स्वावलम्बी बनने की

प्रेरणा देनी चाहिए।

11. माता-पिता स्वयं का जीवन व्यसन रहित बनायें। वे स्वयं मादक द्रव्यों एवं मद्य-मांस आदि का सेवन न करें ताकि बच्चों में गलत संस्कार नहीं पनपें।
12. बच्चों के प्रति सम्मान सूचक शब्दों का व्यवहार करें, उन्हें स्नेह एवं अपनत्व दें। उनके प्रति अपेक्षावृत्ति नहीं रखें। साथ ही बच्चों को माता-पिता का अधिकाधिक सान्निध्य प्राप्त हो इसका ध्यान रखा जाए। बच्चों को आत्मीयता का वातावरण दें।
13. अभिभावक ऐसे होटलों एवं क्लबों में न जाएँ जहाँ भद्दे, कामुक प्रदर्शनों, सामिष व्यंजनों एवं मादक द्रव्यों का प्रचलन हो।
14. बच्चों के खाने-पीने पर ध्यान देना चाहिए। बच्चों को संतुलित व स्वास्थ्यवर्द्धक आहार कराएँ तथा माता-पिता स्वयं भी वैसा आहार करें।
15. बच्चों को क्रोध से बचाने का सबसे बड़ा उपाय है कि उसके क्रोध करने के कारणों को ढूँढ़ा जाए और उसे मारने व डांटने के बजाए प्रेमपूर्वक समझाएँ, उसे अच्छे-बुरे का ज्ञान कराया जाये। बालक के व्यवहार को समझने की कोशिश की जाए।
16. आवेशों पर नियंत्रण का अभ्यास, एकाग्रता बढ़ाने का अभ्यास और संकल्प शक्ति का विकास- ये तीन बातें अभिभावक अपने बच्चे को सिखा दें तो उसका जीवन सरस बन जायेगा।
17. बच्चों की श्रम में आस्था होनी चाहिए। जहाँ नेहरू जी ने आराम हराम का नारा दिया था वहाँ आज की पीढ़ी सर्वत्र आराम में ही राम ढूँढ़ रही है। अतः माता-पिता का कर्तव्य है कि बच्चों को ऐसे महापुरुषों की जीवनियाँ पढ़ने को दें, जिनका जीवन स्वावलम्बन का श्रेष्ठ उदाहरण रहा है।
18. बच्चों के सामने माता-पिता एवं परिवारजन वचन-व्यवहार का विवेक रखें। बच्चों की उपस्थिति में माता-पिता आपस में झगड़ें नहीं, क्योंकि गृह कलह का बहुत बुरा असर बच्चों के कोमल मस्तिष्क पर पड़ता है।
19. आज की भावी पीढ़ी जल्दी सोना, जल्दी उठना, माता-पिता के चरण स्पर्श करना आदि सभी भूलती जा रही है। जबकि आजकल बच्चों में बुरे संस्कार पनप रहे हैं। देर से उठो, चाय पानी पीओ। अखबार को सामने रखकर घंटे भर बैठ जाओ। कुछ देर बाद नाश्ता पानी करो और टी.वी. के सामने बैठ जाओ। दोस्तों के साथ घूमो-फिरो, देर रात्रि तक घर लौटो। खाद्य-अखाद्य का ध्यान रखे बिना सुबह का भोजन रात को 11 बजे खाओ। टी.वी. पर पिक्चर देखते-देखते सो जाओ। बच्चों की ऐसी प्रवृत्तियों से हानि ही होने वाली है, अतः माता-पिता का कर्तव्य है कि वे उनकी दिनचर्या पर

ध्यान रखें। समय का सदुपयोग हो, ऐसे कार्यों की प्रेरणा करें। उन्हें सुसंस्कारी बालकों के साथ ही आने-जाने दें।

20. बच्चों को व्यावहारिक ही नहीं नैतिक शिक्षण अवश्य दें। स्कूलों में संस्कार पक्ष गौण होता है और बौद्धिक विकास प्रमुख होता है। आजकल कान्वेंट्स और पब्लिक स्कूल आधुनिक कहलाने वाले अभिभावकों के लिए आकर्षण के केन्द्र बनते जा रहे हैं। वे मानते हैं कि ऐसे स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चे आधुनिक रूप से विकसित होते हैं। समाज में जीने के तौर-तरीके बहुत अच्छे ढंग से सीखते हैं, किन्तु आधुनिक जीवन ही सच्चा जीवन नहीं है। सच्चा जीवन जीने के लिए तो सत्संस्कारों एवं आध्यात्मिकता की जरूरत है। बच्चों को बौद्धिक विकास के साथ-साथ आध्यात्मिक और भावनात्मक विकास का वातावरण निरन्तर मिलता रहे तब ही उनका समग्र विकास हो सकता है। वे अपनी संस्कृति परम्परा को समझकर अनुशासन, विनय, धैर्य, सच्चाई, सेवाभावना आदि अनेक सदगुणों से ओतप्रोत आदर्श जीवन जी सकते हैं।

बालकों में संस्कारों का ज्ञान एवं प्रेरणा ही काफी नहीं है। संस्कारों को दृढ़ बनाने हेतु अभ्यास परम आवश्यक है। बच्चों को संस्कारों के बारे में इतना अभ्यास कराया जाये कि वे बच्चों की आदत बन जायें। इसके लिए प्रतिदिन संस्कारों की पुनःपुनः आवृत्ति कराना होगा।

बच्चों में सुसंस्कार दृढ़ बन सकें इसके लिए बुराइयों के बारे में बच्चों को अच्छी तरह समझाया जाय। जैसे अंडा शाकाहारी नहीं है इसे तर्कपूर्वक समझाना होगा। जूठा छोड़ना, झूठ बोलना, चोरी करना, मैथुन सेवन आदि कितने हानिकारक हैं, यह बताना होगा। तभी बच्चे त्याग करने हेतु तैयार होंगे।

बालक का निर्माण परिवार का निर्माण है, समाज का निर्माण है, राष्ट्र का निर्माण है अतः माता-पिता का दायित्व है कि वे बच्चों के प्रति लापरवाही न बरतें, बल्कि उन्हें संस्कारी बनाकर अपने कर्तव्य का पालन करें। यदि बच्चों के अच्छे व आदर्श व्यक्तित्व का निर्माण करना है तो पहले स्वयं हमें उदाहरण पेश करना होगा। हम बच्चों के साथ वैसा ही व्यवहार करें जैसी हम उनसे आशा रखते हैं। हम स्वयं बच्चों को समय दें। उनकी बातें धैर्यपूर्वक सुनें और उन्हें प्रेमपूर्वक समझाएँ।

बालकों के जीवन को पवित्र और मंगलमय बनाने के लिए उनमें शुभ संस्कारों के बीज डालकर उन्हें पल्लवित और उसे पुष्पित करना होगा। जैन जीवन शैली के मुख्य बिन्दुओं में ज्ञान, अहिंसा, सत्य, अचौर्य, अपरिग्रह, सामायिक, प्रतिक्रमण और तत्त्वों की जानकारी देकर उनका आदर्शमय जीवन बनाया जा सकता है। पर आवश्यकता है आज के इस

भौतिक चकाचौंधमय वातावरण में माता-पिता स्वयं जीवन जीने की कला सीखें एवं उससे बच्चों का जीवन सुरभित बनावें।

संस्कारों के फूल बालकों की जीवन डाली पर महके, मुस्कराये और कुसंस्कारों के काँटे उन्हें छू भी न पायें। इसके लिए माता-पिता को सुसंस्कारित बनना होगा। अपनी कथनी और करनी के अन्तर को मिटाते हुए धर्म के समग्र एवं व्यापक रूप को जीवन में उतारना होगा। तभी बालकों में शुद्ध जैन जीवन का बीजारोपण कर उनके जीवन में दया, करुणा, समता, क्षमा, सत्य, विनय, विचार-आचार और विवेक रूपी विविध फूलों की सुगन्ध से स्वयं के जीवन के साथ-साथ परिवार, समाज और देश का वातावरण महक उठेगा।

-326, उदय मार्ग, लेन नं.-7, तिलक नगर, जयपुर-302004 (राज.)

उपाध्यायप्रवर के 79 वें जन्म-दिवस पर

मान गुरु को करें हम नमन

श्री धर्मचन्द्र जैन

(तर्ज:- बहुत याद आती है.....।)

‘मान’ गुरु को करें हम नमन।-2

ज्ञानी ध्यानी गुरुवर का, किया है चयन॥

मान गुरु को करें हम नमन....॥

छोटा माँ की जिसने कूँख दीपाई,

अचल पितु की, शान बढ़ाई,

सेठिया कुल को-2, किया है चमन॥ मान गुरु को...॥1॥

गजेन्द्र गुरु का, सान्निध्य पाया,

जोधणा नगरी में, संयम ठाया,

लक्ष्मीचन्द्र जी से-2, किया है पठन॥मान गुरु को...॥2॥

सहज, सरल, संयम में, सजगता,

अमृत वचनों का, झरना झरता,

विषय विकारों का, किया है शमन॥ मान गुरु को....॥3॥

मद विसराया, विनय बढ़ाया,

कर-कर सेवा, ज्ञान विकसाया,

‘धर्म’ आराधना से, सुरभित है मन॥ मान गुरु को....॥4॥

-रजिस्ट्रार, अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राज.)

स्वाध्याय : छब्बीस नारे

डॉ. दिलीप धींग

- | | |
|--------------------------------|------------------------------------|
| (1) | (10) |
| दिनचर्या का इक अध्याय। | मन तेजस्वी, बुद्धि निर्मल। |
| घड़ी दो घड़ी हो स्वाध्याय। | स्वाध्याय के सुमधुर फल। |
| (2) | (11) |
| शास्त्र-रक्षा का श्रेष्ठ उपाय। | जहाँ स्वाध्याय का दीया जलता। |
| घर-घर में हो नित स्वाध्याय। | वहाँ रोशनी ज्ञान सफलता। |
| (3) | (12) |
| सीमित करो टीवी अखबार। | स्वाध्याय का तप जो करता। |
| स्वाध्याय का करो प्रचार। | ज्ञानामृत का घट वह भरता। |
| (4) | (13) |
| सबसे प्यारा, सबसे न्यारा। | सब स्वाध्याय करें करवाएँ। |
| स्वाध्याय है मित्र हमारा। | स्व-पर के संताप मिटाएँ। |
| (5) | (14) |
| सन्तों, विद्वानों की राय। | स्वाध्याय जीवन का शुभ गान है। |
| सच्चा साथी है स्वाध्याय। | ज्ञान और ज्ञानी का सम्मान है। |
| (6) | (15) |
| साधना का श्रेष्ठ उपाय। | स्वाध्याय शास्त्रों का अमृतपान है। |
| सामायिक संग हो स्वाध्याय। | अल्पज्ञ भी बन जाते विद्वान हैं। |
| (7) | (16) |
| आत्म-गुणों की होती आय। | सन्मति-पथ का राही हूँ मैं। |
| जय-जय सामायिक-स्वाध्याय। | गौरव कि स्वाध्यायी हूँ मैं। |
| (8) | (17) |
| स्वाध्याय के साथ विनय हो। | कौन है अपना, कौन पराया ? |
| मैत्री से परिपूर्ण हृदय हो। | ज्ञानी ने सबको अपनाया। |
| (9) | (18) |
| दिन का सूरज, रात का चन्द्रमा। | स्वाध्याय से कष्ट टलेंगे। |
| स्वाध्याय की अद्भुत महिमा। | सद्विचार के फूल खिलेंगे। |

(19)

स्वाध्याय की सर्चलाइट लें।
अंधियारी राहों पर चलें।

(20)

महक प्रेम की, ज्ञान उजाला।
ऐसा है स्वाध्याय निराला।

(21)

स्वाध्याय-पथ है आत्म-जय का।
सर्वोत्तम उपयोग समय का।

(22)

ग्रहण-क्षमता, धारण-क्षमता।
स्वाध्याय से बढ़ती समता।

(23)

कषायों का जंगल, प्रपंच का दंगल।
स्वाध्याय से चहुँ ओर होता मंगल।

(24)

स्वाध्याय के रसिक दीवानों!
खुद को देखो, खुद को जानो।

(25)

ज्ञानार्जन और आत्म-जागरण।
स्वाध्याय से श्रेष्ठ आचरण।

(26)

स्वाध्याय से जागे ज्योति।
विपुल कर्म-निर्जरा होती।

-सीईओ, ए.टी.फाउंडेशन, उमराव सदन, 53, डोरे नगर, उदयपुर-313002(राज.)

पाप से करें किनारा, धर्म का लें सहारा

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

आज आपका भी कर्तव्य है- आप संकल्प करें कि किसी का बुरा नहीं करते हुए दूसरों का जितना हो सके, भला करना। स्व-पर कल्याण आत्मार्थीपन है। कहना होगा आज का दिन जीव-दया का दिन है। व्रत लेना खुद की दया है और खुद की दया दूसरों को प्रिय है। दया ग्रहण करने वाले खुद पाप से बचते हैं। शील पालने वाले खुद प्रतिष्ठित होते हैं, दूसरों को प्रेरित करते हैं।

आज का दिन उपकार का दिन है। आज का दिन दया का दिन है। आज के दिन को जो भी महत्त्व देते हैं वे कम-से-कम इतना संकल्प जरूर करें कि मुझसे जितना हो सकेगा, मैं जीवन में दूसरों का भला करूँगा। मैं पापियों को पाप से हटाकर उन्हें धर्म-मार्ग में लगाने का प्रयास करूँगा। दुःखियों को देखकर, उनके दुःखों को जानकर मैं उनके दुःख दूर करने का, कष्ट कम करने का, पीड़ा मिटाने का और जहाँ तक बन सकेगा उनकी भलाई का काम करूँगा।

मैं जौहरियों की नगरी में जौहरियों के बीच बोल रहा हूँ। आप सुनकर ही नहीं रहें जितना बन सके उपकार करें, भलाई करें और दुःखियों का दुःख मिटाने का लक्ष्य रखें तभी आप आत्मोत्थान में आगे बढ़ सकेंगे।

संवाद

गत माह 'परिचर्चा' स्तम्भ में जो प्रश्न पूछा गया था उसके उत्तर अनेक प्रबुद्ध चिन्तकों ने प्रेषित किए हैं, जिनमें से एक उत्तर यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है।

प्रश्न 1. विवाह-सम्बन्ध के लिए क्या जन्म-पत्रियों का मिलान आवश्यक है? क्या मात्र नामों के आधार पर राशि का मिलान करने से विवाह सम्बन्ध हो सकता है? दो पण्डितों के अलग-अलग मत होने पर आपके निर्णय का आधार क्या रहेगा? क्या जन्म-पत्रियों के मिलान से किए गए सभी विवाह सफल होते हैं?

उत्तर- भगवान महावीर ने हमको अनेकान्त का ऐसा सूत्र दिया है जिससे हम जन्मपत्रियों का मिलान बालक-बालिकाओं की उम्र को दृष्टिगत रखते हुए आवश्यक मान सकते हैं और यौवन की उम्र के पश्चात् कतई आवश्यक नहीं मान सकते। घर में जब बच्चा या बच्ची का जन्म होता है तो बुद्धिमान माता-पिता का ध्यान उसके भावी जीवन की संतुष्टि से जुड़ जाना चाहिये। मारवाड़ी में कहावत है कि पूत के पग पालने में ही दिशा निर्देश देने लग जाते हैं। अतः माता-पिता को यह जानना चाहिये कि बच्चे की रुचि राग में है या विराग में। अगर बच्चे की दृष्टि रागपूर्ण लगने लगे तो कन्या की उम्र 18 वर्ष को पार करे उससे पूर्व तक एवं बालक की उम्र 21 वर्ष को पार करे उससे पूर्व तक अगर माता-पिता जन्म पत्रियों का मिलान आवश्यक समझें तो कर लें, किन्तु उसके बाद उनको यह सिलसिला समाप्त कर अन्य चारित्रिक या संस्कार सम्बन्धी जानकारियों के आधार पर यह निर्णय ले लेना चाहिए। इसमें समय बरबाद नहीं करना चाहिये।

मात्र नामों के आधार पर राशि का मिलान करने से विवाह सम्बन्ध हो सकता है, अगर वर पक्ष एवं वधू पक्ष दोनों इस हेतु सहमत हों।

दो पंडितों के अलग-अलग मत होने पर, बालक-बालिका के परिवार की चारित्रिक एवं संस्कारों की पृष्ठ भूमि में निर्णय लिया जाना हितकर रहेगा।

जन्म-पत्रियों के मिलान से किये गये सभी विवाह सफल होना आवश्यक नहीं है, क्योंकि कर्मगति विचित्र होती है, अतः विवाह का सफल या असफल होना भी बालक-बालिकाओं के कृत कर्मों के फलादेश पर निर्भर करेगा।

स्वास्थ्यवर्धक जैन जीवन शैली

डॉ. चंचलमल चोरडिया

जीवन जीना भी एक कला है। हमारे जीवन का उद्देश्य क्या हो और इसको प्राप्त करने हेतु हमारी प्राथमिकताएँ क्या हों? जैन धर्म की कुछ मौलिक विशेषताएँ हैं, जिनका ईमानदारीपूर्वक पालन करने से मानव स्वस्थ जीवन जीते हुए अपने परम लक्ष्य में आगे बढ़ सकता है। नर से नारायण और आत्मा से परमात्मा बन सकता है।

जैन दर्शन के अनुसार मानव का जीव जब गर्भ में आता है तो उसे अपने कर्मों के अनुसार आहार, शरीर, इन्द्रिय, श्वासोच्छ्वास, भाषा और मन रूपी छः मूल ऊर्जा के स्रोत अर्थात् पर्याप्तियाँ (Bio potential energy source) प्राप्त होते हैं। प्रत्येक प्राणी अपने गुणों के अनुसार पुद्गलों को आकर्षित कर मानव शरीर का निर्माण एवं विकास करता है। जिन्हें ये शक्तियाँ पूर्ण रूप से प्राप्त होती हैं, उनका संतुलित विकास होता है तथा जिन्हें ये पर्याप्तियाँ आंशिक रूप में प्राप्त होती हैं उनके शरीर का विकास पूर्ण नहीं होता।

ये पर्याप्तियाँ कार्य के अनुसार मुख्य रूप से दस भागों में स्थान्तरित हो मानव की समस्त गतिविधियों का संचालन करती हैं, जिन्हें प्राण भी कहते हैं। प्रत्येक प्राण अपने आसपास के वातावरण से पुद्गलों को ग्रहण कर अपना-अपना कार्य करते हैं।

श्रोत्रेन्द्रिय बल प्राण— जिससे सुनने योग्य पुद्गलों को आकर्षित करने की शक्ति प्राप्त होती है।

चक्षु इन्द्रिय बल प्राण— जिससे देखने योग्य पुद्गलों को आकर्षित करने की शक्ति प्राप्त होती है।

घ्राणेन्द्रिय बल प्राण— जिससे गंध योग्य पुद्गलों को आकर्षित करने की शक्ति प्राप्त होती है।

रसनेन्द्रिय बल प्राण— जिससे स्वाद योग्य पुद्गलों को आकर्षित करने की शक्ति प्राप्त होती है।

स्पर्शनेन्द्रिय बल प्राण— जिससे स्पर्श योग्य पुद्गलों को आकर्षित करने की शक्ति प्राप्त होती है।

श्वासोच्छ्वास बल प्राण— जिससे श्वसन योग्य पुद्गलों को आकर्षित करने की शक्ति प्राप्त होती है।

मन बल प्राण— जिससे मनोवर्गणा के योग्य पुद्गलों को आकर्षित करने की शक्ति प्राप्त होती है।

* आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म. सा. के सान्निध्य में 6-7 अक्टूबर 2012 को जयपुर में आयोजित 'जैन जीवन-शैली' विषयक राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेख।

वचन बल प्राण— जिससे भाषावर्गणा के योग्य पुद्गलों को आकर्षित करने की शक्ति प्राप्त होती है।

काय बल प्राण— जिससे हल्लन-चलन योग्य पुद्गलों को आकर्षित करने की शक्ति प्राप्त होती है।

आयुष्य बल प्राण— जिसके कारण जीव निश्चित अवधि तक किसी योनि में रह सकता है।

सारी प्राण शक्तियाँ आपसी सहयोग और समन्वय से कार्य करती हैं, परन्तु एक दूसरे का कार्य नहीं कर सकती। आँख सुन नहीं सकती, कान बोल नहीं सकता, नाक देख नहीं सकती आदि। सबमें आयुष्यबल प्राण मुख्य होता है तथा उसके समाप्त होते ही अन्य प्राण स्वतः प्रभावहीन हो जाते हैं। आयुष्यबल प्राण का प्रमुख सहयोगी श्वासोच्छ्वास बल प्राण होता है।

प्राण ऊर्जा का जितना सूक्ष्म तर्कसंगत विश्लेषण जैन दर्शन में उपलब्ध है उतना आधुनिक चिकित्सा पद्धति में भी नहीं मिलता। परिणामस्वरूप उन्हें आँख, कान, नाक आदि जड़ उपकरणों की खराबियों को दूर करने में तो आंशिक सफलता मिली, परन्तु जिनमें प्राण ऊर्जा का मौलिक प्रवाह ही न हो, उनको सुधार पाने में अभी तक सफलता नहीं मिली। इसी कारण आज का विकसित विज्ञान रक्त, अस्थि, मांसपेशियाँ आदि का निर्माण करने में अपने आपको असमर्थ पा रहा है।

जैन जीवन शैली का मूलाधार संयम

स्वास्थ्य की दृष्टि से प्राण और पर्याप्तियों का बहुत महत्त्व होता है। इनका सदुपयोग और संयम ही स्वास्थ्य का मूलाधार होता है और दुरुपयोग एवं असंयम रोगों का कारण।

आहार का संयम:— जीवन चलाने के लिये जितना आवश्यक हो, भक्ष्य-अभक्ष्य का विवेक रखकर आहार-पानी आदि ग्रहण करना।

शरीर का संयम:— शरीर की अनावश्यक प्रवृत्तियों से बचना एवं सम्यक् पुरुषार्थ करना।

इन्द्रियों का संयम:— इन्द्रियों से क्षमता से अधिक तथा अनावश्यक कार्य न लेना। वीर्य का नियन्त्रण रखना अर्थात् यथा संभव ब्रह्मचर्य का पालन करना। काम विकार बढ़ाने वाली एवं इन्द्रिय विषयों को उत्तेजित करने वाली प्रवृत्तियों से बचना एवं ऐसे वातावरण से यथा संभव दूर रहना।

श्वास का संयम:— मंद गति से दीर्घ श्वास लेना एवं पूर्ण निःश्वास करना।

भाषा का संयम:— वाणी का विवेक एवं यथासंभव मौन रखना। आवश्यकता पड़ने पर

सत्य, मधुर, हितकारी ही बोलना।

मन का संयमः- मन से अनावश्यक चिन्तन, मनन, स्मृति एवं कल्पनाएँ न करना अर्थात् मनोबल कमजोर करने वाले दृश्यों को न तो देखना एवं न ऐसी बातें सुनना।

उपर्युक्त सभी पर्याप्तियों का संयम ही स्वास्थ्य की कुंजी होता है। सभी रोगों का मूल कारण पर्याप्तियों के असंयम से होने वाले प्राणों का असंतुलन ही होता है। पर्याप्तियों के संयम से शरीर में रोग उत्पन्न होने की संभावनाएँ काफी कम हो जाती हैं और रोग की स्थिति यदि हो भी जाती है तो पर्याप्तियों के संयम से पुनः स्वास्थ्य को शीघ्र प्राप्त किया जा सकता है।

सम्पूर्ण स्वास्थ्य की दृष्टि से रोग पैदा करने वाले कार्यों से बचना, रोग पैदा न हों, ऐसी जीवन शैली जीना तथा जो रोग पहले से जमे हुए हैं उनका विरेचन अथवा सफाई करना आवश्यक है। जैन दर्शन के अनुसार हमारे कर्म ही हमारे सबसे बड़े शत्रु होते हैं। जीवन की सारी समस्याओं के सूत्रधार ये कर्म ही होते हैं। अतः उनसे छुटकारा पाने हेतु आस्रवों से बचना, संवर एवं निर्जरा युक्त जीवन यापन करना आवश्यक होता है।

जैन जीवन शैली के दो रूप

जैन दर्शन में शरीर से आत्मा को अधिक प्रधानता दी गई है। शरीर का उपयोग आत्म-साधना हेतु करने का निर्देश है। जैन श्रमण तीन करण एवं तीन योग से अर्थात् पूर्ण रूप से आत्मोत्थान हेतु सम्यक् पुरुषार्थ करते हैं। उत्तराध्ययन सूत्र के 24 वें 'अष्ट प्रवचन माता' एवं 26 वें 'समाचारी' अध्ययन में जैन श्रमण की जीवन शैली का संक्षेप में मार्गदर्शन प्राप्त होता है। साधु-जीवन एक निश्चित दिशा की यात्रा है। उसके उत्तरदायित्व, कर्तव्य एवं विधि-नियम सब निश्चित होते हैं। गृहस्थ जीवन में प्रायः ऐसा नहीं होता है। इसका क्षेत्र बहुत व्यापक होता है, इसके उत्तरदायित्व असीम होते हैं, विभिन्न परिस्थितियों में उसके विभिन्न कर्तव्य होते हैं। परिवार, समाज, धर्म एवं राष्ट्र के अनेक दायित्व उसके कंधों पर होते हैं और उन सबको सफलतापूर्वक शानदार ढंग से निभाते जाना, इसी में गृहस्थधर्म की कुशलता है। यदि गृहस्थ अपने कर्तव्यों एवं धार्मिक कृत्यों को सही ढंग से निभाता है, तो उसका जीवन साधु-जीवन का भी आधार बन सकता है।

जो व्यवस्थित गृहस्थ-जीवन जीता है उस व्यक्ति में परिवार, समाज, राष्ट्र एवं धर्म के कर्तव्यों के प्रति जागरूकता होती है, वही एक सद्गृहस्थ का आदर्श जीवन होता है। इस जीवन में नीति भी होती है, सदाचार भी होता है, धर्म और अध्यात्म भी होता है। व्यक्ति प्रत्येक क्षेत्र में अपने कर्तव्य को निष्ठा के साथ पूरा करता है। इस प्रकार का आदर्श-जीवन कैसे बने ?

कलिकालसर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्य ने अपने योगशास्त्र में श्रावक/गृहस्थ के 35 गुणों का जो विवेचन किया है, वह जैन जीवन शैली का आधार माना जा सकता है। जिसका विस्तृत विवरण विभिन्न आगमों एवं विशेष रूप से कथानुयोग में मिलता है। जिसके निम्न मुख्य मापदण्डों के आधार पर श्रावक की जीवन शैली को समझा जा सकता है-

1. अहिंसक जीवन शैली
2. स्वावलम्बी जीवन शैली
3. आश्रव से मुक्त संवर से युक्त एवं निर्जरा से परिपूर्ण जीवन शैली
4. सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन, सम्यक् चारित्र एवं सम्यक् तप आधारित जीवन शैली
5. दान, शील, तप, भावना से अनुप्रेरित जीवन शैली।
6. कषाय मन्दता एवं 18 पापों से वर्जित जीवन शैली।
7. सम्यक् दर्शन एवं समतामयी जीवन शैली।
8. यतना एवं सजगता पर आधारित जीवन शैली।
9. सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय की शुभ भावना वाली जीवन शैली।

श्रावक और श्रमण- इन दोनों तरह की जीवन शैलियों का निरूपक आचार्य अमितगति का श्लोक इस प्रकार है-

सत्त्वेषु मैत्री, गुणिषु प्रमोदं, क्लिष्टेषु जीवेषु कृपापरत्वम्।

माध्यस्थ्यभावं विपरीतवृत्तौ, सदा ममात्मा विदधातु देव।।

अर्थ:- सभी प्राणियों के प्रति मेरा मैत्रीभाव हो, गुणिजनों के प्रति प्रमोदभाव हो, दुःखी जीवों के प्रति करुणाभाव हो तथा विपरीत वृत्ति वाले जीवों के प्रति माध्यस्थ भाव हो। इनका संक्षिप्त विवेचन इस प्रकार है-

1. **मैत्री भावना:-** मैत्री भावना में व्यक्ति समस्त संसार के प्रति मित्रता का संकल्प करता है। मनुष्य शत्रु को पराया और मित्र को अपना मानता है। अतः मित्र से कभी भय नहीं लगता और न उससे क्लेश ही होता है। जो गृहस्थ जीवन में मैत्री भावना का संकल्प लेकर चलता है, प्राणिमात्र के साथ मित्रदृष्टि रखता है, वह जीवन में सदा आनन्द, निर्भयता और प्रसन्नता को प्राप्त करता है।
2. **प्रमोद भावना:-** संसार में जहाँ कहीं भी कोई सद्गुणी दिखाई दे तो उसको देख प्रसन्न होना ही प्रमोद भावना है। आज जीवन में प्रमोद भावना का बहुत अभाव हो रहा है। उसका परिणाम होता है, किसी सद्गुणी को देख प्रायः हम निन्दा करने लग जाते हैं। प्रसन्न होने के बजाय उससे जलते हैं, द्वेष करने लगते हैं एवं उसके अवगुण खोजने लगते हैं। प्रकृति का सिद्धान्त है जो स्वयं के गुण या दोष देखते हैं वे उसके

कम होने लगते-हैं और जो हम दूसरों के गुण या दोष देखते हैं, वे हमारे अन्दर विकसित होने लगते हैं।

3. **करुणा भावना:**— दुःखी और पीड़ित प्राणी को देख हृदय में जो सहज कम्पन पैदा होता है एवं उसकी पीड़ा को दूर करने की जो भावना पैदा होती है, उसे अनुकम्पा कहते हैं। दया, करुणा, अहिंसा में जीवन की वे समस्त गतिविधियां आ जाती हैं जो हमारे जीवन में नित्य घटित होती हैं। हमारी किसी भी प्रवृत्ति से किसी प्राणी को कष्ट न हो, पीड़ा न हो, व्यवहार में, व्यापार में, परिवार, समाज एवं राष्ट्रीय जीवन में हमारे द्वारा ऐसी कोई प्रवृत्ति न हो जिससे शांति भंग होती हो, अव्यवस्था पैदा होती हो, यही जैन जीवन शैली का मूल आधार है।
4. **माध्यस्थ भावना:**— प्रतिकूल एवं विपरीत परिस्थितियों में अथवा आक्षेप निंदा सुनकर प्रतिक्रिया न करना माध्यस्थ भावना है।

जैन जीवन शैली के अनुरूप उपचार-विधियाँ

जो चिकित्सा पद्धतियाँ कर्म-बन्धन में सहयोगी होती हैं, जैन धर्म में उनका पूर्ण निषेध किया गया है। रोग का मूल कारण अप्राकृतिक जीवन शैली अर्थात् अनियन्त्रित, स्वच्छन्द, असंयमित-मन, वचन, काया की प्रवृत्तियाँ ही होती हैं। अतः महावीर ने प्राकृतिक स्वावलम्बी जीवन शैली और मन, वचन तथा काया के संयम को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। जितनी ईमानदारी से उनका पालन किया जाता है, उतना ही व्यक्ति स्वस्थ होता है तथा पूर्व संचित असातावेदनीय कर्म के कारण रोग की स्थिति बन भी जाती है तो वह हाय-हाय नहीं करता, परेशान नहीं होता। वह शरीर को आत्मा से अलग, नष्ट और विध्वंसन होने वाला मानता है। अतः उसकी प्राथमिकता शरीर पर नहीं रहती। शरीर से ध्यान के हटते ही शरीर के दर्द, पीड़ा आदि कष्ट नहीं पहुँचा सकते। जहाँ रोग का आदर सत्कार नहीं होता, वहाँ रोग अधिक दिनों का मेहमान नहीं रह सकता। जो चिकित्सा पद्धतियाँ प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष में हिंसा करने, करवाने एवं हिंसा का अनुमोदन करती हैं वे सभी जैन के लिए त्याज्य होती हैं। प्राकृतिक स्वावलम्बी, अहिंसक जीवन शैली तथा मन, वाणी और काया का संयम ही स्वास्थ्य का मूलाधार होता है। यदि रोग सहनशक्ति से परे भी होता है तो उपचार हेतु हिंसक दवाओं एवं साधनों का उपयोग नहीं करता, अपितु स्वावलम्बी अहिंसक उपचार पद्धतियों द्वारा ही अपना उपचार करता है, क्योंकि ये चिकित्सा पद्धतियाँ हिंसा पर नहीं अहिंसा पर, विषमता पर नहीं समता पर, साधनों पर नहीं साधना पर, दूसरों पर नहीं स्वयं पर, क्षणिक राहत पर नहीं, अपितु अंतिम प्रभावशाली स्थायी परिणामों पर आधारित होती हैं। ये रोग के लक्षणों की अपेक्षा रोग के मूल कारणों

को नष्ट करती हैं, जो शरीर के साथ-साथ मन एवं आत्मा के विकारों को दूर करने में सक्षम होती है। ये पद्धतियां प्रकृति के सनातन सिद्धान्तों पर आधारित होने के कारण अधिक प्रभावशाली, वैज्ञानिक, मौलिक एवं निर्दोष होती हैं।

-चोरडिया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर-342003 (राज.)

फोन : 0291-2621454, 94141-34606 (मोबाइल)

E-mail:cmchordia.jodhpur@gmail.com

Website:www.chordiahealthzone.com, www.chordiahealthzone.in

स्वास्थ्य-आलेख प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता

जिनवाणी में 'स्वास्थ्य-विज्ञान' स्तम्भ में प्रकाशित आलेख पर कुछ प्रश्न दिए जा रहे हैं, आप इनका उत्तर 15 मार्च 2013 तक श्री चंचलमल जी चोरडिया के उपर्युक्त पते पर अपने फोन नं., ई-मेल एवं पते सहित सीधे प्रेषित कर सकते हैं। इस प्रतियोगिता में किसी भी वय का व्यक्ति भाग ले सकता है। सर्वाधिक अंक प्राप्तकर्ताओं को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार के अन्तर्गत 1000/-, 750/- एवं 500/- की राशि प्रेषित की जाएगी।

1. मानव शरीर के छह मूल ऊर्जा स्रोत लिखिए।
2. स्वास्थ्यवर्धक जैन जीवन शैली के आठ लाभ बताइये।
3. जैन जीवन शैली के कितने प्रकार हैं, नाम बताइये।
4. सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय- उक्ति का भाव बताइये।
5. असंयमी को जैन जीवन शैली अपनाने के लिए कैसे प्रेरित करेंगे।
6. जैन जीवन शैली के अनुरूप उपचार विधियों की विशेषताएँ बताइए।

स्वास्थ्य-आलेख प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता का परिणाम

जिनवाणी के दिसम्बर-2012 के अंक में 'स्वास्थ्य-विज्ञान स्तम्भ' के अंतर्गत 'सूर्य किरण चिकित्सा' के प्रश्नों के उत्तर 60 प्रतियोगियों से प्राप्त हुए। उनमें से प्रतियोगिता के विजेताओं का चयन लॉटरी द्वारा घोषित किया गया है।

पुरस्कार एवं राशि-

प्रथम पुरस्कार (1000/-रु.)

द्वितीय पुरस्कार (750/-रु.)

तृतीय पुरस्कार (500/-रु.)

नाम

श्री चन्दनमल पालरेचा-जोधपुर

डॉ. लक्ष्मीचंद जैन-छोटी कसरावाद

ज्योति जैन-इन्दौर

अन्य प्रतियोगी अपने अंक मालूम करना चाहें तो चंचलमल चोरडिया-94141-34606 (मोबाइल) से सम्पर्क कर सकते हैं।

रत्नसंघ के दिव्य माणक थे माणकमुनि *

श्री अजीत भण्डारी

रत्नसंघ की परम्परा हमेशा से ही गौरवशाली और उज्ज्वल रही है। रत्नसंघ न केवल रत्नों की बल्कि हीर-पन्ने, मोती और माणक की भी खान है। यहाँ कई ऐसी महान् आत्माओं ने जन्म लिया जो युग-युग तक अपनी सुगन्ध महकाते रहेंगे। ऐसे ही एक रत्न स्व. माणकमुनि जी म.सा. आज से 37 वर्ष पूर्व (संवत् 2032 में) 35 दिनों के संधारे के साथ जोधपुर नगर में महाप्रयाण कर गए।

आचार्य भगवन्त स्व. श्री हस्तीमल जी म.सा. के अनन्य शिष्य श्री माणक मुनि जी म.सा. मध्यप्रदेश के जिला धार में नालछा गाँव से थे। गुरुदेव के सान्निध्य में आपने 32 वर्ष की उम्र में संयम धारण किया। आपके मन में गुरुदेव के प्रति असीम श्रद्धा और उत्कृष्ट विनय भाव था। 32 वर्ष के दीक्षा पर्याय का अधिकतम समय आपने गुरुदेव के सान्निध्य में ही बिताया।

आपका जीवन अत्यन्त सरल एवं सादगी से पूर्ण था। आपका व्यवहार बहुत मधुर तथा नवयुवकों को आकर्षित करने वाला था, आपके सम्पर्क में जो भी आता वह निहाल हो जाता था। गुरु भक्ति में आपका मन हमेशा सराबोर रहता था। युवकों को कुछ न कुछ सीखते रहने की प्रेरणा आप हमेशा करते थे।

आप भजनानन्दी के नाम से प्रसिद्ध थे। प्रार्थना और प्रभु-भक्ति गीत गाने में आपका कोई सानी नहीं था। तन्मयता से प्रभु भक्ति में डूब जाते थे। हमेशा प्रसन्न और हंसमुख रहते थे। धर्म-ध्यान के अलावा इधर-उधर की बात कभी-किसी से नहीं करते थे।

अस्वस्थता की वजह से अन्तिम समय आप श्री सुबोध कॉलेज जयपुर से विहार कर पूरे दिन भर चलते-चलते, पांच घसीटते (आपश्री को घुटने में बहुत दिक्कत थी) 30 दिन में जोधपुर पधारे। चेहरे पर थकान नाम की कोई चीज़ नहीं थी।

अन्तिम समय में जीवन का मोह त्यागकर संलेखना-संधारा करके आप कर्मों को खपाना चाहते थे। गुरुदेव भी बाड़मेर से विहार कर आपको दर्शन देने जोधपुर पधारे। असीम शारीरिक कष्ट और भयंकर वेदना समभाव से सहन करके 35 दिनों का संधारा फाल्गुन शुक्ला अष्टमी को घोड़े के चौक स्थानक में पूर्ण हुआ।

* इस वर्ष यह तिथि 20 मार्च 2013 को उपस्थित हो रही है।

संधारे के समय दर्शन के लिए 36 ही कौम उपस्थित रही। अन्तिम यात्रा में सभी सम्प्रदाय व सभी कौम के हजारों लोगों की उपस्थिति थी, जोधपुर के इतिहास में वह एक यादगार दिवस था।

श्रद्धेय माणकमुनि जी म.सा. की स्मृति में श्री वर्द्धमान जैन रिलीफ सोसायटी (घोड़ों का चौक-अस्पताल) 37 वर्षों से आमजन की सेवा में अग्रणी है तथा मुनि श्री की याद को अमर किए हुए है। ऐसे महान् अध्यात्म योगी को शत-शत नमन।

-बी-1, दासपा हाउस, लोको रोड़, रातानाड़ा, जोधपुर (राज.)

रत्नसंघ के हैं सिणगार

श्री गजेन्द्र कुमार जैन

(तर्ज:- टोटे टोटे हो गया.....।)

रत्नसंघ के हैं सिणगार, हीरा गुरुवर खेवनहार,
हीरा-हीरा छा गया रे, हीरा-हीरा छा गया.....।।टेर।।

पट्टधर हीरा-मान गुरु ये, रत्नसंघ के तारे हैं,
माँ मोहिनी माँ छोटा की, कोख से ये जाये हैं,

जय हो गुरुवर जय हो-2

पीपाड़-जोधाणा के हैं लाल, अद्भुत योगी बेमिसाल,
हीरा-हीरा छा गया.....।।1।।

मोतीलाल और अचलचंद के, गणिवर दोनों बालक हैं,
त्याग-क्रिया और वृद्ध संयम के, गुरुवर दोनों पालक हैं,
जय हो गुरुवर की जय हो-2,

रत्नवंश की एक मिसाल, इनसे संघ है मालामाल,
हीरा-हीरा छा गया.....।।2।।

श्रद्धानत होकर अब कहता, सुन लो अर्जी एक मेरी,
'गजेन्द्र' करता चरण वंदना, हीरा गुरुवर अब ये तेरी,
जय हो गुरुवर की जय हो-2,

दुखम्-दुखम् चाहूँ ना, मंगल पथ दर्शावो ना,
हीरा-हीरा छा गया.....।।3।।

-आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान,

ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.)

किशोर मन की जिज्ञासाएँ (2)

श्री मनोहरलाल जैन

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित इस रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 15 मार्च 2013 तक श्रीमती शरद चन्द्रिका मुणोत सामायिक-स्वाध्याय भवन, कुमार छात्रावास के सामने, नेहरु पार्क, जोधपुर-342003(राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

(दिसम्बर 2012 के अंक के क्रम में द्वितीय किश्त)

प्रश्न उठाया गया कि क्या हम भी कभी अरिहंत बन सकते हैं? यह सत्य है कि हमारी व आपकी आत्मा तथा अरिहंत-सिद्ध भगवन्तों की आत्मा में स्वरूप से पूर्ण समानता है। समानता होते हुए भी हमारी तथा अरिहंत-सिद्ध भगवन्तों की आत्मा में अशुद्धि-शुद्धि का अन्तर है।

इसके लिये एक सामान्य सा उदाहरण लें। मान लीजिए आपके पास हजार वॉट का बल्ब है और अरिहंत भगवान के पास भी है। अरिहंत-सिद्ध भगवान के पास तो वह जगमगा रहा है। आपके पास बल्ब तो है, किन्तु वह प्रकाशित ही नहीं हो पा रहा है। इसका कारण यह है कि आपके घर में अभी बिजली की फिटिंग नहीं हुई है। पहले फिटिंग होगी, फिर कनेक्शन लेंगे, उसके पश्चात् बल्ब का उपयोग होगा। बस यही स्थिति हमारी आत्मा की है। पहले मकान बनवाना, फिटिंग करवाना, कनेक्शन के लिये आवेदन करना आदि आदि कार्य करने होते हैं। अरिहंत भगवान ने केवल ज्ञान प्रकट कर लिया है, जबकि हम तो अभी नवकार मंत्र पर अटके हैं। नवकार मंत्र भी केवल याद किया है। हमको इस मंत्र में कथित गुणों को आत्मसात् करना होगा। आत्मसात् मात्र कहने भर से नहीं होता है। इसके लिये सतत अभ्यास करना होगा और आत्मा की आवाज को सुनना होगा। आत्मा तो एक विश्वस्त मित्र है जो हमको अनुचित कार्य करने से रोकती है, किन्तु हम संसार की मोहमाया में इतने मदमस्त रहते हैं कि आत्मा की आवाज को सुन ही नहीं पाते हैं, अन्यथा आत्मा तो सदैव अपने मित्र की भांति हमको अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह

आदि मूल गुणों के लिये सदैव प्रेरित करती रहती है। इन मूल गुणों को हम जितनी अधिक ईमानदारी के साथ अपनायेंगे उतना अधिक हम आत्मा के निकट होते जायेंगे।

यहाँ प्रश्न किया जा सकता है कि पूर्व में तो सत्य और अचौर्य की बात की थी, अब अहिंसा की बात प्राथमिकता के साथ क्यों की जा रही है ?

प्रिय भाई! अहिंसा तो बुनियाद है। चाहे सत्य हो अथवा अचौर्य या अन्य कोई व्रत हो, बिना अहिंसा के पालन किया जाना संभव नहीं है। इसलिये जहाँ सत्य और अचौर्य की बात है वहाँ परोक्ष में अहिंसा ही है।

सत्यभाषा प्रियकारी एवं हितकारी हो तो वह अहिंसात्मक होती है। प्रियकारी व हितकारी भाषा हितैषी एवं विनयशील व्यक्ति ही बोल सकता है। इसीलिये हमारे यहाँ विनय को धर्म का मूल कहा गया है। जो विनयवान है, वह गुणवान है। गुणों की प्राप्ति सत्य और अहिंसा के माध्यम से ही की जा सकती है। इसलिये हमारे यहाँ मूल गुण अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य तथा अपरिग्रह बताये गये हैं। इनकी विशेषता यह है कि किसी भी एक गुण को ग्रहण किया गया तो शेष चार गुण स्वतः ही प्रवेश कर जायेंगे। यहाँ मैं स्पष्ट कर दूँ कि आज की हवा में घर पर भी आपको गुणों के अनुरूप वातावरण नहीं मिल पायेगा। न ही मित्रों से आप ऐसी आशा कर सकते हैं? इसलिये साधु-सन्तों के सान्निध्य में जाने से आपमें गुणों के प्रति अनुरक्ति बढ़ेगी और आप अपने व्रतों का निष्ठापूर्वक पालन करते रहेंगे। एक दिन ऐसा अवश्य आयेगा जब आपकी श्रेष्ठता सिद्ध हो सकेगी। इसीलिये तो कहा गया है- “सत्यमेव जयते।”

सत्य आदि व्रतों के प्रति एक और भ्रांति फैलायी जाती है कि यदि परोपकार के लिये झूठ बोलना पड़े तो झूठ बोलने से हिचकिचाना नहीं चाहिये। इसके लिये एक काल्पनिक उदाहरण दिया जाता है कि यदि जंगल में शिकारी मिले तथा आपसे पूछे कि इधर से हिरण गया क्या? यदि आप सच बोलते हैं तो बिचारे हिरण की जान जाती है, यदि मौन रहते हैं तो आपकी जान शिकारी लेता है। यहाँ निडरता के साथ शिकारी से कहना चाहिये कि मैं जानता हूँ कि हिरण किधर गया है। यदि आपको बता देता हूँ तो एक निर्दोष प्राणी की हत्या का पाप आपके साथ मुझको भी लगेगा। इसलिये मैं अपने प्राणों के उत्सर्ग के लिये तैयार हूँ, किन्तु हिरण की जान को खतरे में नहीं डाल सकता। इतनी देर चर्चा से एक लाभ और हुआ है कि हिरण बेचारा अब पूरी तरह आपकी पहुँच के बाहर हो गया है। इसके उपरान्त भी मैं अपने व्रतों को पूरी तरह पालन करते हुए आपको यह नहीं बता सकता हूँ कि हिरण किधर गया है। हाँ, यदि मेरे साथ कुछ ऊँच-नीच हो गई तो आप स्वयं अपने गलत काम को बचाने के लिये इधर-उधर भागते फिरोगे। संभव है जेल भी हो जाए। फिर आप शिकार

किसका करोगे ?

आपके इन वचनों से सम्भव है शिकारी को सदबुधि आयेगी। यदि नहीं, तो यह मानिए कि आपके तथा उसके बीच पूर्व भव का वैर है, जिसके भुगतान करने का समय आ गया है। यह मानिये कि बचपन में व्रत पालन के लिये दृढ़ता प्राप्त करना अति सहज है। जैसे-जैसे हम बड़े होते हैं, हमारा स्वार्थी दृष्टिकोण विकसित हो जाता है। इस कारण व्रत भंग के कई नये-नये बहाने तैयार कर लिये जाते हैं।

बचपन में यदि व्रतों को दृढ़ता से पालन करने की प्रवृत्ति ग्रहण कर ली, तो निश्चित मानिये कि एक मजबूत बुनियाद पर हमारा जीवन रूपी महल खड़ा हो जायेगा।

प्रश्न:-

1. अरिहंत और सिद्ध में क्या अन्तर है ?
2. आत्मा की निकटता प्राप्त करने के लिए क्या करना चाहिए ?
3. सत्य एवं अचौर्य व्रत में परोक्ष रूप से अहिंसा कैसे है ?
4. गुणों के विकास के लिए क्या करना चाहिए ?
5. शिकारी और हिरण की घटना में लेखक ने जो समाधान दिया है, आप उससे कहाँ तक सहमत हैं ? यदि सहमत न हों तो आपके विचार बताइए।
6. बाल्यावस्था की प्रवृत्तियाँ भावी जीवन का आधार होती है, क्यों ?

बाल-स्तम्भ [दिसम्बर-2012] का परिणाम

जिनवाणी के दिसम्बर-2012 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'किशोर मन की जिज्ञासाएँ' कहानी के प्रश्नों के उत्तर 61 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, उनमें से प्रतियोगिता के विजेताओं का चयन लॉटरी द्वारा किया गया है। पूर्णांक 20 में से दिये गये हैं-

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-250/-	मीनाक्षी छाजेड़-समदड़ी (राज.)	18.5
द्वितीय पुरस्कार-200/-	कृतिका एस. गाँधी-पीपाड़ शहर (राज.)	18
तृतीय पुरस्कार-150/-	कशिश जैन-कोटा (राज.)	16.5
सान्त्वना पुरस्कार-100/-	प्रखर गाँधी-चिन्तीड़गढ़ (राज.)	16.5
	अर्पित जैन-जोधपुर(राज.)	16.5
	हर्षित जैन-आलनपुर (राज.)	16
	निशा जैन-खेरली (राज.)	15.5
	अंकित खींचा-जयपुर(राज.)	15.5

आओ स्वाध्याय करें

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्

द्वारा प्रायोजित त्रैमासिक प्रतियोगिता (31)

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के माध्यम से 'आओ स्वाध्याय करें' त्रैमासिक प्रतियोगिता-परीक्षा "नवम्बर-दिसम्बर-2012 एवं जनवरी-2013" के अंकों पर आधारित है। इसमें कुल 50 प्रश्न पूछे गए हैं, जिनके उत्तर नमन मेहता सुपुत्र श्री सुमतिचन्द मेहता, निदेशक-अ.भा.श्री जैन रत्न युवक परिषद्, गजराज नेमीचंद जैन किराणा मर्चेन्ट, सदर बाजार, पीपाड़ शहर-342601(राज.), फोन: 94141-16766 के पते पर 15 मार्च 2013 तक मिल जाने चाहिए। प्रश्न समझ न आने पर आप फोन के द्वारा सम्पर्क कर समझ सकते हैं।

(अ) वाक्य में एक शब्द छूट गया है, उसे लिखिए-

1. तीन सूत्र अनमोल हैं, फिर भी लगता कुछ नहीं दाम।
2. तेरी कृपा से ही तो, गुलजार हो रहा है।
3. गुणानुवाद शब्दों में अर्पित है, भावों का पराग।
4. तिरने के लिए तीर्थ है, जिनकी सुगन्ध से धर्मसंघ है।
5. तुम कौन कहाँ से आये, और कहाँ अब जाना है?
6. श्री हस्तीमल जी महाराज श्रावकों में सामायिक और स्वाध्याय के प्रति सदैव बोध जगाते रहते हैं।
7. आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. ने अष्टम पट्टधर हेतु आपको मनोनीत किया।
8. पूज्यवर तुमको लाखों प्रणाम।
9. श्री तेजकंवर जी के सान्निध्य में विगत 7 माह से ज्ञानार्जन कर रही थी।
10. आत्मा को संयम में अवस्थित करने रत्नाधिक मुनि पुंगवों के चरणों में वन्दन।
11. सुख मूलबीजं, सर्वार्थविनिश्चयप्रकाशकरम्।
12. प्रथम भाग में आत्मा के विकास क्रम के अन्तर्गत पुद्गल परावर्तन, सम्यक्त्व, कर्मक्षय प्रक्रिया, चरमशरीरी, यथाख्यात चारित्र आदि की चर्चा के साथ उपयोगी सामग्री संयोजित की गई है।
13. न शासक को है, न शासित को आराम।
14. सदैव से सोच-समझकर धीमी आवाज में बात करें।

15. निर्मल संयम का पालनकर सुन्दर की सुन्दर बगिया की सौरभ को फैलाते।

(ब) प्रश्नों के उत्तर केवल एक शब्द में दीजिए-

16. किसको धीरज रखने का फल 'मण भर भोजन' के रूप में मिलता है।
17. किसी एक पुष्ट आलंबन को ग्रहणकर एक विषय पर स्थिर हो जाना।
18. दिनचर्या को नियमित कौन बनाती है।
19. मुझमें अगर हो जान, तो दूर नहीं भगवान।
20. नजारे बदलने के लिए मुझे बदलना जरूरी है।
21. आहार का संबंध है मुझसे, जैनत्व की पहचान है मुझसे।
22. 'स्वप्निका' के सरल नियम नियमकर्ता के कौनसे गुण को अभिव्यक्त करते हैं?
23. आज के समाज को कैसे कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है?
24. पढ़ी बातों का संरक्षण किससे होता है?
25. अनन्तज्ञान आदि राजमार्ग के कितने प्रकार के धर्म बताए हैं?
26. सूर्य की किरणों में कुल कितने रंग की किरणें होती हैं?
27. मुझे तो मीठा नीर जैसा बनाना चाहिए।
28. मैं शैशव की आधार भूमि हूँ।
29. मेरी हवा, जैसे दवा।
30. ज्ञान का सार कौन है?

(स) रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-

31. भय, वैरो से उपरत हो, मत बनो..... के हत्यारा।
32. वे ज्ञान और त्याग के मार्ग से जीवन को बनाने की प्रेरणा देते हैं।
33. स्वप्निका का प्रथम पुरस्कार पुरस्कार है।
34. निःशल्य केलोगुत्तम हो, के मंगलमुक्किट्टं हो।
35. दुर्लभ नर-तन को.....का, हम परिधान पहनायें।
36. रचना का वह शिल्पकार स्वयं में रहता है।
37. अतीत की संजोयीमें वर्तमान स्वच्छ, निर्मल बनता है।
38. दोष स्वयं रा नहीं दीखता, पर.....ने भूडे है।
39. परस्पर में परिचय करने का विशाल मंच है।
40. जैन दर्शन में सम्यग्दृष्टि से युक्तअधिकारी है।
41. जब नाभि सक्रिय हो अर्थात् दिन में ही..... से पूर्व भोजन करना चाहिए।

42. वे अपने सम्प्रदाय और के मोह से ऊपर थे।
 43. नई-नई वस्तुओं, सामग्रियों, पहनने के कपड़ों, सौन्दर्य-प्रसाधनों के कारण..... बड़ी हैं।
 44. एक जीने की इच्छा जिसे कहते हैं, दूसरी मरने की इच्छा जिसे कहा जाता है।
 45. इसमें सिर्फ पंक्तियाँ ही नहीं, पंक्त से मुक्त की उक्तियाँ भी उल्लिखित हैं।
 (द) नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं, उनको जोड़ते हुए जिनवाणी में आई 'आगम' की

पंक्तियाँ बनाइए-

जैसे:- मि यं अ दि सं दि प ट्ठं द्धं प ण्णं डि पु यं यं जि वि

उत्तर:- दिट्ठं मियं असंदिद्धं, पडिपुण्णं वि यं जियं।

विशेष:- 'आगम-वाणी' शीर्षक में से ही उत्तर देने हैं।

46. रा वे लि गा ढा अ ह हु हो जा ए
रु म य से प्प णी घ म ए इ सु ण।
 47. अ गे णा ण अ स्म दु व
वि ज्जे क्क स ण्ह णि रं ज्ज।
 48. अ य वे से रु ण्ण दी हि स्से मे इ
ए वि न्ने प्प भ य से णे कारि वा।
 49. स भ रि ओ नि सु म रं
प व्वा च्चारं दु म्म क्क तं।
 50. अ य ही ओ य सु प ए का से त
सं म णे त्थे क ओ य प्प त गु ण्हा।

जिनवाणी का संपादकीय कार्यालय जोधपुर में

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा प्रकाशित 'जिनवाणी' मासिक पत्रिका का संपादकीय कार्यालय जोधपुर में प्रारम्भ हुआ है, कृपया संपादकीय पत्र-व्यवहार निम्नांकित पते पर करें-

जिनवाणी कार्यालय

श्रीमती शरदचन्द्रिका मुणोत सामायिक-स्वाध्याय भवन
कुम्हार छात्रावास के सामने, नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)
फोन नं. 0291-2626279

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (34)

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा संचालित)

अ. भा.श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) से प्रकाशित पुस्तक **जैन धर्म का मौलिक इतिहास (भाग तीन-सामान्य श्रुतधर खण्ड-प्रथम)** के आधार पर संचालित मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता की यह सातवीं किश्त है। प्रतियोगी के उत्तर लाइनदार पृष्ठ पर मय अपने नाम, पते (अंग्रेजी में), दूरभाष न. सहित Smt. Vajainti Ji Mehta, C/o Shri Anil Ji Mehta, 91, 5th main, 5th A cross, III Block, Tayagraj Nagar, Bangalore-560028 (Karnataka) Mobile No. 09341552565 के पते पर 10 मार्च 2013 तक मिल जाने चाहिए।

सर्वश्रेष्ठ तीन प्रतियोगियों को क्रमशः राशि 500, 300, 200 तथा 100-100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार दिए जायेंगे। इसके अतिरिक्त वर्ष के अन्त में 12 माह तक प्रतियोगिता में भाग लेने वाले और सर्वश्रेष्ठ रहने वाले प्रतियोगी को विशेष पुरस्कार दिए जायेंगे। - **मधु सुराणा, अध्यक्ष**

जैनधर्म का मौलिक इतिहास (भाग-3)

(पृष्ठ सं.376 से 435 तक से प्रश्न)

एक शब्द में उत्तर दीजिये:-

1. पर्वतिक नगरी में हूणराज तोरमाण ने किसे अपना गुरु बनाया ?
2. सभी सम्प्रदायों ने किसे उपकरण के रूप में मान्य किया ?
3. विष्णु के उपासक राजाओं के सिक्कों पर किसकी मूर्ति होती थी ?
4. जैन धर्मावलम्बियों को प्रमाणिक रूप से क्या मान्य है ?
5. कौन जैन-जगत के दिव्य ज्योतिर्धर नक्षत्र थे ?

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये:-

6. जैन धर्म के मूलस्वरूप में प्रकार कीउत्पन्न हुई।
7. मथुरा में..... टीले की से निकले के इतिहास।
8. यदि हीको..... लगेगी तो चौपट हो जायेगा।

9. युगप्रधानाचार्य की कोई अभी तक.... में आई।

10. श्रावकाचार में शैथिल्य करने लगा।

संख्या में उत्तर दीजिये:-

11. तीर्थकरों की माताएँ गर्भावतरण काल में महामंगल स्वप्न देखती हैं।

12. श्लोक प्रमाण प्रथम खण्ड के कर्ता संघदासगणि वाचक हैं।

13. वर्ष पश्चात् विद्याधर कुल में हरिभद्र नाम के एक और आचार्य हुए।

14. लगभग वर्षों से भी अधिक समय तक, धर्म संघ ने एक रूप को बनाये रखा।

15. वर्षों की स्थानकवासी परम्परा द्वारा मान्य जैतारण से प्राप्त प्रति मिली।

रिक्त स्थानों की पूर्ति 'आ' से कीजिये:-

16. दूसरे धर्मों के की ओर हठात् बहुत बड़ी संख्या में लोग खिंचे जा रहे थे।

17. के स्थान पर प्रभावना, प्रतिष्ठा और तीर्थयात्रा में ही धर्म की इतिश्री रह गई।

18. पूर्व जन्मों के चारित्र बौद्ध धर्म के में यत्र-तत्र उपलब्ध होते हैं।

19. विदेशी हूण..... के विनाशकारी चरण भारतवर्ष पर निरन्तर बढ़ते चले आ रहे थे।

20. आचार्य समन्तभद्र ने पर-कल्याण की भावना से वे.....ग्रहण करते थे।

मुझे पहचानो:-

21. मैं भगवान् महावीर के शासन में 27 वां पट्टधर था।

22. मैं तो उसी कंघी को लेकर अन्न-जल ग्रहण करूँगी।

23. मुझे सूर्य की उपमा दी गई है।

24. मेरा निमित्त-ज्ञान पूर्ण अथाह और अनुपम है।

25. मैंने दोनों ही परम्पराओं को एक करने का पूरा प्रयास किया।

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (32) का परिणाम

जिनवाणी दिसम्बर, 2012 में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर 199 व्यक्तियों से प्राप्त हुए। 25 अंक प्राप्तकर्ता विजेताओं का चयन लॉटरी द्वारा किया गया है।

प्रथम पुरस्कार- विजयलक्ष्मी-अजमेर (राज.)

द्वितीय पुरस्कार- प्रकाशबाई प्रेमचन्द जी भुरावत-बांद्रा (महा.)

तृतीय पुरस्कार- बाबुलाल जैन-गोपालगढ़, भरतपुर (राज.)

सान्त्वना पुरस्कार-

1. चेतन जैन-गंगापुर सिटी, सवाईमाधोपुर (राज.)

2. ललिता बाफना-नागपुर (महा.)
3. मीना चोरडिया-साहुकार पेठ, चेन्नई (तमिलनाडू)
4. अनुराग सुराणा-अजमेर (राज.)
5. कुन्तल कुमारी जैन-जयपुर (राज.)

अन्य 25 अंक प्राप्तकर्ता- Anurag Surana-Ajmer, Babu Lal Jain-Bharatpur,

Bhopal Chand Sethiya-Jodhpur, Chandanmal Palrecha-Jodhpur, **Chetan Jain-Sawai Madhopur**, Gyan Chand Kothari-Ajmer, Hema Kothari-Jaipur, Hemlata Jain-Beawar, Jethmal Jain-Jodhpur, Johari Mal Chamber-Jodhpur, Kiran Kothari-Jaipur, **Kuntal kumari Jain-Jaipur**, **Lalita Bafna-Nagpur**, **Meena Churadia-Chennai**, Mrs.Kamla Singhvi-Jaipur, Munnalal Bhandari-Jodhpur, Nenchan Bafna-Jodhpur, Pushpa Devi Bardia-Jaipur, Rajkumari Lodha-Jaipur, Ratan Chand Mehta-Jodhpur, Rekha Kothari-Ajmer, Smt.Shilpa Surana-Ajmer, **Smt.Vijaya Lakshmi-Ajmer**, **Sou.Prakash Bai Premchandji Bhurawat-Bhandara**, Sow.Kusum Paresheji Ponamia-Ichalkaranji, Sudha Daga-Bikaner, Susheela Tated-Bhilwara, Usha Praveenji Bardia-Dhulia, Vinod Palrecha-Jodhpur.

24 अंक प्राप्तकर्ता- Amita Taambi-Jaipur, Anil Kumar Jain-Kota, Anita Atul

Munot-Ichalkaranji, Basanta Madanlalji Sanklecha-Dhulia, Bhagwanraj Singhvi-Pali, Bharati .S.Mandlecha-Poona, Chitra Shreemal-Naguor, Dal Chand Jain-Jaipur, Deepak Jain-Naguor, Deepmala Singhvi-Pali, Devendra Nath Modi-Jodhpur, Devi Lal Bhanawat-Udaipur, Dharmesh Punamia-Pali, Gewarchand Chhajjed-Bellary, H.Vinod Jain-Shimoga, Hema Kishore Bagmar-Secunderabad, Indu Kamleshji Jain-Malad, Jagdish Prasad jain-Kota, Jaya Bhandari-Beawar, Kamla Surana-Jodhpur, Kanchan-Nasik, Kanwal Raj Mehta-Jodhpur, Lalita Ganeshchandji Surana-Solapur, Laliitha Gadiya-Hyderabad, Laxmichand chhajer-Balotra, M/S.Urmila Padamchand Chordia-Surat, Manila Parakh-Jaipur, Manju Dilip Jain-Mumbai, Maya Alijar-Secunderabad, Meena Vijaya Bora-Mumbai, Meenu Jain (Mehta)-Jaipur, Miss.Shabnam Khan-Jaipur, Mohnot Hansraj jain-Jaipur, Monika Jain-Indore, Mrs.Aruna Jain-Hoshiarpur, Mrs.Chetana B.Bothra-Mumbai, Mrs.Hansa Jaroli-Udaipur, Mrs.Kanak Baded-Delhi, Mrs.Nutan Ajitji Bhandari-Ichalkaranji, Mrs.Pramila .B.Pokhrana-Dhulia, Mrs.Ratan Karnawat-Jaipur, Mrs.Reema Jain W/O.Mr.Dinesh Jain-Ludhiana, Mrs.Renu Virendra Jain-Mumbai, Mrs.Suvarna Nitinji Bohra-Ichalkaranji, Neelam Jain-Gurgaon, Nirmala Rajendrajai Bora-Ichalkaranji, Nitu Golecha-Secunderabad, Padam Chand Jain-Bharatpur, Paras Chand Jain-Bharatpur, Paras Jain-Bellary, Parasmal Daulatraji Baghmar-Barmer, Pooja Bafna-chennai, Pooja Nitin Bora-Ichalkaranji, Prakash Chand Gadiya-Hyderabad, Pramila Mehta-Ajmer, Pramila Vinod Kumar Bohra-Jaitaran, Prem Jain-Alwer, Priti Jain-Chittorgarh, Priyanka Mukesh Chopda-Ichalkaranji, Pukh Raj jain-Ajmer, Pushpa Jain-Jaipur, R.R.Kothari-Dhulia, Raj Mal Jain-Jodhpur, Rajkumar Bhatia-Pali, Rajkumari Jain-Delhi, Rikhab Raj Bohra-Delhi, Rohit Oswal-Jaipur, Sagar Mal Nahar-Chittorgarh, Shakuntala Bohra-

Secunderabad, Shashikala Lunawat-Nasik, Shobha Nahar-Secunderabad, Shobha Nandalalji Gugale-Ichalkaranji, Shobha Rajendra Chhajed-Julgaon, Smt.Anjana Rajendra Karkani-Devas, Smt.Chanchal Gollechha-Jaipur, Smt.Harsha Jain-Pali, Smt.Hemlata Daga-Jaipur, Smt.Kalpna Dhakad-Gurgaon, Smt.Kamala Modi W/O.D.N.Modi-Jodhpur, Smt.Kamlesh Geilda-Ajmer, Smt.Komal Jain-Gandhi Dham (Guj), Smt.Leela Jain-Bundi, Smt.Leena Mahendraji Jain-Chiplun, Smt.Narendra Gopi Chand-Bhayandar (E), Smt.Pista Gulechha-Jaipur, Smt.Pramila Kailash Kothari-Jodhpur, Smt.prasan .P.Gang-Mumbai, Smt.Prasan Kothari-Jodhpur, Smt.Sapna Hinger-Mysore, Smt.Seema Dhing-Udaipur, Smt.Seema Jain-Jodhpur, Smt.Sunita Navlakha-Kota, Smt.Sushila Begani-Bikaner, Smt.Upma Choudhary-Ajmer, Smt.Vidhya Sanghvi-Badnawar, Smt.Vimla Bhansali-Surat, Sou.Nirmala Vijayji Gundecha-Ichalkaranji, Sou.Vandana Khicha-Surat, Sow.Latha .S.Anchalia-Dhule, Sow.Sangeetaji Nensukhji-Julgaon, Sow.Shakuntala Hansraji Bohra-Ichalkaranji, Subhash Mohanlalji Dhadiwal-Bhayandar (E), Sudha Bhansali-Jodhpur, Sugan chand Chhajed-Jodhpur, Sunita Doshi-Beawar, Suresh Chand Jain-Kherli, Suresh Kumar Sand-Pali, Susheela .I.Ranka-Julgaon, Sushila Bhandari-Bangalore, Tara Kumari Runiwal-Jawahar Nagar, Ugam Mulchandji Dosi-Secunderabad, Ugma Devi Dugar-Bangalore, Uma Agarwal-Jawahar Nagar, Usha Lunawat-Ajmer, Vandana Punamia-Pali, Vijay Laxmi Mohnot-Jaipur, Vikas Bamb-Mumbai, Vimal .R.Kochar-Nasik, Vimla .N.Mehta-Jodhpur, Y.Sunita Singhvi-chennai.

23 या उससे कम अंक प्राप्तकर्ता— Aashish Kumar Tated-Nagaour, Aayushi Jain

D/O.Naresh-Nadbai (Bharatpur), Anshu Jain-Beawar, Balwant Singh chordia-Jhalara Patan, Bhavika .M. Shah-Belgaum, Dharmendra Jain-Sawai Madhopur, Dimple Ostwal-Pali, Heera Karnawat-Ahmednagar, Hem Raj Surana-Jaipur, Indu tater-Nagour, Khimji .R.Shah-Mumbai, Madanlal Sancheti-Hyderabad, Milap .P.Lunawat-Ahmedabad, Mrs.Smita Nileshji Muthiyani-Ichalkaranji, N.Mahaveer Chand Tater-Chennai, Natmal kothari-Balod, Nilima Yogesh chopda-Ichalkaranji, Nirmala H.Surana-Bikaner, Padam Chand Gandhi-Jodhpur, R.T.Jain-Julgaon, Ragini Jain-Sawai Madhopur, Rajni Bhandari-Gurgaon, Saroj Nahar-Delhi, Seema Jain W/o.Sri.Jambu Kumar Jain-Tonk, Smt.Chandrakala Mehta-Bangalore, Smt.Jyothi Bhansali-Bangalore, Smt.Kamal Chordia-Jaipur, Smt.Premlata Lodha-Jaipur, Smt.Seema Jain W/O.Naresh Chand Jain-Nadbai (Bharatpur), Smt.Shanta Mahendraji Bafna-Nasik, Smt.Shiromani Jain-Shajapur, Sou.Chandrakala Dilipji Ranka-Julgaon, Sou.Sadhana Dilipji Gugale-Ichalkaranji, Sow.Leela Bai Prakashchandji Mohnot-Ichalkaranji, Sow.Madhubala Pramodji Bora-Ichalkaranji, Sow.Meenabai Rajkumarji Nahar-Ichalkaranji, Sow.Sangita .A.Singhvi-Dhule, Sow.Sarala .Sha Kankaria-Julgaon, Sow.Shakuntala .K.Khivsara-Julgaon, Sunita Oswal-Jaipur, Vijaya Devi .R.Bagmar-Gajendragarh, Smt.Veena Tarunji Kimtee-Rampur (M.P), Shakuntala Jain .M.-Chennai, Pramila Bhandari-Bangalore, Meenakshi Lodha-Gurgaon, Dharam Chand Dhammani-Ahmednagar, Sow.Pushpa Subhashchandji chhallani-Buldhana (M.H), Gunmalaji Jain-Mumbai, Vaishnavi Hukumchand Jain-Julgaon, Rajendra Tejmal Jain (Chhjed)-Bhusawal.

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं



नूतन साहित्य



डॉ. धर्मचन्द जैन

आवश्यकमलयगिरी वृत्ति हिन्दी अनुवाद एवं विवेचन- आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी महाराज, **प्रकाशक-** सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) दूरभाष-0141-2575997, 2571163, फैक्स-0141-2570753, Email-sgpmandal@yahoo.in, **पृष्ठ-** 480 (बड़ा आकार), **मूल्य-**125 रुपये, **सन्-**2012

जैनदर्शन में आवश्यकसूत्र का महत्त्वपूर्ण स्थान हैं। इस पर भद्रबाहु की आवश्यकनिर्युक्ति एवं जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण का विशेषावश्यक भाष्य प्रसिद्ध है। आचार्य मलयगिरी ने इन दोनों को आधार बनाकर 'वृत्ति' (टीका) की रचना की है, जिसमें आवश्यक सूत्र से सम्बद्ध अनेक विषय परिस्फुट हुए हैं। आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी महाराज ने सन् 1982 के जलगाँव चातुर्मास में मलयगिरी की वृत्ति का अपने मार्गदर्शन में हिन्दी अनुवाद कराया था, जिसका सम्पादन श्री प्रकाशचन्द जी जैन, जलगाँव ने किया है। इस वृत्ति का प्रकाशन होना सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए गौरव का विषय है। इस ग्रन्थ में पंच परमेष्ठी, मंगल, पाँच ज्ञान, 28 लब्धियाँ, सम्यक्त्व-प्राप्ति की प्रक्रिया, उपशमश्रेणि, क्षपकश्रेणि, केवलि समुद्घात, तीर्थंकर प्राप्ति के बोल, तीर्थंकर परिचय आदि के साथ सामायिक, चतुर्विंशति स्तव, वन्दना, प्रतिक्रमण, कायोत्सर्ग एवं प्रत्याख्यान नामक षडावश्यकों का विशद विवेचन हुआ है। ग्रन्थ में मूलवृत्ति नहीं देकर निर्युक्ति एवं भाष्य की गाथाओं के साथ सबका ग्राह्यरूप में हिन्दी अनुवाद एवं विवेचन प्रस्तुत किया गया है। जिज्ञासु इसका पठन कर ज्ञानवर्द्धन तो करेंगे ही, जीवन में नई दिशा भी प्राप्त कर सकते हैं।

जैनदूत (णमोत्थु णं विशेषांक), प्रकाशक- श्री अरिहंतमार्गी जैन महासंघ, 1767, फ्लैट नं. 9 (प्रथम तल), भागीरथ पैलेस, चाँदनी चौक, दिल्ली-110006, दूरभाष- 011-23865493, Email-shriarihantmargi@hotmail.com **पृष्ठ-**360 (बड़ा आकार), **मूल्य-**10 रुपये, दिसम्बर-2012

श्री अरिहंतमार्गी जैन महासंघ के मासिक मुखपत्र 'जैनदूत' का यह विशेषांक 'णमोत्थु णं' पर केन्द्रित है। यह विशेषांक पाँच खण्डों में विभक्त है- 1. णमोत्थु णं क्या है? 2. णमोत्थु णं जाप की विविध विधियाँ, 3. आगम और इतिहास के परिप्रेक्ष्य में सिद्ध-अरिहंत, 4. अरिहंत बनने की भावयात्रा, 5. सचित्र णमोत्थु णं जापविधि, 6. णमोत्थु णं का प्रभाव : श्रद्धालुओं के मुख से। णमोत्थु णं को शक्रस्तव भी कहा जाता है।

इस पाठ की कितनी महिमा है, इसे इस विशेषांक में अनेक उदाहरणों एवं प्रेरक प्रसंगों से पुष्ट किया गया है। आचार्य ज्ञानचन्द्र जी महाराज ने हजारों व्यक्तियों को 'णमोत्थु ण' के पाठ का अभ्यास कराया है। इस पाठ से होने वाले लाभों को भी इस विशेषांक में विभिन्न व्यक्तियों के भावों के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है।

आहार शुद्धि - आचार्य श्री राजेन्द्रसूरीश्वर जी एवं मुनि श्री जयानन्दविजय जी द्वारा सम्पादित, **प्रकाशक**- श्री गुरु रामचन्द्र प्रकाशन समिति, भीनमाल, **प्राप्ति स्थान**- 1. श्री आदिनाथ राजेन्द्र जैन पेढी, साँथु, जिला-जालौर (राज.), फोन नं. 02973-254221, 2. बाकरा गांव- 94134-65068, भीनमाल- 02969-2220387 आदि। **पृष्ठ**- 180, **मूल्य**-उल्लेख नहीं, **वर्ष**-उल्लेख नहीं।

आचार्य श्री राजेन्द्रसूरीश्वर जी ने आहार-सम्बन्धी सामग्री का जो संकलन किया था, उससे समय-समय पर पुस्तक प्रकाशित होती रही। श्री जयानन्दविजय जी द्वारा उसी का पुनः सम्पादन कर 'आहार शुद्धि' पुस्तक तैयार की गई है। गुजराती भाषा से इसका अनुवाद मुनि श्री दिव्यरत्नसागर जी ने किया है। इस पुस्तक के 79 अध्यायों में आहार शुद्धि को दृष्टि में रखकर विविध सामग्री संकलित है। जीवन के साथ आहार का घनिष्ठ सम्बन्ध है, अतः जीवन को सही ढंग से जीने के लिए आहार की शुद्धता, मर्यादा आदि पर ध्यान देना आवश्यक है। पुस्तक में प्रदत्त सही आहार के चयन एवं अभक्ष्य के वर्जन के सम्बन्ध में तथ्यात्मक एवं तार्किक विचार भी दिए गए हैं।

विष्कम्प दीपशिक्षा- पं. पद्मचन्द शास्त्री, **प्रकाशक**- वीर सेवा मंदिर, 21 दरियागंज, नई दिल्ली-110002, **पृष्ठ**- 336, **मूल्य**-20 रुपये, सन्-2006

दिगम्बर जैन विद्वान् पं. पद्मचन्द शास्त्री के द्वारा 'अनेकान्त' आदि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित 33 आलेखों का यह संकलन पण्डित जी के निश्चल आगमिक दृष्टिकोण को अभिव्यक्त करता है। पुस्तक का सम्पादन श्री प्रेमचन्द जैन ने किया है। पुस्तक में नमस्कार मंत्र, स्वस्तिक रहस्य, जैन ध्वज, दिगम्बरत्व को कैसे छला जा रहा है?, आगम के मूलरूपों में फेंबदल घातक है?, कैसर में तब्दील होती शौरसेनी की गाँठ, समयसार या समयपाहुड, परिग्रह के दलदल में फंसा अपरिग्रही धर्म आदि लेख उल्लेखनीय हैं।

गौतम की बन्दना- **संकलन एवं प्रकाशन**- गौतमराज सुराणा, चेन्नई, फोन नं.- 099405-58888, **पृष्ठ**-48 (आर्ट पेपर), **मूल्य**- उल्लेख नहीं, नवम्बर-2012

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के अवसर पर प्रकाशित इस सुन्दर पुस्तक में आचार्यप्रवर एवं उपाध्यायप्रवर की प्रशस्ति में भजन, स्तवन आदि संकलित हैं, जो पाठक पर अमित प्रभाव छोड़ते हैं।

समाचार-विविधा

विचरण-विहार एवं विहार दिशाएँ : एक नज़र में

(02 फरवरी, 2013)

- परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री : महारानी फार्म मानसरोवर जयपुर में सुख
हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 11 शान्तिपूर्वक विराजमान हैं। जयपुर के
उपनगरों को फरसने की सम्भावना है।
- परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी : मेड़तासिटी में सुख-शांतिपूर्वक
म.सा. आदि ठाणा 5 विराजमान हैं। अग्रविहार गोटन की ओर
सम्भावित है।
- साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती : सामायिक-स्वाध्याय भवन, घोड़ों का
श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा 7 चौक, जोधपुर में विराजमान हैं। जोधपुर
के उपनगरों फरसने की सम्भावना है।
- व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. : करावण जिला-झालावाड पधारे हैं।
आदि ठाणा 10 भवानी मण्डी-कोटा की ओर अग्र विहार
सम्भावित है।
- तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी : स्वाध्याय भवन, मेड़तासिटी में सुख शांति
म.सा. आदि ठाणा 4 पूर्वक विराजमान हैं। अग्र विहार बोरून्दा
होते हुए पीपाड़ की ओर संभावित है।
- विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. : महारानी फार्म मानसरोवर जयपुर विराज
आदि ठाणा 5 रहें हैं। जयपुर के उपनगरों को फरसने की
सम्भावना है।
- विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. : महावीरभवन सवाईमाधोपुर विराजमान
आदि ठाणा 5 हैं। पोरवाल क्षेत्र को फरसने की संभावना
है।
- व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवर जी : बागसूरी सुख शांतिपूर्वक विराजमान हैं।
म.सा. आदि ठाणा 3 अग्रविहार किराप होते हुए मसूदा की ओर
सम्भावित है।
- व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी : स्वाध्यायभवन सुभाषनगर, भीलवाड़ा में
म.सा. आदि ठाणा 7 सुख-शांतिपूर्वक विराजमान हैं।

भीलवाड़ा के उपनगरों को फरसने की संभावना है।

व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी : महारानी फार्म मानसरोवर विराज रहे हैं। म.सा. आदि ठाणा 3

जयपुर के उपनगरों को फरसने की सम्भावना है।

व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. : नागौर में सुख शांतिपूर्वक विराजमान हैं। आदि ठाणा 5

कुछ दिन नागौर विराजने की सम्भावना है।

व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. : सेलम तमिलनाडू में सुखशान्तिपूर्वक आदि ठाणा 7

विराजमान हैं। अग्रविहार विल्लीपुरम की ओर संभावित है।

व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलता जी : विल्लीपुरम तमिलनाडू में सुख शांतिपूर्वक म.सा. आदि ठाणा 4

विराजमान हैं। कुछ दिन यहाँ विराजने की सम्भावना है।

व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी : हड़को कॉलोनी औरंगाबाद विराज रहे हैं। म.सा. आदि ठाणा 5

औरंगाबाद के उपनगरों को फरसने की सम्भावना है।

व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी : परवणी सुख शान्ति-पूर्वक विराजमान हैं। म.सा. आदि ठाणा 4

अग्रविहार रैणी होते हुए अलवर की ओर सम्भावित है।

व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभा जी : स्वाध्यायभवन मेड़तासिटी में सुख शांति म.सा. आदि ठाणा 4

पूर्वक विराजमान हैं। अग्रविहार गोटन की ओर सम्भावित है।

सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभा जी : महारानी फार्म मानसरोवर जयपुर में म.सा. आदि ठाणा 5

विराजमान हैं। जयपुर के उपनगरों को फरसने की सम्भावना है।

व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा. : कुशालीधरा सुख शान्तिपूर्वक विराजमान आदि ठाणा 3

हैं। अग्रविहार श्योपुर मध्यप्रदेश की ओर संभावित है।

तीन दीक्षाओं की घोषणा

अक्षय तृतीया एवं दो दीक्षाएँ सवाईमाधोपुर में

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर ने 27 जनवरी, 2013 दीक्षा के दिन मुमुक्षु बहिन सुश्री

शीतलजी आंचलिया सुपुत्री श्री कांतिलाल जी आंचलिया, सुपौत्री श्री नेमीचन्द जी आंचलिया-शौरपुर की जैन भागवती दीक्षा वैशाख शुक्ला पंचमी 15 मई, 2013 को वैपेरी, चेन्नई में होने की स्वीकृति प्रदान की। सोने में सुहागा यह कि वीरपिता श्री नरेन्द्रमोहन जी जैन ने अपनी लाइली सुपुत्रियों मुमुक्षु प्रभा जैन एवं अन्तिमा जैन की दीक्षा हेतु आज्ञापत्र परम पूज्य आचार्य भगवन्त के श्री चरणों में सश्रद्धा समर्पित कर दीक्षा महोत्सव को पावन गरिमा प्रदान की। ज्ञातव्य है कि बड़ी दीक्षा के दिन 2 फरवरी 2013 को परमकृपालु आचार्यप्रवर ने दोनों विरक्ता बहनों की दीक्षा 15 मई 2013 को सवाईमाधोपुर में सम्पन्न होने की स्वीकृति प्रदान की है। इसके साथ ही अक्षय तृतीया 13 मई 2013 के पावन दिवस पर सवाईमाधोपुर विराजने की स्वीकृति सवाईमाधोपुर संघ को प्रदान की है। इससे सवाईमाधोपुर क्षेत्र हर्षित एवं प्रमुदित है।

जयपुर के मानसरोवर क्षेत्र में मुमुक्षु सुश्री आशा जी छल्लाणी की जैन भागवती दीक्षा 27 जनवरी को सानन्द सम्पन्न

पौष शुक्ला पूर्णिमा रविवार, 27 जनवरी, 2013 को गुलाबी नगरी जयपुर के मानसरोवर क्षेत्र में जिनशासन गौरव, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से मुमुक्षु सुश्री आशा जी छल्लाणी, असावरी/चेन्नई की जैन भागवती दीक्षा सानन्द सम्पन्न हुई। आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा. आदि ठाणा 11 एवं परम विदुषी महासती श्री सुशीला कंवर जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा., सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 12 के सान्निध्य में सुबोध लॉ कालेज के निकट परिष्कार महाविद्यालय प्रांगण, जयपुर में पावन प्रव्रज्या महोत्सव हजारों भक्तों के जयनादों के बीच उमंग उल्लास से सम्पन्न हुआ।

शोभा-यात्रा

26 जनवरी, 2013 को प्रातः 9.00 बजे मुमुक्षु बहन आशा जी छल्लाणी की शोभा यात्रा का भव्य आयोजन रखा गया, जिसमें बैण्ड की सुमधुर ध्वनियों के साथ सुसज्जित गाड़ियों में विरक्ता बहन एवं उनके परिवारजन विराजित थे। शोभायात्रा में विशाल जनसमूह ने यात्रा के प्रारम्भ से लेकर अन्त तक जय-जयकारों के गगनभेदी जयनाद करते हुए और मंगल गीत गाते हुए तथा गुरु हस्ती, गुरु हीरा, गुरु मान के सन्देश उच्चारित करते हुए शोभायात्रा का आकर्षण बनाये रखा। हजारों गुरुभ्राता एवं श्रद्धालुजन कतारबद्ध हो

अनुशासित रूप से शोभायात्रा में सम्मिलित थे। मानसरोवर क्षेत्र के प्रमुख मार्गों से निकलती हुई शोभायात्रा का भव्य नज़ारा देखकर दर्शक भावाभिभूत हो गये। शोभायात्रा किरण पथ मानसरोवर स्थित महावीर भवन में जाकर सम्पन्न हुई। शोभायात्रा में सम्मिलित मुमुक्षु बहन एवं वीर परिवारजनों तथा उपस्थित महानुभावों ने दर्शन-वन्दन के साथ आचार्यप्रवर से मंगल पाठ श्रवण किया।

अभिनन्दन समारोह

26 जनवरी 2013 को अपराह्न 1.30 बजे मुमुक्षु बहन आशाजी एवं उनके परिवारजनों का अभिनन्दन समारोह अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ जयपुर, श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संस्था, मानसरोवर, जयपुर एवं श्री पद्मावती पोरवाल जैन समिति, जयपुर मानसरोवर, जयपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में परिष्कार महाविद्यालय के प्रांगण में आयोजित हुआ।

अभिनन्दन समारोह की अध्यक्षता संघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री कान्तिलाल जी चौधरी-धुलिया ने की। संघ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय श्री सुमेरसिंह जी बोथरा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

दीक्षा-महोत्सव के स्वागताध्यक्ष पूर्व न्यायाधिपति श्री जसराज जी चौपड़ा-जयपुर, शासन सेवा समिति के सह-संयोजक श्री कैलाशचन्द जी हीरावत-जयपुर, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के महामंत्री श्री आनन्द जी चौपड़ा-जयपुर, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री कैलाशमल जी दुगड़-चेन्नई, अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती पूर्णिमा जी लोढ़ा-जयपुर, अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जितेन्द्र जी डागा-जयपुर, संघ के क्षेत्रीय प्रधान श्री अशोक जी सेठ-जयपुर, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जयपुर के अध्यक्ष श्री प्रकाशचन्द जी कोठारी एवं मंत्री श्री विनयचन्द जी डागा, श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संस्था मानसरोवर जयपुर के अध्यक्ष श्री देवेन्द्र कुमार जी सामोता एवं मंत्री श्री पारसमल जी दरड़ा, श्री पद्मावती पोरवाल जैन समिति, मानसरोवर जयपुर के अध्यक्ष श्री नरेन्द्र कुमार जी जैन, मंत्री श्री सुधीर कुमार जी जैन को मंच पर ससम्मान आमन्त्रित किया गया। विरक्ता बहन एवं उनके दादा-दादी तथा माता-पिता सहित परिवारजनों को आत्मीयता से आमंत्रित कर मंचासीन करवाया गया।

परिष्कार महाविद्यालय का विशाल मंच अत्यन्त भव्यता लिये हुए था। मंच के सामने श्रावक-श्राविकाओं के बैठने के लिये कुर्सियाँ कतारबद्ध रखी हुई थीं। समारोह में विशाल

जनमेदिनी होने से कई भाई-बहनों ने खड़े-खड़े अभिनन्दन कार्यक्रम का आनन्द लिया। अभिनन्दन समारोह में मंगलाचरण की प्रस्तुति श्राविका मण्डल ने दी, जिसके बोल थे हम गायें गीत प्रभु का चरणों में ध्यान लगाये। स्वागत गीत श्राविका मण्डल की सदस्याओं ने समवेत स्वर में प्रस्तुत किया, जिसके बोल थे- आओ स्वागत गीत गायें, मन की वीणा से जगायें, आई अंगना खुशियाँ अपार, पधारे अतिथिगण आज। स्वागताध्यक्ष पूर्व न्यायाधिपति श्री जसराज जी चौपड़ा ने सभी अभ्यागतों का स्वागत करते हुए कहा कि छल्लाणी परिवार जिन्होंने अपने कलेजे की कोर को रत्न संघ को सुपुर्द किया, उसके लिए मैं छल्लाणी परिवार का हार्दिक अभिनन्दन, सत्कार एवं सम्मान करता हूँ।

मुख्य अतिथि श्री सुमेरसिंह जी बोथरा एवं अध्यक्ष श्री कान्तिलाल जी चौधरी का माला व शाल द्वारा बहुमान किया गया। कार्यक्रम के अन्तर्गत विरक्ता बहन के वीरदादा श्री घिसूलाल जी छल्लाणी, वीरदादी श्रीमती कमला जी छल्लाणी, वीर पिता श्री प्रकाशमल जी छल्लाणी, वीरमाता श्रीमती विमलादेवी जी छल्लाणी सहित सभी वीर परिवारजनों में पुरुष सदस्यों का माला व शाल द्वारा एवं महिला सदस्यों का माला व चुन्दड़ी ओढ़ाकर बहुमान किया गया। वीर परिवार के दादा-दादी और माता-पिता को संघ की ओर से रजत पट्टिका पर अंकित अभिनन्दन-पत्र भी ससम्मान भेंट किया गया।

संयम-मार्ग की पथिका मुमुक्षु बहिन आशा जी छल्लाणी का स्वागत-बहुमान माला व चुन्दड़ी से श्राविका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती पूर्णिमा जी लोढ़ा द्वारा किया गया। विरक्ता बहन को दिए जाने वाले अभिनन्दन-पत्र का वाचन श्री त्रिलोकचन्द जी जैन जयपुर ने किया।

मुख्यअतिथि श्री सुमेरसिंह जी बोथरा, संघ उपाध्यक्ष श्री कान्तिलाल जी चौधरी एवं मंचासीन पदाधिकारियों ने अभिनन्दन-पत्र मुमुक्षु बहिन के कर कमलों में समर्पित किया। श्री विनयचन्द जी डागा संघ मंत्री श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जयपुर ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए।

विरक्ता बहन आशा जी छल्लाणी ने अध्यात्म-जीवन की गंगा बहाने वाले आचार्य भगवन्त, उपाध्याय भगवन, संत-सतीमण्डल के चरणों में वन्दन करते हुए अपने मनोभाव व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि मेरे पारिवारिक लोगों ने संस्कार दिए। माता-पिता मेरी परीक्षा लेते रहे, किन्तु संयम में मेरी दृढ़ता रही। देवावि तं नमसंति, ऐसा है संयम। आचार्य भगवन्त ने अनन्त कृपा कर मुझे संयम-मार्ग पर आगे बढ़ाया। आज मेरा मनोरथ

पूर्ण होने जा रहा है। गौतम स्वामी का ब्रांड-ज्ञान, नन्दीषेण जी का ब्रांड-सेवा को अपनाना यही प्रेरणा मेरे परिवारजनों ने मुझे सतत प्रदान की।

वीर दादा श्री घीसुलाल जी छल्लाणी ने अपनी भावना व्यक्त करते हुए कहा कि छल्लाणी परिवार का अहोभाग्य है कि हमारे परिवार से एक रत्न रत्नसंघ में आचार्य श्री हीराचन्द जी म.सा. के सान्निध्य में दीक्षित होने जा रहा है। हम परिवारजन आचार्यप्रवर के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करते हैं। हम चाहते हैं कि आशा की तरह हमारे जीवन में भी संयम का दीप जले।

वीरपिता श्री प्रकाशमल जी छल्लाणी ने भावाभिव्यक्ति करते हुए कहा कि हमारे परिवार की कुल दीपिका आशा छल्लाणी साढ़े तीन वर्ष में ज्ञान-ध्यान सीखते हुए संयम में आगे बढ़ रही है। आचार्य भगवन्त ने जो महती कृपा हमारे परिवार पर की है वह आगे भी बनी रहे। आशा अपने संयम मार्ग में सिंहनी की तरह निरन्तर आगे बढ़ती रहे। जन्म-मरण के बन्धनों को तोड़कर शीघ्र शिवपथ को प्राप्त करे।

वीर माता श्रीमती विमला जी छल्लाणी ने अपनी ओजस्वी अभिव्यक्ति देते हुए कहा कि आचार्य श्री जयमल जी म.सा. का जीवन चरित्र सुना तो आशा को वैराग्य आया। मैंने कठोर परीक्षा ली, मेरी हार होती गई, और आशा जीतती चली गई। कल आशा की आशा पूर्ण होने जा रही है। आशा! तुम छल्लाणी परिवार की आन-बान-शान को सुरक्षित रखना। तुम्हारे संयम जीवन को देखकर मुझे भी वैराग्य आ जाय। हमेशा गुरुणी मैया के साथ रहना। अपने गुरु को भगवान समझना। जिस लक्ष्य से वैराग्य प्राप्त किया, उस पर दृढ़ता से आगे बढ़ना। मैंने बहुत परीक्षा ली, तुम सफल परीक्षार्थी साबित हुई। आशा! आप सुगन्धित पुष्प बनें, यही मंगल भावना है।

वीर बहन सुनीता जी छल्लाणी ने एक मधुर गीतिका प्रस्तुत की, जिसके बोल थे-
 तुम पर पूरा छल्लाणी परिवार बलिहारी है।
 संयम की है पथिक आशा तुम्हें प्रथम वन्दना हमारी है।।

वीर बहन सुमन जी गेलड़ा ने अपनी भावना व्यक्त करते हुए कहा कि- जिस दिन विरक्ति हो जाये उसी दिन संयम मार्ग पर आगे बढ़ जाना चाहिए। इण्टरनेट के युग में भी मेरी बहिन संयम पथ पर आगे बढ़ने जा रही है। दीक्षा-दिवस पर आपको शत-शत बधाई है। छोटी बहन **कुमकुम जी छल्लाणी** ने भावपूर्ण दोहा प्रस्तुत किया।

वीर बड़े पिता श्री सायरचन्द जी छल्लाणी ने कहा कि- सौभाग्य की बात है कि हमारे परिवार से प्रथम दीक्षा होने जा रही है। विरले ही प्राणी होते हैं जो आत्मा का फायदा

सोचते हैं। संसार के क्लाम करते-करते हम तो कर्म बन्ध करते ही हैं, किन्तु आशा जी! संयम मार्ग के प्रत्येक कार्य में आप कर्म-निर्जरा कर सकती हैं। उत्साहित होकर **मुमुक्षु सुश्री नेहा खिंवरसरा**, माण्डल ने भी अपनी भावाभिव्यक्ति सुन्दर शब्दों में व्यक्त की।

श्राविका मण्डल की राष्ट्रीय अध्यक्षा **श्रीमती पूर्णिमा जी लोढ़ा** ने आशीर्वचन प्रदान करते हुए कहा कि आशा जी सांसारिक जीवन को छोड़कर संयम जीवन अंगीकार करने जा रही है। संयम जीवन में निरन्तर आगे बढ़ती रहे, यही मंगल मनीषा है।

मुख्य अतिथि श्री सुमेरसिंह जी बोथरा ने कहा कि आशा जी के पिता श्री प्रकाशचन्द जी छल्लाणी से महावीर नगर, जयपुर में मिलना हुआ। उन्होंने कहा कि आशा की दीक्षा कराने की भावना है। मुझे धर्मदलाली का सौभाग्य मिला। मैं अलीगढ़ गया, सतियाँ जी से एवं आचार्य भगवन्त से निवेदन किया, आज इनका अभिनन्दन हो रहा है। संयम लेना सरल है, किन्तु इसे निभाना, सबके साथ प्रेमपूर्वक रहते हुए अपने लक्ष्य को प्राप्त करना कठिन है। अतः आप जागरूक रहकर संयमपथ पर निर्भयता से आगे बढ़ती रहें।

संघ महामंत्री **श्री आनन्द जी चौपड़ा** ने रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना** द्वारा प्रेषित संदेश प्रस्तुत किया। साथ ही महामंत्री जी ने वीर परिवार, मुख्यातिथि एवं पधारे हुए सभी मेहमानों का धन्यवाद एवं आभार ज्ञापित किया। जयपुर संघ एवं मानसरोवर संघ के पदाधिकारियों तथा उनकी पूरी टीम की सुन्दर व्यवस्था के लिये तथा स्थान उपलब्ध कराने के लिए परिष्कार महाविद्यालय एवं सुबोध लॉ कॉलेज के ट्रस्टियों का भी धन्यवाद ज्ञापित किया। जय-जयकार के जयकारों के साथ अभिनन्दन-समारोह सानन्द सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का संचालन आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान के अधिष्ठाता **श्री दिलीप जी जैन** ने किया।

अभिनिष्क्रमण यात्रा एवं दीक्षा-समारोह

दिनांक 27 जनवरी 2013 का मंगल प्रभात जन-जन को हर्षित-प्रमुदित करने वाला रहा। आगन्तुकों ने प्रातः आचार्यप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द के दर्शन-वन्दन किए। सैकड़ों लोग वीर परिवार के निवास-स्थान पर पहुँचे। जहाँ से अभिनिष्क्रमण यात्रा प्रारम्भ हुई। अभिनिष्क्रमण यात्रा में पारिवारिक-परिजन, इष्ट-मित्र एवं विभिन्न श्रीसंघों से पधारे भाई-बहिन तो थे ही, जयपुर एवं आसपास के संघ-समाज और विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के महानुभावों ने भी अभिनिष्क्रमण यात्रा की शोभा बढ़ायी। अन्त में अभिनिष्क्रमण यात्रा गुरुचरणों में परिष्कार महाविद्यालय प्रांगण पहुँची, जिसके पूर्व हजारों भाई-बहिनों ने अपना स्थान ग्रहण कर लिया था। सामायिक-साधना करने वालों की बैठने

की अलग व्यवस्था थी, तो सबसे आगे वीर परिवारजनों के विराजने हेतु पूर्व से व्यवस्था सुनिश्चित थी। प्रातः 9 बजे परिष्कार महाविद्यालय के प्रांगण में आचार्यप्रवर एवं संत-सतीवृन्द पधार गए थे। तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी द्वारा प्रस्तुत वैराग्यपरक भजन से प्रवचन सभा का शुभारम्भ हुआ। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर, महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी, तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी, श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी, श्रद्धेय श्री मनीषमुनि जी, महासती श्री यशप्रभा जी ने दीक्षा-महोत्सव में उपस्थित जनसमुदाय को मंगलमय उद्बोधन फरमाते हुए उत्कृष्ट वैराग्य एवं संयम-भावना की महत्ता पर प्रकाश डाला तथा ज्ञान-दर्शन-चारित्र की आराधना करने की प्रभावी प्रेरणा की। आचार्यप्रवर एवं सन्तप्रवरों ने दीक्षा महोत्सव के अवसर पर समागत महानुभावों से कुछ न कुछ त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण करने की प्रभावी प्रेरणा की। वेश परिवर्तन के पश्चात् लगभग 10 बजे मुमुक्षु बहिन गुरुचरणों में उपस्थित हुईं। दीक्षार्थी बहिन ने आचार्यप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द को वन्दन-नमन किया। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने साध्वीवेश में समुपस्थित दीक्षार्थी बहिन से कहा कि जब तक आप 'करेमि भन्ते' के पाठ से दीक्षित न हों तब तक माता-पिता के चरण स्पर्श कर सकते हैं। यहाँ उपस्थित सभी से क्षमायाचना भी कर लें। दीक्षार्थी बहिन ने माता-पिता, पारिवारिकजन एवं उपस्थित जनसमुदाय से आशीर्वाद लिया और क्षमायाचना की।

आचार्यप्रवर ने माता-पिता एवं पारिवारिकजनों से खड़े होकर दीक्षा की अनुज्ञा चाही तो विरक्ता बहिन के माता-पिता, दादा-दादी, भाई-भाभी, चाचा-चाची एवं अन्य परिजनों ने खड़े होकर सहर्ष दीक्षित करने की आज्ञा प्रदान की। आचार्यप्रवर के संकेत पर जयपुर संघ, मानसरोवर संघ एवं रत्नसंघ के शीर्ष पदाधिकारियों ने भी खड़े होकर अनुमति प्रदान की। दीक्षार्थी बहिन द्वारा सभी संत-सतीवृन्द को वन्दन-नमन करने के बाद आचार्यप्रवर ने नमस्कार महामंत्र, इच्छाकरणं, तस्सउत्तरी का पाठ बोलकर दीक्षार्थी बहिन को आलोचना-सूत्र के पाठ से ध्यान करवाया। कायोत्सर्गशुद्धि-सूत्र के अनन्तर संतरत्नों ने समवेत स्वर में लोगस्स का पाठ उच्चारित किया।

जैसे ही आचार्यप्रवर ने 'करेमि भन्ते' के पाठ से बहिन आशा जी को सावद्य योगों का तीन करण-तीन योग से जीवन पर्यन्त के लिए प्रत्याख्यान करवाया, जनसमुदाय जो अपलक दीक्षा-विधि देख-सुन रहा था, ने श्रमण भगवान महावीर स्वामी की जय, प्रतिपल स्मरणीय परमाराध्य आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. की जय, आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की जय, उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. की जय, सभी संत-सतीवृन्द की जय, नवदीक्षिता महासती श्री आशा जी म.सा. की

जय जैसे अनेक जयघोष स्वप्रेरित भावना से गुंजायमान करते हुए दीक्षा-महोत्सव की अनुमोदना का लाभ लिया। भक्तों ने गुरु हस्ती, गुरु हीरा-मान के नाम से प्रचलित नारों का उच्चारण भी भावना पूर्वक किया। जय-जयकारों के गगनभेदी जयनाद करते हुए जनसमुदाय श्रद्धावन्त था, दीक्षा और संयम के महत्त्व के प्रति आबाल-वृद्ध सबकी शुभभावना थी। नमोत्सु णं के साथ दीक्षा-विधि परिपूर्ण होने पर नवदीक्षिता साध्वी महासती वृन्द के बीच में सुशोभित हुई। प्रणाम करने वाली स्वयं प्रणम्य, श्रद्धेय एवं वन्दनीय बन गई। यह है भागवती श्रमणी दीक्षा का प्रभाव, संयम प्रवेश का प्रभाव। इस अवसर पर परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने सारगर्भित प्रवचन में फरमाया- “संसार में अनेक मंत्र हैं, तंत्र हैं जो विघ्न निवारण कर सकते हैं। शक्ति का संचरण भी कर सकते हैं। मंत्रों के स्मरण से, चिन्तन से, मनन से तीव्र बुखार उतर सकता है। बिच्छु और साँप का जहर उतारने वाले आपने देखें होंगे, सुने होंगे। आकाश में उड़ान भरने वाले मंत्र सुने होंगे। मंत्रों से वर्षा हो सकती है। सुख-शान्ति और आनन्द देने वाले कई मंत्र हो सकते हैं, पर भगवान ने एक ऐसा मंत्र बताया जो आत्मा को पवित्र बना सकता है, पूज्य बना सकता है, आराधक बना सकता है। भगवान ने जो मंत्र बताया वह पापों को दूर भगा सकता है। वह मंत्र है ‘सामायिक का’। वह मंत्र है ‘समाधि का’ वह मंत्र है ‘समरसता का’। इस मंत्र को दीक्षा मंत्र भी कह सकते हैं।” जो बहन थोड़ी देर पहले आप लोगों को चरण वन्दन कर रही थी। दीक्षा मंत्र ग्रहण करते ही वह आप सबकी वन्दनीय हो गई। यह है दीक्षा मंत्र का प्रभाव।

दीक्षा-महोत्सव एवं प्रवचन का कार्यक्रम लगभग 12.00 बजे तक चला। आचार्यप्रवर-प्रभृति संत-सतीवृन्द के अतिशय प्रभाव से विशाल जनमेदिनी में स्वप्रेरित अनुशासन तो बना ही रहा, अपूर्व शांति, उल्लास और उत्साह भी देखा गया।

व्रत-प्रत्याख्यानों की श्रद्धा समर्पित करने वालों से अनुरोध किया गया कि वे इस अवसर पर आचार्यप्रवर से व्रत-प्रत्याख्यान अवश्य अंगीकार कर, संयम व त्याग का सार्थक अनुमोदन करें। कार्यक्रम संचालक श्री प्रकाश जी सालेचा ने साध्वीप्रमुखा, शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. द्वारा प्रेषित आशीर्वचन “मुमुक्षु आशा दीक्षा लेकर उतरोत्तर ज्ञान-दर्शन-चारित्र की अभिवृद्धि करें तथा भगवान महावीर की शासन परम्परा व रत्नसंघ की परम्परा की आचार मर्यादा को सुरक्षित रखते हुए शासन एवं संघ की गौरव गरिमा को आगे बढ़ाये, यही मंगलमनीषा है।” तथा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना द्वारा प्रेषित मंगल संदेश-“आज

का मंगलमय प्रसंग बहन आशाजी छल्लाणी गुरुदेव के मुखारविन्द से जैन भागवती दीक्षा अंगीकार कर संयम जीवन में प्रवेशकर नवकार महामंत्र के पाँचवें पद णमो लोए सव्वसाहूणं पर अधिष्ठित होने जा रही है। मैं देववशात् अपनी पारिवारिक परिस्थिति के कारण तन से आपके बीच उपस्थित नहीं हूँ, पर मन व आत्मभावों से आपसब लोगों के बीच हूँ। बहिन आशा! आपकी आशा पूर्ति का यह पल निरन्तर आपको अपने लक्ष्य प्राप्ति की ओर सजग रखे तथा आपका उज्ज्वल विमल यशस्वी संयम-जीवन भव्य जीवों की आशा जगाएं तथा उन्हें अपने मनोरथ सिद्धि की ओर बढ़ने की ओर प्रेरित करे, यही मंगलकामना है” को पढ़कर सुनाया। संघ के पूर्व अध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा ने आचार्य भगवन्त के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए कहा कि आचार्यप्रवर ने महती कृपा करके चातुर्मास के साथ वीरपरिवार सम्मान समारोह रत्नसंघीय वृहद् अधिवेशन एवं अब दीक्षा-महोत्सव का लाभ जयपुर श्रीसंघ को प्रदान किया, इसके लिए जयपुर संघ सदैव आपका आभारी रहेगा। अन्त में अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के महामंत्री श्री आनन्द जी चौपड़ा ने दीक्षाप्रदाता आचार्यप्रवर सहित पूज्य संत-सतीवर्ग के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की एवं दीक्षा महोत्सव में पधारने वाले तथा दीक्षा-महोत्सव को सानन्द सम्पन्न करवाने में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग प्रदान करने वाले सभी महानुभावों का धन्यवाद-आभार ज्ञापित किया।

कार्यक्रम संचालक के द्वारा सूचनाएं प्रसारित की गईं। आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से मांगलिक श्रवण कर जनसमुदाय दूर से वन्दन-नमन करते हुए हर्ष-हर्ष, जय-जय, गुरु हीरा-गुरु मान के जय-जयकारों से प्रांगण को गुंजायमान करता रहा। बाद में सुबोध लॉ कॉलेज प्रांगण में दीक्षा महोत्सव में पधारे सभी महानुभावों ने सुमधुर भोजन ग्रहण किया।

जयपुर संघ एवं मानसरोवर संघ के आबाल-वृद्ध सभी समाज बन्धु पूरे दो दिन दीक्षा-महोत्सव के पावन-पुनीत प्रसंग पर हर्षित-उल्लसित भावों से कार्यक्रमों की क्रियान्विति में सजग रहे। समीपवर्ती-सुदूरवर्ती क्षेत्रों के श्रीसंघों एवं देश के कोने-कोने से पधारे श्रद्धालुजनों की कार्यक्रम में सक्रिय भागीदारी बनी रही। दीक्षा-महोत्सव कार्यक्रम में हर आगत ने जयपुर एवं मानसरोवर श्रीसंघ की आत्मीयता, अपनत्व और सेवाभावना की सराहना की।

दीक्षा-महोत्सव के पावन-प्रसंग पर छल्लाणी परिवार द्वारा विभिन्न संस्थाओं को अर्थ सहयोग की घोषणा की गई, जो इस प्रकार है- 125,000/- सामायिक-स्वाध्याय

भवन सहायता कोष, 31,000/- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जयपुर, 21,000/- श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संस्था मानसरोवर, जयपुर, 21,000/- जीव कल्याण परिषद् (जीवदया हेतु), 5,100/- जिनवाणी मासिक पत्रिका।

बड़ी दीक्षा 2 फरवरी को सम्पन्न

नवदीक्षिता साध्वी जी की बड़ी दीक्षा माघ कृष्णा षष्ठी, शनिवार, 2 फरवरी, 2013 को परम आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से महारानी फार्म के सिडलिंग स्कूल में सम्पन्न हुई। पोरवाल संघ, महारानी फार्म द्वारा सोत्साह इस आयोजन का लाभ लिया गया। नवदीक्षिता साध्वी जी का नाम 'महासती आनन्दप्रभा' रखा गया है।

पार्श्वनाथ जयन्ती पर विविध कार्यक्रम

पौष कृष्णा 10 दिनांक 7 जनवरी, 2013 को सम्पूर्ण देश के सभी जैन सन्तों एवं अनुयायियों ने 23 वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ की जयन्ती मनायी। सन्तों एवं वक्ताओं द्वारा उनके जीवन की विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया तथा अनेकविध तप-त्याग के साथ धर्माराधना सम्पन्न हुई। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा., साध्वीप्रमुखा श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि सन्त-सतीवृन्द के सान्निध्य में भी यह दिवस तप-त्याग के साथ मनाया गया।

आचार्य हस्ती के 103 वें जन्म-दिवस पर

गुणगान एवं धर्माराधना

अध्यात्मयोगी युगमनीषी आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के 103 वें जन्म-दिवस पर पौष शुक्ला चतुर्दशी 25 जनवरी 2013 को देश-विदेश के विभिन्न ग्राम-नगरों में उनकी गुणों पर प्रकाश डाला गया तथा सामायिक, दयाव्रत, उपवास, आर्यंबिल, पौषध आदि की धर्माराधना हुई। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के सान्निध्य में जयपुर के मानसरोवर में तथा उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. की सन्निधि में मेड़ता में आचार्यप्रवर पूज्य हस्ती का जन्म-दिवस त्यागतप के साथ मनाया गया। इसी प्रकार शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के सान्निध्य में नेहरू पार्क जोधपुर में विशेष धर्माराधना के साथ यह पर्व मनाया गया। जहाँ-जहाँ पर महासती मण्डल विराजमान था वहाँ-वहाँ धर्माराधन एवं गुणानुवाद की सरिता बही। कतिपय स्थानों से प्राप्त रिपोर्ट संक्षिप्त में दी जा रही है-

कुशतला:- विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. एवं व्याख्यात्री महासती रुचिता जी म.सा. आदि ठाणा 8 के संयुक्त सान्निध्य में सवाईमाधोपुर क्षेत्र के कुशतला ग्राम में आचार्य

प्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के 103 वें जन्म-दिवस पर विशेष धर्माराधन हुआ। महासती मण्डल का मांगलिक प्रवचन एवं गुणानुवाद कार्यक्रम प्रातः 9.30 बजे से दिन में 1.00 बजे तक चला। लगभग 500 एकाशन हुए जिनमें से 100 एकाशन कुशतला वासियों ने किए। 35 उपवास एवं 1 बेले की एवं 5 की तपस्या हुई। कतिपय अष्टप्रहर पौषध भी हुए। निकटवर्ती 44 ग्राम-नगरों से लगभग 1500 श्रावक-श्राविकाओं ने इस जन्म-दिवस पर प्रवचन-वंदन आदि का लाभ लिया। अनेक जैन-अजैन युवाओं ने बीड़ी, गुटखा एवं सप्तकुव्यसन के त्याग किए। श्री सौभाग्यमल जी जैन ने एकाशन के मासखमण का प्रत्याख्यान लिया तथा 7-8 एकाशन के तेले हुए। -सुरेशचन्द्र जैन, मंत्री

पनरुटी (तमिलनाडू)- महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. के सान्निध्य में आयोजित गुणानुवाद सभा में व्याख्यात्री महासती वर्या ने कहा कि गुरुदेव आचार्य श्री हस्ती पंचाचार के पालक एवं अष्ट प्रवचन माता के सजग आराधक थे। उन्होंने पंचाचार के सभी पक्षों को गहराई से लिया। इसी कारण उनका व्यक्तित्व चामत्कारिक बन गया था। महासती प्रतिष्ठा जी म.सा. ने गुरु हस्ती गुण कीर्तन से सभासदों को मुग्ध कर दिया। इस अवसर पर विशेष रूप से आमंत्रित आनन्द तीर्थ प्रतिष्ठान के सी.ई.ओ. डॉ. दिलीप धींग ने कहा कि पिछली सदी में मारवाड़ में जन्मे दो महान् संतों आचार्य हस्ती और मरुधर केसरी श्री मिश्रीमल जी ने जन-जीवन को गहराई तक प्रभावित किया था। डॉ. धींग ने कहा कि आचार्य हस्ती ने सामायिक और स्वाध्याय का संदेश दिया और मरुधर केसरी ने मानव सेवा और जीवदया की अलख जगाई। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के कार्याध्यक्ष श्री विक्रम बाघमार ने कहा कि संतों के जन्मदिवस हमें जगाने आते हैं। श्री अशोकराज सिंघवी ने बताया कि पनरुटी संघ में मूर्तिपूजक, स्थानकवासी और दिगम्बर सभी मिलजुलकर हर कार्यक्रम करते हैं। महासती भावना जी और प्रीति जी ने भी विचार रखे। श्री मदनचन्द कोचर ने कार्यक्रम का संचालन किया। -मदनचन्द लूंकड़, अध्यक्ष

सूरत- सिटी लाइट सूरत में आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के आज्ञानुवर्ती शासनदीपक श्री अशोक मुनि जी म.सा. के सान्निध्य में आचार्य श्री हस्ती का 103 वां जन्म-दिवस 5 सामायिक, सामूहिक एकाशन, उपवास, बेला एवं तेले की तपस्या के साथ उत्साहपूर्वक मनाया गया। तपस्वी राज श्री अशोकमुनि जी के उस दिन 25 वां उपवास था और 43 वां मासखमण चल रहा था। तपस्या होते हुए भी लगभग 1.30 घण्टे तक उन्होंने आचार्य भगवन्त के गुणों पर प्रवचन फरमाया। इस अवसर पर 300 श्रावक-श्राविकाओं ने सामायिक साधना की। सभा में रत्नसंघ सूरत के अध्यक्ष श्री लाभचन्द जी नाहर एवं युवारत्न श्री संजीव जी नाहर ने आचार्य श्री के पूरे जीवन एवं गुणों का भावपूर्ण वर्णन किया।

श्राविका श्रीमती लाडश्री नाहर, पदमा जी नाहर आदि ने भजन प्रस्तुत किये। साधुमार्गी संघ सूरत के संघरक्षक श्री इन्दरचन्द जी वैद और मंत्री श्री सुभाष जी पगारिया ने आचार्य भगवन्त का गुणानुवाद किया। साधुमार्गी महासती श्री ललितप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 3 का भी सान्निध्य प्राप्त हुआ। उन्होंने भी आचार्यप्रवर के गुणगान किए। इस कार्यक्रम से रत्नसंघ एवं समतासंघ के प्रेम में अभिवृद्धि हुई।

जलगांव- श्री जैन रत्न युवक परिषद् जलगांव द्वारा आचार्य हस्ती का 103 वां जन्मदिवस उमंग उत्साह एवं तप त्याग के साथ मनाया गया। आमंत्रित वक्ता श्री नेमीचन्द जी कर्णावट भोपालगढ़ ने आचार्य हस्ती के जीवन और उनकी विशेषताओं पर प्रकाश डालने के साथ सामायिक एवं स्वाध्याय की महत्ता पर विचार व्यक्त किए। उनके 50 मिनट के वक्तव्य से श्रोता भाव-विभोर हो उठे। सकल जैन संघ के अध्यक्ष श्री दलीचन्द जी चोरडिया, श्रावक रत्न श्री कस्तुरचन्द जी बाफना, शासनसेवा समिति के संयोजक श्री रतनलाल जी बाफना आदि ने भी विचार व्यक्त किए। श्री जैन रत्न युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री प्रशांत जी पारख ने प्रमुख वक्ता का सम्मान किया। समारोह में श्री महावीर जैन स्वाध्याय विद्यापीठ जलगांव द्वारा आयोजित प्राकृत परीक्षा में उत्तीर्ण हुए परीक्षार्थियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए गए।

निफाड़ (नाशिक)- श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ निफाड़ द्वारा अरिहंत मार्गी आचार्यप्रवर श्री ज्ञानचन्द जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी साध्वी रत्ना श्री ललिता श्री जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में आचार्य हस्ती का 103 वां जन्मदिवस सामायिक दिवस के रूप में मनाया गया। महासती अनुपमा श्री जी ने आचार्य श्री हस्ती के जीवन वृत्त एवं सद्गुणों पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर सामायिक साधना एवं कई त्याग प्रत्याख्यान हुए। महासती जी की प्रेरणा से बालक-बालिकाओं का तीन दिवसीय धार्मिक शिविर आयोजित हुआ।

हिण्डौनसिटी- परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के 103 वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में श्री जैन रत्न युवक परिषद् के तत्त्वावधान में 25 जनवरी 2013 को रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया, जिसके मुख्य अतिथि पंचायत समिति के प्रधान कृपाल जी मीणा थे तथा अध्यक्षता श्री शीतलप्रसाद जी जैन ने की। शिविर में 83 रक्तदाताओं ने रक्त दान किया साथ ही सामायिक स्वाध्याय एवं व्रत उपवास भी किए गए।

जोधपुर- पूज्य आचार्यप्रवर 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. के 103 वें जन्मदिवस को श्री जैन रत्न युवक परिषद् जोधपुर द्वारा जीवदया दिवस के रूप में मनाया गया। 25 जनवरी 2013 को 165 बकरों को एक साथ अभयदान दिलाया गया, जो अपने आप में एक

उपलब्धि है। इसी कार्यक्रम में यह निश्चय किया गया कि बकरे छुड़ाने की यह योजना अब दीक्षा अर्द्धशती वर्ष पूर्ण होने तक निरन्तर चलेगी।

-धीरज डोसी, संयोजक-निर्व्व्यसनता एवं जीवदया

देश भर में स्वाध्याय संगोष्ठियों का आयोजन

आचार्य भगवन्त 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. के 103वें जन्म-दिवस के पावन अवसर पर श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा देशभर में विभिन्न स्थानों पर स्वाध्याय-संगोष्ठियों का आयोजन 25 जनवरी 2013 को किया गया। संगोष्ठी में “स्वाध्याय एवं स्वाध्यायी की महत्ता” विषय पर संत-सती मण्डल के सान्निध्य में एवं अन्य स्थलों पर मनीषियों ने विस्तृत विवेचन किया। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के पावन सान्निध्य में जयपुर में तथा उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के पावन सान्निध्य में मेड़ता सिटी में संगोष्ठी का आयोजन हुआ। पोरवाल क्षेत्र में संभागीय स्तर पर कुश्तला में संगोष्ठी का आयोजन हुआ। कुश्तला में आचार्य भगवन्त के जन्म-दिवस के अवसर पर पोरवाल क्षेत्र के 44 स्थानों से श्रावक-श्राविकाएँ सम्मिलित हुए। जोधपुर में साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के पावन सान्निध्य में संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त कोटा, पहरसर, नदबई, कोलकाता, मुम्बई, भोपालगढ़, इन्दौर, नागपुर, भीलवाड़ा, नवसारी, ब्यावर, बेंगलुरु, करौली, गंगापुर, जलगांव, औरंगाबाद, फत्तेपुर, तोंडापुर, भडगांव, खौह, हरसाना, हिण्डौन सिटी, अलीगढ़, बालोतरा, बागबहरा इत्यादि क्षेत्रों में संगोष्ठी का आयोजन धर्माराधना के साथ सम्पन्न हुआ।

उपाध्यायप्रवर के 79 वें जन्म-दिवस पर गुणानुवाद एवं तप-त्याग

परम श्रद्धेय शान्त-दान्त-गम्भीर उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. के 79 वें जन्म-दिवस पर माघकृष्णा चतुर्थी 31 जनवरी 2013 को देश के विभिन्न ग्राम-नगरों में उपाध्यायप्रवर के गुणों पर प्रकाश डाला गया तथा श्रद्धालुओं ने अनकेविध तप-त्याग के साथ धर्माराधन किया। आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि सन्तवृन्द के सान्निध्य में मानसरोवर, जयपुर में, उपाध्यायप्रवर एवं मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. के सान्निध्य में मेड़ता में, साध्वीप्रमुखा, शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के सान्निध्य में घोड़ों का चौक, जोधपुर में यह पर्व मनाया गया। जहाँ-जहाँ भी अन्य महासती मण्डल का विराजना हुआ वहाँ सभी स्थानों पर तप-त्याग तथा गुणानुवाद

सभा का आयोजन हुआ। उपाध्यायप्रवर के जीवन से श्रद्धालुओं ने सरलता, शान्तचित्ता, सजगता, विद्वत्ता, सेवा आदि गुणों को ग्रहण करने में हित समझा।

मुम्बई संघ द्वारा माथेरान में “जैन जीवन शैली”

संस्कार शिविर आयोजित

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, श्री जैन रत्न युवक परिषद् एवं श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल के संयुक्त तत्त्वावधान में मुम्बई द्वारा माथेरान पर्वतीय स्थल पर 25 से 27 जनवरी, 2013 तक ‘जैन जीवन शैली’ पर पारिवारिक संस्कार शिविर आयोजित किया गया, जिसमें लगभग 150 जिज्ञासु श्रावक-श्राविकाओं एवं युवक-युवतियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। शिविरार्थियों को वय के आधार पर तीन वर्गों में विभक्त किया गया, जिनमें ‘अहिंसा’ वर्ग में 30 वर्ष तक की वय के, ‘अपरिग्रह’ वर्ग में 31 से 45 तक की उम्र के तथा ‘अनेकान्त’ वर्ग में 45 से अधिक वय के शिविरार्थी थे। शिविर में निम्नांकित विषयों पर विद्वानों ने अध्यापन किया- 1. लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रयत्न, 2. कैसे हो सुन्दर जीवन, 3. शुद्ध परम्परा का इतिहास, 4. आत्म-विकास, 5. आत्म-निरीक्षण से बढ़ते कदम, 6. छोटी-छोटी बातें, 7. अध्यात्म और विज्ञान, 8. जीवन-प्रबन्धन। अध्यापन करने वाले विद्वान् थे- 1. डॉ. सागरमल जी जैन-शाजापुर, 2. डॉ. धर्मचन्द जी जैन-जोधपुर, 3. डॉ. प्रियदर्शना जी जैन-चेन्नई, 4. श्री राजेन्द्र जी दुधेड़िया-बैंगलोर, 5. श्री तरूण जी बोहरा जैन-चेन्नई।

शिविर के शुभारम्भ सत्र में शिविर के उद्देश्य, स्वरूप आदि का परिचय शिविर संयोजक श्री नरेन्द्र जी हीरावत ने दिया तथा अध्यात्मयोगी, युगमनीषी आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के 103 वें जन्म-दिवस पर उनके जीवन-दर्शन तथा ‘स्वाध्याय एवं स्वाध्यायी की महत्ता’ विषय पर डॉ. सागरमल जी, डॉ. धर्मचन्द जी ने सम्बोधित किया। श्री राजेन्द्र जी दुधेड़िया ने संस्कार के महत्त्व पर तथा श्री तरूण जी बोहरा ने शिविर की महत्ता पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री जितेन्द्र जी डागा ने भी पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. के जीवन की विशेषताओं को रेखांकित किया।

डॉ. सागरमल जी जैन का 25 जनवरी को ‘धर्म का मर्म’ विषय पर तथा डॉ. प्रियदर्शना जी जैन-चेन्नई का 26 जनवरी को सायंकाल ‘जीवन को तमाशा नहीं, तीर्थ बनाएँ’ विषय पर विशेष व्याख्यान हुआ, जिसमें सबकी सामूहिक उपस्थिति रहीं। संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराज जी मुणोत भी शिविर में अन्तिम दो दिन उपस्थित रहे तथा 27 जनवरी को उन्होंने ‘जीवन का लक्ष्य’ विषय पर सबको सम्बोधित किया।

शिविर के अन्तिम सत्र में सभी वक्ताओं ने शिविरार्थियों के विभिन्न प्रश्नों के समाधान किए। शिविर में प्रातः 7.15 बजे से रात्रि 10 बजे तक की दिनचर्या निर्धारित थी।

शिविर में मुम्बई संघ के पूर्व अध्यक्ष श्री पारसचन्द जी हीरावत, वर्तमान अध्यक्ष श्री रायचन्द जी हीरावत (उपाध्यक्ष, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ) संघ के सह कोषाध्यक्ष श्री बसन्त जी जैन, श्रावकरत्न श्री रतनराज जी भण्डारी, पूर्व कोषाध्यक्ष श्री धनपतजी भंसाली, श्री गौतम जी मेहता जैसे श्रावकवर्यो ने भी भाग लिया।

माथेरान स्थित 'उषा एस्कोट' रिसोर्ट के श्री विनयचन्द जी कोठारी एवं उनके सुपुत्र श्री दिलीप जी कोठारी ने स्वयं उपस्थित रहकर शिविरार्थियों की व्यवस्था में तत्परतापूर्वक सेवाएँ प्रदान की। अन्तिम सत्र में शिविर की रिपोर्ट शिविर संयोजक श्री नरेन्द्र जी हीरावत ने प्रस्तुत की तथा कार्यक्रम के सफल संयोजन में श्री बसन्त जी जैन का भी योगदान रहा। स्थानीय संघ के अध्यक्ष श्री रायचन्द जी हीरावत ने सबका आभार प्रकट किया। शिविरार्थियों ने शिविर के सफल आयोजन पर हर्ष व्यक्त किया तथा भावना प्रकट की कि इस प्रकार का शिविर प्रतिवर्ष आयोजित किया जाए।

जयपुर में वीतराग ध्यान-साधना शिविर सम्पन्न

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के आज्ञानुवर्ती तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. के सान्निध्य में वीतराग ध्यान साधना शिविर 2 से 12 जनवरी 2013 तक मौजी कॉलोनी, मालवीय नगर, जयपुर में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस शिविर में बैंगलोर, चेन्नई, अहमदाबाद, जलगाँव, ब्यावर, जोधपुर व जयपुर से समागत 27 साधक और 43 साधिकाओं ने भाग लिया। तत्त्वज्ञ सुश्रावक श्री कन्हैयालाल जी लोढ़ा के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। समय-समय पर संजय जी अग्रवाल ने भी शिक्षण में सहयोग किया। दश दिवसीय शिविर में 12 वर्षीया प्रतीक्षा ने अपने माता-पिता के साथ साधना कर सभी को आश्चर्यचकित कर दिया। अहमदाबाद से श्रीमती अनुराधा ने बताया कि ध्यान साधना से हमारे जीवन में परिवर्तन आता है। समता, सजगता, सरलता, सहनशीलता जैसे भाव उभरते हैं, विकारों का शमन होता है। साथ में शरीर की अनित्यता का बोध होता है। भाई श्री मेहेन्द्र जी कर्णावट के विचार थे इससे जीवन में सच्चाई का तथा क्षणभंगुरता का अनुभव होता है। कई साधकों ने बताया कि ऐसे शिविरों का आयोजन महीने या दो महीनों में होते रहना चाहिये, जिससे कि सही जीवन जीने की कला आ जाय। युवक संघ के मंत्री श्री प्रशांत जी कर्णावट ने भी भाग लिया। उनके विचार थे कि युवक संघ को ध्यान-साधना से जोड़ा जाए। श्री डी.आर. मेहता साहब का सुझाव था कि यह साधना स्वाध्यायियों को कराई जाय ताकि इसकी महक पूरे भारत में फैल सके। अन्तिम दिन सारे साधकों के चेहरे प्रसन्न व प्रफुल्लित

दिखाई दिये। सभी साधक घर जाने के बाद निरन्तर साधना करेंगे ऐसा बताया गया। शिविर की सुन्दर व्यवस्था में श्री नरेन्द्र जी सुराणा-बीकानेर, नेहा जी चोरड़िया-जलगांव, श्रीमती अभिलाषा जी हीरावत-मुम्बई, श्री नरेन्द्र जी डागा-मुम्बई ने अत्यन्त श्रम किया। ध्यान शिविर के आवास-निवास और भोजन की व्यवस्था श्री विमलचन्द्र जी डागा परिवार द्वारा की गई।

मार्च में जलगाँव में होगा ध्यान-साधना शिविर

रत्नसंघ के महान्योगी आचार्यश्री हीराचन्द्र जी म.सा. की प्रबल प्रेरणा से जलगाँव में 9 से 20 मार्च 2013 तक वीतराग ध्यान-साधना शिविर आयोजित किया जा रहा है। साधना में प्रवीण ध्यान साधकों द्वारा साधना करवायी जाएगी। भाग लेने के इच्छुक भाई-बहनों से अनुरोध है कि अपनी सूचना इस पते पर 1 मार्च 2013 तक अवश्य प्रेषित कर दें। सम्पर्क सूत्र- श्रीमती मंगला जी चोरड़िया-097823-42284, श्री मनोज संचेती-094225-91423, संयोजक-श्रीमती शांता जी मोदी, सी-26, देवनगर, टोंक रोड, जयपुर (राज.), फोन नं. 0141-2710077, 93144-70972

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति धार्मिक शिक्षण- प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना समिति द्वारा अ.भा.श्री जैन रत्न युवक परिषद्, श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ जयपुर, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जयपुर एवं श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जयपुर के पूर्ण सहयोग एवं तत्त्वाधान में मेधावी छात्रवृत्ति धार्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर 26 से 30 दिसम्बर, 2012 को जयपुर में आयोजित किया गया।

परमाराध्य आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. एवं व्याख्यात्री महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा का पावन सान्निध्य असीम पुण्योदय से शिविरार्थियों को प्राप्त हुआ। शिविर में सवाईमाधोपुर, चौथ का बरवाड़ा, अलीगढ (रामपुरा), खेरली, हिण्डौनसिटी, गंगापुरसिटी, भरतपुर, अलवर, कोटा, पीपाड़, कोसाना, जोधपुर, जबलपुर, नदबई, पहरसर, जरखोदा, बीकानेर, धुलिया, जयपुर आदि स्थानों से 232 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। शिविर में नौ कक्षाओं में विभाजन कर अध्यापन किया गया।

आचार्य भगवंत एवं संत-सती मण्डल की पावन प्रेरणा से शिविरार्थियों ने अपने चारित्र व क्रिया पक्ष को दृढ़ करने के लिए प्रतिदिन सामायिक, प्रतिक्रमण, नवकारसी, रात्रि-भोजन त्याग आदि व्रत-नियम किये। तपस्या के रूप में एकासन, उपवास एवं बेले

आदि किए। कई छात्र-छात्राओं ने संत- सती मण्डल की सेवा में रात्रि संवर किये।

शिक्षण कार्य में श्रीमान् कन्हैयालालजी जैन भीलवाड़ा, श्री दिलीप जी जैन जयपुर, श्री धर्मेन्द्र जी जैन (चैन्नई) चित्तौड़गढ़, श्री मनीष जैन चैन्नई, जयपुर से श्री हरिचन्द जी डागा, श्री अशोक जी जैन, श्री सचिन जी जैन, श्री गजेन्द्र जी जैन, श्रीमती मधु जी झामड, श्रीमती मंजू जी झामड, श्रीमती अनिता जी डागा, श्रीमती सुमन जी कोठारी, श्रीमती सोनाली जी बोथरा, श्रीमती कर्नावट, श्रीमती रेखा जी कोठारी, श्रीमती चविता जी एवं श्रीमती अनिता जी दुग्गाड़, धुलिया की महनीय सेवाएँ प्राप्त हुईं।

प्रतिदिन 2 बजे से होने वाली सामूहिक कक्षा में आचार्यप्रवर एवं संतमण्डल द्वारा वैराग्यप्रद वाणी के माध्यम से शिविरार्थियों को जीवन में व्यावहारिक शिक्षा के साथ-साथ धार्मिक एवं नैतिक संस्कारों को जीवन में उतारने की प्रभावी प्रेरणा देते हुए विभिन्न विषयों पर संबोधित किया गया। शिविरार्थियों का अपने जीवन में कुछ लक्ष्य बने इस प्रयोजन से शिविर के प्रथम दिन संघरत्न, पदमभूषण, सेवाभावी श्री देवेन्द्रराज जी मेहता ने पाँवर पाइन्ट प्रजेन्टेशन एवं वार्तालाप से शिविरार्थियों का मार्गदर्शन किया। इस सत्र में शिविरार्थियों ने श्री डी. आर. मेहता से उनकी जिन्दगी से जुड़े विभिन्न पहलुओं से सम्बन्धित प्रश्न पूछे, जिनका समाधान प्राप्त कर हर्ष का अनुभव किया।

प्रतिक्रमण के पश्चात् रात्रिकालीन सत्र में शिविरार्थियों की प्रतिभा में निखार लाने हेतु भजन प्रतियोगिता, मंच पर आकर परिचय देना एवं शिविर में आकर क्या मिला आदि कार्यक्रम आयोजित किये गये।

शिविर के समापन-समारोह में शासन सेवा समिति के सह संयोजक श्री कैलाशचन्द जी हीरावत, युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जितेन्द्र जी डागा, कार्याध्यक्ष श्री विक्रम जी बाघमार चेन्नई, छात्रवृत्ति योजना के सचिव श्री रविन्द्र जी जैन सवाई माधोपुर, श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, जयपुर के मन्त्री श्री विमलचन्द जी डागा, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जयपुर के मंत्री श्री विनयचन्द जी डागा, जयपुर सम्भाग के श्रेत्रीय प्रधान श्री सुरेशजी कोठारी, श्री अशोक जी सेठ, श्री प्रमोदजी हीरावत और कई अन्य महानुभावों का सानिध्य एवं आशीर्वचन प्राप्त हुआ।

शिविर के समापन समारोह में शिविरार्थियों ने शिविर में अर्जित ज्ञान एवं अपने अनुभवों से अवगत कराया। शिविर की रिपोर्ट शिविर संयोजक श्री दिलीप जी जैन द्वारा प्रस्तुत की गई। शिविर के दौरान आयोजित परीक्षा में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त छात्र-छात्राओं को विशेष आमन्त्रित महानुभावों के द्वारा पुरस्कार प्रदान कर उत्साहवर्द्धन किया गया। - बुधमल बोहरा - संयोजक, आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना समिति

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के प्रमुख पदाधिकारी

अध्यक्ष—Sh. Kailashmullji Dugar, 36, (Old NO. 157), 1st Floor, Eldams Road, Alwarpet, Chennai-600018 (Tamilnadu), Ph. 044-24337492, 09841008585, Email: kailashdugar@gmail.com

कार्याध्यक्ष— श्री सम्पतराजजी चौधरी, 14, वरदान अपार्टमेन्ट, 64, आई.पी.एक्सटेंशन, दिल्ली-110092 (दिल्ली), फोन नं. 011-22246788 (आ.) 9811042519 (मो.), ईमेल- srchoudhary100@gmail.com

मंत्री— श्री विनयचंदजी डागा, एस पी-2, भाभा मार्ग, तिलक नगर, जयपुर-302004 (राज.) फोन नं. 0141-2566072 (आ.) 2620661 (नि.), 9314506509 (मो.)

कोषाध्यक्ष— श्री श्रीचंद जी बैताला, मैसर्स एस.एस. बैताला एण्ड कम्पनी, 2172, झाड़चूड हाउस, चाकसू का चौक, हल्दियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर-302003 (राज.), फोन नं. 0141-2564896 (आ.), 2651504 (नि.), 9314506949 (मो.)

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, जयपुर

उच्च शिक्षा के साथ आध्यात्मिक संस्कारों की आज महती आवश्यकता है। आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, जयपुर एक ऐसी संस्था है, जहाँ इन दोनों उद्देश्यों की पूर्ति एक साथ सम्भव है। यहाँ पर कला, वाणिज्य, विज्ञान आदि सभी संकायों के छात्रों को प्रवेश दिया जाता है। छात्रों के निवास एवं भोजन निःशुल्क सुन्दर व्यवस्था है। देश के किसी भी क्षेत्र से सत्संस्कारी एवं प्रतिभावान छात्र इस संस्था में रहकर अपने जीवन का सुन्दर निर्माण कर सकते हैं। प्रवेश की प्रक्रिया आदि के लिए सम्पर्क करें— दिलीप जैन, अधिष्ठाता, आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाजनगर, जयपुर-302015 (राज.), दूरभाष-0141-2710946

आचार्य हस्ती सेवा-सम्मान-2013 समारोह सम्पन्न

आचार्य हस्तीमल फाउण्डेशन, हैदराबाद के तत्त्वावधान में 12 जनवरी, 2013 को आयोजित समारोह में हैदराबाद के वयोवृद्ध साहित्यकार श्री दिवाकर जी पाण्डेय को उनकी साहित्यिक सेवाओं के लिए “आचार्य हस्ती सेवा सम्मान-2013” से सम्मानित किया गया। समारोह को मुख्यातिथि के रूप में श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना, अध्यक्ष, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ ने सम्बोधित करते हुए कहा कि यह सम्मान गुणों का सम्मान है। समारोह के अध्यक्ष एवं मिलाप पत्रिका के सह-सम्पादक श्री रवि श्रीवास्तव ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि आध्यात्मिक गुरुओं एवं संतों के नाम पर दिये जाने वाले पुरस्कार खास महत्त्व रखते हैं। संतों का नाम जुड़ जाने से पुरस्कार का महत्त्व बढ़

जाता है।

सम्मानित साहित्यकार पाण्डेय जी ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि उन्हें सम्मान तो बहुत मिले हैं, लेकिन आचार्य व आध्यात्मिक व्यक्तित्व के नाम पर दिया जाने वाला यह पुरस्कार उनके लिए काफी महत्वपूर्ण है। आचार्यप्रवर न केवल आध्यात्मिक गुरु थे, बल्कि अच्छे कवि भी थे।

इस समारोह में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय महामंत्री श्री आनन्द जी चौपड़ा, अतिरिक्त महामंत्री श्री मानेन्द्र जी ओस्तवाल, फाउण्डेशन के चेयरमैन सुरेन्द्र जी लूणिया, अध्यक्ष श्री हस्तीमल गुंदेचा, कार्याध्यक्ष श्री तेजराज जी जैन, महामंत्री श्री श्रीपाल देशलहरा, सहमंत्री श्री पारस डोसी, कल्पना सुराणा, कोषाध्यक्ष श्री राजेन्द्र जी कटारिया, पत्रकार राधेश्याम जी शुक्ल आदि उपस्थित थे।

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा

30 जून 2013 को होगी

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, घोड़ों का चौक, जोधपुर द्वारा कक्षा 1 से 12 तक की आगामी परीक्षा 30 जून 2013, रविवार को दोपहर 12.30 से 3.30 बजे तक आयोजित की जायेगी।

सभी महानुभावों से निवेदन है कि क्रमिक वृद्धि एवं संस्कार-शुद्धि के इस आध्यात्मिक परीक्षा कार्य में अधिकाधिक भाई-बहिनों को जोड़ने का प्रयास करावें। अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें- सुरेश बी.चोरडिया, संयोजक-094440-28841, धर्मचन्द जैन, रजिस्ट्रार-093515-89694, कार्यालय (फोन)-0291-2630490, www.jainratnaboard.com, E-mail: info@jainratnaboard.com

संक्षिप्त-समाचार

जोधपुर- साध्वी प्रमुखा, शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. नेहरू पार्क से सेक्शन सेवन एवं भगत की कोठी होते हुए 30 दिसम्बर 2012 को सरस्वती नगर स्थित स्वाध्याय भवन पधारे। यहाँ पौष कृष्णा छठ को भिक्षु दया तथा पौष कृष्णा अष्टमी को टिफिन दया अच्छी संख्या में हुई। रात्रि को संवर पौषध भी अच्छी संख्या में हुए। मंगलवार को प्रार्थना के पश्चात् शक्तिनगर के युवाओं ने धार्मिक प्रश्नोत्तरी का लाभ लिया। पौष कृष्णा दशमी को भगवान पार्श्वनाथ जयन्ती पर सामूहिक दया एवं एकाशन हुए, जिनमें 55 से 60 श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। यहाँ से महासती मण्डल का रामेश्वर नगर पदार्पण हुआ। यहाँ श्रावकरत्न-वीर पिता श्री शांतिलाल जी पींचा के आवास पर विराजे।

इन्द्रगढ़ (बूंदी)- व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा. 1 जनवरी 2013 को नव वर्ष के शुभारम्भ पर इन्द्रगढ़ विराजे, जहाँ अजमेर, कोटा, श्यामपुरा, कुशतला, बाबई, सुमेरगंज मण्डी आदि क्षेत्रों से श्रावक-श्राविकाओं का आवागमन हुआ तथा बढ़-चढ़ कर नियम ग्रहण किए गए। आचार्यप्रवर और उपाध्यायप्रवर की दीक्षा-अर्द्धशती के उपलक्ष्य में महासती जी की प्रेरणा से वर्षभर के लिए एकाशन की लड़ी प्रारम्भ हुई। इससे पूर्व देई और जरखोदा में भी आयंबिल और एकाशन की लड़ी शुरू हुई है।

जोधपुर- चक्षु चिकित्सा सेवा समिति के संस्थापक श्रावकरत्न श्री पुखराजजी अबानी का 50 वां पुण्य-स्मृति दिवस 12 जनवरी, 2013 को मनाया गया, जिसमें विभिन्न गणमान्य श्रावकों ने उनके जीवन ओर समाज-सेवा के कार्यों से प्रेरणा ग्रहण करने का संदेश दिया। आप अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के उपाध्यक्ष श्री पूरणराज जी अबानी के पिताश्री थे।

चेन्नई- करुणा अंतरराष्ट्रीय का 15 वां राष्ट्रीय सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह 28-29 दिसम्बर 2012 को ए.एम.जैन कॉलेज, मीनम्बाक्कम में सम्पन्न हुआ। मद्रास हाई कोर्ट की न्यायाधीश के.पी. के. वासुकी ने सम्मेलन का शुभारम्भ किया तथा करुणा परिवार के कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री कैलाशमल दुग्गड़ ने स्वागत भाषण तथा चेयरमेन श्री दुलीचन्द जैन ने संस्थान का संक्षिप्त परिचय दिया। छह सत्रों में सम्पादित इस सम्मेलन के तृतीय सत्र में श्रीमती मारग्रेट डेविड राज सी. प्रिंसिपल, भक्तवत्सलम् विद्याश्रम, कोरत्तूर ने अपने मुख्य वक्तव्य में कहा कि आज इस प्रगतिशील युग में विकास के पथ पर चलते हुए हम किस ओर बढ़ रहे हैं, जंगलों का सफाया हो रहा है, मोबाइल जैसे उपकरणों से पक्षियों की अनेक प्रजातियाँ समाप्त हो रही हैं, जमीन पर जहरीले कचरे के कारण उपयोगी कीटों का नाश हो रहा है, जिससे डेंगु मच्छर बढ़ रहे हैं- इन सभी बिन्दुओं पर विचार मंथन कर करुणा क्लब को सकारात्मक योगदान देने का प्रयास करना चाहिए।

इस अवसर पर **आचार्य हस्ती करुणा रत्न अवार्ड**- 1,00,000/- रुपए मय प्रशस्ति पत्र मुंबई के श्री विनेश ममानिया को प्रदर्शनियों के माध्यम से करुणा भाव के प्रचार-प्रसार के लिए 'सुराणा एण्ड सुराणा इंटरनेशनल अटॉर्नीज चेरिटेबल ट्रस्ट' के सौजन्य से प्रदान किया गया। इस वर्ष से 'करुणा सेवा अवार्ड' भी प्रारम्भ किया गया है। प्रथम अवार्ड बीकानेर केन्द्र के अध्यक्ष श्री इंद्रचंद दुग्गड़ को प्रदान किया गया। इसके अन्तर्गत 25,000/- रुपए मय प्रशस्ति पत्र, 'सुराणा एण्ड सुराणा इंटरनेशनल अटॉर्नीज चेरिटेबल ट्रस्ट' के सौजन्य से प्रदान किए गए।

इस अवसर पर 18 उत्कृष्ट करुणा क्लबें सम्मानित हुईं तथा 25 विद्यार्थियों को

दयावान अवार्ड से नवाजा गया। इस भव्य समारोह के अवसर पर 'करुणा प्रदर्शनी' का भी आयोजन किया गया।

जयपुर- अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् की नवगठित केन्द्रीय कार्यकारिणी की प्रथम बैठक 30 दिसम्बर 2013 को राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जितेन्द्र जी डागा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस बैठक में सामायिक स्वाध्याय कार्यक्रम के तहत प्रत्येक शाखा में माह के प्रथम रविवार को स्थानक में सामूहिक सामायिक व आगम स्वाध्याय के लक्ष्य, धार्मिक शिक्षण कार्यक्रम के तहत पोरवाल, पल्लीवाल, मारवाड़, महाराष्ट्र, गुजरात, मध्यप्रदेश, जयपुर, अजमेर, ब्यावर आदि क्षेत्रों में लगभग पाँच हजार शिविरार्थियों का लक्ष्य, चतुर्विधसंघ सेवा कार्यक्रम के तहत ऐतिहासिक महापुरुषों के जीवन पर चार-पाँच नाटिकाओं का प्रतियोगिता के रूप में मंचन का लक्ष्य, तथा श्रुतसेवा के तहत पुस्तकालयों के संरक्षण, संवर्धन, अध्ययन-अध्यापन को प्रोत्साहन, विरासत में मिली अनुपम धरोहरों के संरक्षण व भावी पीढ़ी को अनमोल भेंट देने की दिशा में आगम, व्याख्या साहित्य ग्रन्थ के संग्रहण-वितरण सहित अनेक लक्ष्य निर्धारित किए गए। बैठक में शासन सेवा समिति के सह-संयोजक श्रीमान् कैलाशचन्द जी हीरावत-जयपुर का सान्निध्य एवं मार्गदर्शन रहा।

-श्रेयांस मेहता, महासचिव

चेन्नई- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, तमिलनाडु के तत्त्वावधान में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना, महामंत्री श्री आनन्द जी चौपड़ा, अतिरिक्त महामंत्री श्री मानेन्द्र जी ओस्तवाल की उपस्थिति में विशाल जन समूह के बीच विरक्ता बहन सुश्री आशा जी छल्लाणी का अभिनंदन कार्यक्रम नरेन्द्र जी कांकरिया के सुसंचालन में स्वाध्याय भवन, साहुकारपेट के प्रांगण में सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में श्राविका मण्डल की ओर से संयममयी जीवन की महत्ता पर सुन्दर संवाद प्रस्तुत किया गया। विरक्ता बहिन का परिचय श्री ज्ञानजी बाघमार ने दिया तथा संयममयी जीवन पर श्री जवाहरलाल जी कर्णावट एवं श्री श्रीपाल देशलहरा ने विचार व्यक्त किये। विरक्ता बहिन ने संसार की नश्वरता, क्षण भंगुरता पर विवेचन करते हुए सभी से भागवती दीक्षा के अवसर पर जयपुर पधारने का अनुरोध किया। -नरेन्द्र कांकरिया

खेरली- दीक्षा अर्द्धशती के उपलक्ष्य में श्री जैन रत्न युवक परिषद् शाखा खेरली द्वारा चतुर्थ विशाल रक्तदान शिविर का 30 दिसम्बर 2012 को वृहत् स्तर पर आयोजन किया गया। इस रक्तदान शिविर के उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि श्री गौतमचंद जी जैन D.S.O. खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति सतकता विभाग, जयपुर एवं विशिष्ट अतिथि श्री राजेश जैन-हिण्डौन, श्री विमलचन्द जी जैन-जयपुर, श्री महावीर जी जैन-अलवर, श्री देवेन्द्र जी जैन-

जयपुर एवं श्री अशोक कुमार जी जैन-हरसाना थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता समाजसेवी दानवीर श्री रामबाबू जैन-दांतिया ने की। रक्तदान शिविर में जैन-जैनेतर सभी समाज के युवाओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया एवं 230 यूनिट रक्तदान हुआ।

-विपिन कुमार जैन, शाखा प्रमुख

उदयपुर- मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के जैन विद्या एवं प्राकृत विभाग द्वारा विस्तार व्याख्यान माला का 4 जनवरी 2013 को इटली से समागत महिला अतिथियों के मध्य आयोजन किया गया। अमरीका में सेवारत रहे भौतिक शास्त्र के प्रोफेसर पारसमल अग्रवाल ने अपने मुख्य वक्तव्य में कहा कि सृष्टि का विकास एवं हास निरन्तर चलता रहता है। उसके निर्माण में छः द्रव्यों का संयोग होने से उसकी सत्ता का अहसास हमें होता है। द्रव्य, गुण एवं पर्याय के रूप में स्थित द्रव्य की तात्त्विक मीमांसा जैनाचार्यों ने की, जो अत्यधिक सटीक एवं उचित प्रतीत होती है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. प्रेमसुमन जैन थे तथा अध्यक्षता प्रोफेसर शरद श्रीवास्तव, अधिष्ठाता, कला महाविद्यालय ने की। इटली की मेडम लोरी क्लेमेंट ने व्याख्यान के प्रमुख अंशों का इटालियन भाषा में अनुवाद किया। स्वागत डॉ. जिनेन्द्र कुमार जैन ने तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. ज्योतिबाबू जैन ने किया।

सवाईमाधोपुर- श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, शाखा सवाईमाधोपुर द्वारा 30 दिसम्बर, 2012 को एक दिवसीय क्षेत्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें वक्ता के रूप में श्री पदमचंद जी जैन-पूर्व संयोजक स्वाध्याय संघ, सवाईमाधोपुर ने 'सामायिक का शुद्ध स्वरूप' विषय पर कहा कि नित्य सामायिक साधना द्वारा भी हमारे दैनिक जीवन में शान्ति, प्रसन्नता, कषायों की मन्दता एवं तनावरहितता रूप गुणों को प्राप्ति नहीं होती है तो यह हमारे लिये एक चिन्तन एवं मनन का विषय है। द्वितीय वक्ता के रूप में श्री त्रिलोकचन्द जी जैन, क्षेत्रीय संयोजक, आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, सवाईमाधोपुर ने 'सामायिक का प्रयोजन' विषय पर विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि द्रव्य-सामायिक भाव सामायिक का पूर्व सोपान है। सामायिक की शुद्ध-आराधना द्वारा ही हम मुक्तिरूप साध्य के मार्ग पर अग्रसर हो सकते हैं। स्वाध्याय संघ द्वारा संचालित विभिन्न प्रवृत्तियों पर शाखा संयोजक श्री धर्मेन्द्र कुमार जी जैन द्वारा प्रकाश डाला गया। स्वाध्याय संघ की प्रवृत्तियों के उन्नयन हेतु खुला मंच सामूहिक विचार हेतु रखा गया, जिसमें श्री लल्लूलाल जी जैन, अलीगढ़ संघ के अध्यक्ष श्री घनश्याम जी जैन, शासनसेवा समिति के सदस्य श्री रामदयाल जी जैन सर्राफ, स्वाध्याय संघ के संयोजक श्री कुशलचन्द जी गोटेवाला आदि ने भाग लिया।

संगोष्ठी में कुशतला, देई, अलीगढ़, श्यौपुर (म.प्र.), आवासन मण्डल,

आलनपुर, नई मण्डी, बजरिया तथा सवाईमाधोपुर से पधारे स्वाध्यायियों ने भाग लिया। गोष्ठी का संचालन श्री धर्मेन्द्रकुमार जी जैन ने किया।

भोपालगढ़- श्री जैन रत्न उच्च माध्यमिक विद्यालय भोपालगढ़ का 85 वां स्थापना दिवस 15 जनवरी 2013 को उत्साह पूर्वक मनाया गया, जिसमें श्री सुरेन्द्र जी कोठारी भोपालगढ़ (चेन्नई) मुख्य अतिथि, श्री सुगनचन्द जी छल्लाणी व उनके सुपुत्र श्री कांतिलाल जी अध्यक्ष तथा बड़े वीर पिता श्री भंवरलाल जी लोढ़ा विशिष्ट अतिथि थे। इस कार्यक्रम में विद्यालय अध्यक्ष श्री प्रसन्नचंद जी ओस्तवाल व मंत्री श्री सम्पतराज जी बोथरा, कार्डिनेटर श्री अजीतराज जी मेहता, सिंभुलाल जी चोरड़िया आदि उपस्थित थे। श्री जवाहरलाल जैन कन्या पाठशाला व जैन रत्न उच्च माध्यमिक विद्यालय भोपालगढ़ के छात्र-छात्राओं द्वारा मनोहर हास्य, विनोद, शिक्षा से ओतप्रोत, सुन्दर कार्यक्रमों को प्रस्तुत किया गया।

इस प्रसंग पर विद्यालय के पूर्व कर्मचारी श्री मुमताज अहमद चिश्ती की विद्यालय के प्रति अत्यन्त प्रशंसनीय सेवाओं का सम्मान करते हुए एक लाख रुपये का चेक एवं प्रशस्ति पत्र समर्पित करते हुए अभिनंदन किया गया।

बधाई/चुनाव

जयपुर- प्राची जैन का चयन अमेरिका में कैलिफोर्निया स्थित प्रसिद्ध कंपनी गूगल में साफ्टवेयर इंजीनियर के रूप में हुआ है। आपको एक करोड़ रुपये का वार्षिक पैकेज मिलेगा। आपने आईआईटी दिल्ली से कंप्यूटर साइंस की पढ़ाई की तथा आपका 2009 में राजस्थान आईआईटी प्रवेश परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर कल्पना चावला अवॉर्ड से सम्मानित किया गया।



जयपुर- श्री आशीष जैन सुपौत्र स्व. श्री ताराचन्द जी कक्कड़ (सरवाड़) सुपुत्र नरेन्द्र कक्कड़ ने बी.ई. (पूना) एवं एम.बी.ए. बैंगलोर से किया। आपका ANALYTICS QUOTIENT LTD में चयन होने पर हार्दिक बधाई।

उदयपुर- जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य के ख्यातिप्राप्त लेखक प्रोफेसर (डॉ.) प्रेम सुमन जी जैन को भारतीयविद्या के क्षेत्र में निरन्तर शोध और लेखन के विशिष्ट अवदान हेतु श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ (मानित विश्वविद्यालय) नई दिल्ली द्वारा स्वर्ण जयन्ती वर्ष में 7 जनवरी, 2013 को दिल्ली में आयोजित दीक्षान्त समारोह में वाचस्पति (डी.लिट्.) मानित उपाधि से सम्मानित किया गया। प्रो. जैन को कुलाधिपति न्यायमूर्ति डॉ. मुकुन्दकाम शर्मा एवं कुलपति प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी ने प्रशस्तिवाचन

पूर्वक हार एवं शाल से सम्मानित किया तथा भारत के पूर्व राष्ट्रपति वैज्ञानिक डॉ. अब्दुल कलाम आजाद ने वाचस्पति उपाधिपत्र अर्पित किया। -डॉ. जिनेन्द्र जैन, विभागाध्यक्ष

चेन्नई- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, तमिलनाडु की आम सभा वर्ष 2013 से 2015 के कार्यकाल के लिये श्रीमान् महेन्द्र जी कांकरिया का अध्यक्ष पद के लिए मनोनयन किया गया। अध्यक्ष महोदय ने मंत्री पद पर श्री सुधीर कुमार जी सुराणा तथा कोषाध्यक्ष पद पर श्री गौतमचन्द्र जी बाघमार को मनोनीत किया है। -नरेन्द्र कांकरिया, सहमंत्री

हिण्डौनसिटी- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की नवीन कार्यकारिणी में श्री शीतल कुमार जी जैन को अध्यक्ष, श्री प्रवीणकुमार जी जैन को मंत्री तथा श्री राकेश कुमार जी जैन को कोषाध्यक्ष मनोनीत किया गया है।



रायचूर- श्री विकास जी दफ्तरी सुपुत्र श्री अरूणकुमार जी दफ्तरी एवं सुपौत्र श्री रतनलाल जी दफ्तरी ने आर्किटेक्ट इंजीनियरिंग में राज्य स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया है।



थाँवला- श्री रोहित जैन सुपुत्र श्री गौतमचन्द्र जी डूंगरवाल ने MCA के 4th Semester की परीक्षा Punjab Technical University से 80.29 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण की है। आपने अपनी कॉलेज एवं सम्पूर्ण अजमेर स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया।



जोधपुर- श्री अर्जुनराज जी मेहता सुपुत्र स्व. श्री गुलराज जी मेहता, पूर्व संयुक्त सचिव, राजस्थान पेंशनर समाज को उनके द्वारा जोधपुर के पेंशनरों के कार्य निस्तारण हेतु उल्लेखनीय सेवाएँ प्रदान करने के लिए जिला कलेक्टर द्वारा गणतन्त्र दिवस-2013 पर प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया।



नागपुर- श्री मंयक कोठारी सुपुत्र श्री महावीरचन्द्र जी-सौ. ममतादेवी जी कोठारी ने सी.ए. परीक्षा में 517 अंक प्राप्त कर नागपुर संभाग में प्रथम स्थान तथा सम्पूर्ण भारत में 47 वां स्थान प्राप्त किया है। उन्हें नागपुर शहर का बेस्ट स्टूडेंट अवार्ड प्रदान किया गया है।

मुम्बई- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के नये अध्यक्ष के रूप में श्री नरेन्द्र जी हीरावत तथा श्री जैन रत्न युवक परिषद् के अध्यक्ष के रूप में श्री शेखर जी भण्डारी को मनोनीत किया गया है।

सी.ए. में उत्तीर्ण छात्र



सौरभ चौपड़ा



शिवानी सेठिया



कुलदीप लोढ़ा



स्मिति मेहता



आशीष बाफना



प्रिंस चौपड़ा



राहत गांग



मनाली जैन

1. **जोधपुर-** श्री सौरभ चौपड़ा, सुपुत्र श्रीमती ललीता-राजाबाबू सा चौपड़ा, सुपौत्र स्व. श्रीमती सज्जनकंवर-स्व. श्री हीरालाल सा चौपड़ा।
2. **जोधपुर-** सुश्री शिवानी सेठिया, सुपुत्री श्रीमती अंजु-रमेश जी सेठिया, सुपौत्री स्व. श्रीमती भंवरी देवी-स्व. श्री (डॉ.) मोहनलाल जी सेठिया।
3. **गोटन-** श्री कुलदीप लोढ़ा, सुपुत्र श्रीमती कान्ता जी-अभयकुमार जी लोढ़ा, सुपौत्र श्रीमती विद्या देवी जी लोढ़ा।
4. **दिल्ली-** सुश्री स्मिति मेहता, सुपुत्री श्रीमती नूतनजी-नरेन्द्र जी मेहता, सुपौत्री श्रीमती सुशीला जी-कंवलराज जी मेहता, जोधपुर।
5. **बैंगलोर-** श्री आशीष बाफणा, सुपुत्र श्री सुरेशचन्द जी बाफणा, सुपौत्र श्री मदनलाल जी बाफणा।
6. **पाली-** श्री प्रिन्स चौपड़ा सुपुत्र श्रीमती देवी-रूपकुमार जी चौपड़ा (कवास वाले)।
7. **जोधपुर-** श्री राहत गांग सुपुत्र श्रीमती सरिता-राजेन्द्र जी गांग, सुपौत्र स्व. श्री मनोहर मल जी गांग।
8. **जलगांव-** सुश्री मनाली जैन कटारिया सुपुत्री सौ. संगीता-दिनेश जी कटारिया, सुपौत्री श्री रूपचन्द जी कटारिया एवं श्रीमती शकुन्तला जी कटारिया

श्रद्धाञ्जलि

जोधपुर- सरलता, सादगी, उदारता की धनी वात्सल्यमूर्ति सुश्राविका श्रीमती सुमित्राजी

बाफना धर्मपत्नी श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना अध्यक्ष, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ का 20 जनवरी, 2013 को 59 वर्ष की वय में असामयिक निधन हो गया। विवाह के तुरन्त बाद प्रथम गुरु दर्शन में पूज्यपाद आचार्य हस्ती के सहज निसृत शब्दों “आप जितना सादगी से रहेंगी, इनकी (ज्ञानेन्द्र बाफना की) धर्म भावना उतनी ही बढ़ेगी” को गुरु मंत्र के रूप में अपनाकर उस नवपरिणीता ने सौन्दर्यवर्धक वस्तुओं का त्यागकर अपने व्यक्तित्व का मानो रूपातन्तरण ही कर लिया एवं 40 वर्ष के वैवाहिक जीवन में कभी भी सौन्दर्य प्रसाधन का प्रयोग नहीं किया।

आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के किशनगढ़ वर्षावास के मर्यादा विषय पर हुए प्रवचन से प्रभावित उस श्राविकारत्न ने मात्र 14 साड़ी की मर्यादा स्वीकार कर ली। श्राविकारत्न ने 2005 में अपने पूज्य श्वसुर सुश्रावक श्री बस्तीमलजी बाफना के निधन पर आजोवन शीलव्रत अंगीकार कर लिया था। अपने लिये कुछ भी नहीं, संघ-समाज, दीन-दुःखियों, पशु-पक्षियों के लिए सब कुछ समर्पित न्यौछावर करने को सदा तत्पर श्राविकारत्न का जीवन प्रेरणाप्रदायी था। परम पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के वि. सं. 2051 में लगभग 40 दिवसीय शास्त्रीनगर प्रवास (श्रद्धेय श्री शुभेन्द्रमुनिजी म.सा. के उपचार के कारण), पूज्या साध्वीप्रमुखाजी म.सा. प्रभृति महासतीवृन्द के समय-समय पर शास्त्रीनगर प्रवास एवं व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. आदि ठाणा के शास्त्रीनगर चातुर्मास के अवसर पर संघ-समाज ने उनके श्रद्धा, समर्पण, स्वधर्मी वात्सल्य एवं पूज्यजनों को गोचरी बहिराने का लाभ लेने की उत्कट भावना को प्रत्यक्ष देखा।

कई गौशालाओं, भोपालगढ़ धर्मपुरा के लिये स्वयं लाभ लेते हुए अनेक लोगों को प्रेरित कर दान की दलाली का अपूर्व लाभ लिया। अनेक जरूरतमन्द व्यक्तियों, परिवारों, सामान्यजन के शिक्षा, स्वास्थ्य व जीवनयापन में गुप्त सहयोग कर उन्होंने अपने आपको कृतकृत्य बनाया। पूज्य गुरु भगवन्तों द्वारा अन्नपूर्णाजी के सम्बोधन से सम्बोधित उस मातृवत्सला के घर जो भी आया, उन्हें उन्होंने कभी भी बिना खिलाये-पिलाये नहीं लौटने दिया। पूज्या महासतीवृन्द भी उन्हें “माँ” के रूप में ही देखती।

अपने पति श्री ज्ञानेन्द्र बाफना को वैवाहिक जीवन के प्रारम्भ से जीवनपर्यन्त उन्होंने

संघ-सेवा में सहकार ही नहीं, वरन् उनकी शक्ति बनकर, घर-परिवार के कार्यों से सर्वथा मुक्त रखकर सच्ची सहधर्मिणी-धर्मसहायिका का दायित्व निभाया।

अपनी माँ के संस्कारों की छाँव में पले-बढ़े उनके पुत्रद्वय श्री आदित्य बाफना व श्री शुभेन्द्र बाफना, पुत्रवधू श्रीमती रिद्धिजी व सिद्धिजी, सुपुत्रियाँ श्रीमती प्रीति जैन व श्रीमती सुधा जैन तथा दामाद श्री चन्द्रप्रकाशजी जैन व श्री अमितजी जैन सभी उनके पदचिह्नों पर चल रहे हैं।

बैंगलोर- सुश्राविका श्रीमती विद्यादेवी भण्डारी धर्मपत्नी स्व. श्री प्रेमचन्द जी भण्डारी का



72 वर्ष की आयु में 22 जनवरी 2013 को स्वर्गवास हो गया। आप शान्त, शालीन, गुणानुरागी, सदा प्रसन्नचित्त, मिलनसार, सेवा-भावी, परोपकारी, उदार हृदयवाली श्राविका थीं। आप रत्नसंघ के संत-सतियों की सेवा में सदैव तत्पर रहती थीं। आप अपने जीवन में मासखमण, अठाई तप कर चुकी थीं। सामायिक-स्वाध्याय, व्रत-प्रत्याख्यान उनके जीवन का अंग था।

जयपुर- धर्मनिष्ठ उदारहृदया सुश्राविका श्रीमती चक्काबाई जी बैद धर्मपत्नी स्व. श्री



हीराचन्द जी बैद का 86 वर्ष की वय में 29 जनवरी, 2013 को स्वर्गवास हो गया। 33 वर्ष की अल्पायु में आप विधवा हो गई थी। उसके पश्चात् भी आपने आत्म-सम्मान एवं स्वावलम्बन के साथ जीवन जीया। आप सन्त-विहार एवं अभ्यागतों की सेवा में अग्रणी रहती थीं। सन्त-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में आपको आनन्द आता था। आप संघ-सेवी श्रावकरत्न स्व. श्री पूनमचन्द जी बडेर की साली जी थीं। श्री कुशलचन्द जी बडेर परिवार ने आपकी खूब सेवा की।

किशनगढ़- व्रतशीला सुश्राविका श्रीमती नरकलबाई लोढ़ा धर्मपत्नी स्व. श्री सरदारमल



जी लोढ़ा का 106 वर्ष की आयु में 29 दिसम्बर 2012 को स्वर्गगमन हो गया। आपने संथारा ग्रहण किया था। दृढ़ श्रद्धालु सुश्राविका का जीवन धार्मिक व्रत-नियमों एवं त्याग-प्रत्याख्यानो से परिपूर्ण रहा। आप अपने पीछे भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गई है।



भोपालगढ़- शांत स्वभावी सुश्राविका श्रीमती सुशीला देवी धर्मपत्नी स्व. श्री गौतमचन्द जी चोरडिया का स्वर्गवास 55 वर्ष की वय में 22 दिसम्बर, 2012 को हो गया। आपका जीवन धर्मयुक्त एवं श्रद्धायुक्त था।



जोधपुर- श्री कनकमल जी सिंघवी एडवोकेट सुपुत्र स्व. श्री अचलमल जी सिंघवी का प्रयाण 5 जनवरी, 2013 को 81 वर्ष की उम्र में हो गया। आपकी माताजी स्व. श्रीमती ज्ञानकंवर जी सिंघवी गुरु श्री हस्ती की परम भक्त थीं। आपका जीवन बहुत ही सरल, सहज एवं सादगीमय था।

बैंगलोर- धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री तेजराज जी सांखला जैन का 70 वर्ष की आयु में 02



जनवरी, 2013 को निधन हो गया। आप धार्मिक, सामाजिक एवं साधु-संतों की सेवा में सदैव अग्रसर रहने वाले सुश्रावक थे। आपके सुपुत्र श्री सुनील जी सांखला, (राष्ट्रीय मंत्री-श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानक वासी जैन कॉन्फ्रेंस) समाज कार्य में अपना बहुमूल्य योगदान दे रहे हैं।

रहे हैं।

जोधपुर- संघनिष्ठ सुश्रावक वरिष्ठ एडवोकेट श्री विश्वम्भरनाथ जी मोदी सुपुत्र पूर्व



न्यायाधीश स्व. श्री इन्द्रनाथ जी मोदी, राजस्थान उच्च न्यायालय का स्वर्गवास 5 जनवरी, 2013 को 79 वर्ष की वय में हो गया। आपका धर्ममय जीवन सरलता, मधुरता, उदारता, प्रामाणिकता, सेवा-भावना, सत्साहित्य के पठन-पाठन आदि विविध सद्गुणों से युक्त था। अपने स्वर्गीय पिताश्री से आपने विरासत में धार्मिक एवं सेवा-भक्ति से परिपूर्ण संस्कारों को प्राप्त किया। आप अपने पीछे श्रद्धानिष्ठ एवं संस्कारित सुपुत्र श्री राजेन्द्रनाथ जी, भूपेन्द्रनाथ जी एवं पौत्र-पौत्रियाँ, पुत्रियाँ-दामाद, दौहित्र-दौहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ कर गए हैं। आपके लघु भ्राता श्री देवेन्द्रनाथ जी मोदी जिनवाणी संपादकीय कार्यालय, जोधपुर में व्यवस्थापक के रूप में कार्यरत हैं।



हिण्डौनसिटी- धर्मपरायणा सुश्राविका श्रीमती शान्तीदेवी जी जैन धर्मपत्नी श्री बाबूलाल जी जैन (निसूरा वाले) का स्वर्गगमन 28 दिसम्बर 2012 को हृदयगति रुक जाने से हो गया। आप सरल स्वभावी, मिलनसार एवं मृदुभाषी श्राविका थी। आप प्रतिदिन सामायिक किया करती थीं।

जैतारण- दृढ़धर्मी श्रमणोपासिका श्रीमती सुगनकंवर जी धर्मपत्नी श्री जवतराज जी बोहरा



का 9 जनवरी, 2013 को परलोकगमन हो गया। आप कई वर्षों से तीन खन्ध का पालन करती थीं। सामायिक और स्वाध्याय में अनुरक्त सुश्राविका ने अपने जीवन में कई त्याग-प्रत्याख्यान किए। साधु-साध्वियों के जैतारण पधारने पर बोहरा परिवार सेवा में अग्रणी रहता है।

आपके सुपुत्र गौतमचन्द जी और विनोदकुमार जी संघ सेवा में रत हैं। आप संघ सेवी गुरुभक्त श्री हस्तीमल जी गोलेछा की समधिनी थीं।

सैलपुर (तमिलनाडू)- सुश्रावक श्री बालचंद जी गांधी का 03 नवम्बर 2012 को समाधि



भावों में 89 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। आपकी चारित्रनिष्ठ संत-सतियों के प्रति अटूट श्रद्धा थी। आप प्रतिदिन 5-6 सामायिक, स्वाध्याय, प्रतिक्रमण आदि करते थे। आपके कई वर्षों से रात्रि-चौविहार आदि प्रत्याख्यान थे। आपकी जीवदया में विशेष रुचि थी।

शोरापुर- समता की साधिका सुश्राविका श्रीमती कमला जी छाजेड़ धर्मपत्नी श्री रतनलाल



जी छाजेड़ का 76 वर्ष की वय में 26 दिसम्बर 2012 को समाधिमरण हो गया। आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. शोरापुर पधारे तब से निरन्तर आपके प्रति गुरुवार को मौन रहता था। आप नित्य 10-12 सामायिक करती थीं तथा रात्रि-चौविहार त्याग आदि कई प्रत्याख्यान करती थीं।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी-परिवार तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

परम उपकारी

श्रीमती चन्द्रलता महता

दीक्षा जंयती की पावन बेला, खुशियाँ चहुँ ओर छाई है।

50 वें वर्ष में प्रवेश करने पर, दूदू संघ की ओर से अगणित बधाई है।।

दर्शन आपके गुरुवर, पावन मंगलकारी,

प्रवचन गुरुवर आपके, जन-मन पर हैं प्रभावकारी।

आप वाणी के जादूगर, हर प्राणी को अति प्रियकारी।

आप ही तो हैं, हमारे परम-परम उपकारी।।

गुरु की कृपा दृष्टि पड़ती जिस पर हो जाता वह निहाल,

गुरु दो शब्द बोले अगर तो हो जाता वह मालामाल,

जिज्ञासा मन की मिटती और, पूरा होता हर सवाल।

दीक्षा जंयती पर शुभकामना हमारी जीओ आप हजारों साल।।

रत्नसंघ की खिली फुलवारी, पाए पट्टधर गुरुवर हीरा-मान।

अहो भाग्य है! संघ सरताज हमारे, आपकी शरण से होता कल्याण।।

-दूदू (राज.)

स्वप्निका परीक्षा : एक मॉडल पेपर

परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा-अर्द्धशती वर्ष में 'स्वप्निका' पुस्तिका का देश के हर ग्राम-नगर में उपयोग हो रहा है, यह जानकर प्रमोद है। इस पुस्तिका पर उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. की दीक्षा अर्द्धशताब्दी की सम्पूर्ति अवसर पर 23 मई 2013 को 12.00 से 12.45 बजे तक 'खुली किताब प्रतियोगिता' (Open Book Exam.) आयोजित की जा रही है। परीक्षा में 50 प्रश्न पूछे जायेंगे। विभिन्न ग्राम-नगरों में यह परीक्षा निश्चित समय पर आयोजित की जाएगी। परीक्षा के प्रश्न-पत्र के प्रश्नों का नमूना (Model) यहाँ दिया जा रहा है। सम्पर्क सूत्र:- नमन मेहता (पीपाड़), स्वप्निका संयोजक, मोबाइल नं. 94141-16766

1. विकल्पात्मक प्रश्न-

जीवन किससे महान् बनता है?

(अ) वस्तु (ब) वास्तु (स) वास्तविकता उत्तर- (स)

2. उत्तर 'म' शब्द से शुरु कीजिए-

जीवन वास्तविकता से बनता है। उत्तर- (महान्)

3. उत्तर 'हाँ' या 'नहीं' में लिखिए-

जीवन वास्तु से महान् बनता है। उत्तर- (नहीं)

4. केवल एक शब्द में उत्तर दीजिए-

जीवन किससे महान् बनता है। उत्तर- (वास्तविकता)

5. मुझे पहिचानो-

मैं वास्तविकता से महान् बनता हूँ। उत्तर- (जीवन)

6. शब्द जोड़ें- वाक्य बनाएँ-

बनता/जीवन/महान्/से/है/वास्तविकता।

उत्तर-जीवन वास्तविकता से महान् बनता है।

7. जोड़ी मिलाइए-

1. सम्यक् इनकी- होती प्रस्तुति उत्तर- 1. सम्यक् इनकी मति-श्रुति

2. सुनियोजित- मति-श्रुति 2. सुनियोजित होती प्रस्तुति

8. पुस्तक में आए पद्य के आधार पर युग्म शब्द बनाएँ (कोई 2)-

1. न्यारा-प्यारा 2. कहानी-सुहानी

9. वाक्यों की पूर्ति कीजिए-

सम्यक् इनकी.....सुनियोजित होती.....। उत्तर- मति-श्रुति, प्रस्तुति।

10. अंकों में उत्तर दीजिए-

आचार्य श्री हीरा भगवान महावीर केवें पट्टहर हैं। उत्तर- 82 वें

❀ साभार-प्राप्ति-स्वीकार ❀

500/- जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

- 14686 श्री विनीतजी मोदी, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड, बासनी, जोधपुर (राजस्थान)
 14706 श्री सुधीरजी भंडारी, जवाहर नगर, वन विभाग रोड़, रतलाम (मध्यप्रदेश)
 14707 श्री सुरेशजी कांकरिया, भोपालगढ़, जिला-जोधपुर (राजस्थान)
 14708 श्री शेखरजी जैन, राजस्थान बैंक के पास, बोम्बे मोटर सर्किल, जोधपुर (राज.)
 14709 श्री जितेशजी संघवी, प्लॉट नं. 10, त्र्यम्बक नगर, महाबल, जलगाँव (महाराष्ट्र)
 14711 छविजी सुराणा, दांती बाजार (बड़ा बाजार), बीकानेर (राजस्थान)
 14713 श्री रोड़ीलालजी धींग (प्रधानाचार्य), हिरण मगरी, उदयपुर (राजस्थान)
 14714 श्री राजेन्द्रजी पोरवाल, दुर्गापुरा, गौशाला के पीछे, टोंक रोड़, जयपुर (राजस्थान)
 14716 श्रीमती शकुन्तलाजी नाहर, साक्षरा अपार्टमेंट, पश्चिमविहार, नईदिल्ली (दिल्ली)
 14720 श्रीमती शालीनजी जैन, उमाभवन के पीछे, आनंद-सोजित्रा रोड़, आनंद (गुजरात)
 14736 श्री शरदजी नाहटा, नाहटा भवन, चौपासनी रोड़, जोधपुर (राजस्थान)

250/- (अर्द्धमूल्य योजना) जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता

श्री प्रसन्नचंदजी, पुनवानचंदजी, हस्तीमलजी, लिलमचंदजी, शांतिलालजी
 ओस्तवाल, भोपालगढ़-जोधपुर-मुम्बई-चेन्नई के सौजन्य से

- 14687 Shri Bhanwarlalji Bothra, Chennai (Tamilnadu)
 14688 श्री अरूण कुमारजी नागोता, ममता हॉस्पिटल के पीछे, ठाणे (महाराष्ट्र)
 14689 श्रीमती कविताजी जैन, 4/241, काला कुआँ, अलवर (राजस्थान)
 14690 Shri Roopchandji Kothari, Chennai (Tamilnadu)
 14691 श्री पवन कुमारजी जैन, नर्सरी सर्किल के पास, वैशाली नगर, जयपुर (राजस्थान)
 14692 श्री राजेन्द्रचन्द्रजी सिंघवी, 15/31, चौपासनी हाउसिंगबोर्ड, जोधपुर (राजस्थान)
 14693 श्री रविन्द्रजी गांग, 3/260, मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राजस्थान)
 14694 श्री सम्पतराजजी खेराड़ा (आंचलिया), लक्ष्मीचौक, अजमेर (राजस्थान)
 14695 श्री नरेश कुमारजी बरडिया (जैन), कवर्धा, जिला-कबीरधाम (छत्तीसगढ़)
 14696 श्री दिनेशजी संचेती, वाडी-भोकर रोड़, देवपुर, जिला-धुलिया (महाराष्ट्र)
 14697 श्री सिद्धार्थजी मेहता, सोलसुम्बा, उमरगाँव रोड़, जिला-वलसाड (गुजरात)
 14698 श्री गौरव कुमारजी (वर्धमान) मेहता, बसीण्दा, जिला-रतलाम (मध्यप्रदेश)
 14699 श्री राजेन्द्र कुमारजी मेहता, पोस्ट-रावटी, जिला-रतलाम (मध्यप्रदेश)
 14700 श्री अरूण कुमारजी मेहता, 351 बी, कालानी नगर, इन्दौर (मध्यप्रदेश)
 14701 श्री शांतिलालजी जैन, टीचर्स कॉलोनी, केशवपुरा, कोटा (राजस्थान)
 14702 श्री राजेशजी जैन, राजेन्द्र नगर, गणेश मार्ग, वैशाली नगर, जयपुर (राजस्थान)
 14703 श्री संदीपजी जैने, हांडीवाडी रोड़, हडपसर, पूना (महाराष्ट्र)
 14704 श्री गजेन्द्रजी अरोड़ा, कमला नेहरू नगर प्रथम विस्तार, जोधपुर (राजस्थान)
 14705 श्री मनीषजी मेहता, केशरवाडी, चाँदी हॉल, जोधपुर (राजस्थान)
 14710 श्री पार्थजी सुराणा, लुणियावास, नोहर, जिला-गंगानगर (राजस्थान)

- 14712 श्री हेमराजजी मेहता, 55/35, पंचवटी मार्ग, मानसरोवर, जयपुर (राजस्थान)
 14715 श्री अरूणजी सुराणा, गोपालपुरा मोड़, टोंक रोड़, जयपुर (राजस्थान)
 14717 श्री दीपेशजी जैन, चौगान कुआँ, गीता प्रिन्टर के पास, शहर सवाईमाधोपुर (राज.)
 14718 श्री घीसालालजी कच्छारा, कुम्भारिया, वाया-बांदरवाड़ा, जिला-अजमेर (राज.)
 14719 श्री तेजमलजी कच्छारा, कुम्भारिया, वाया-बांदरवाड़ा, जिला-अजमेर (राज.)
 14721 श्री विकास बाबूजी जैन, खत्री कारखाने के पास, सवाईमाधोपुर (राजस्थान)
 14722 Shri Sunil Kumarji Kothari, Malkhed Road (Karnataka)
 14723 श्री राकेश कुमारजी सुराणा, जसवंत टॉकिज के पास, भीलवाड़ा (राजस्थान)
 14724 श्री कुशलचन्दजी साण्ड, ब्यावर रोड़, बिजयनगर, जिला-अजमेर (राजस्थान)
 14725 श्री संजयजी श्रीश्रीमाल, ब्यावर रोड़, बिजयनगर, जिला-अजमेर (राजस्थान)
 14726 श्री प्रवीण कुमारजी कटारिया, विष्णु नगर, नाचना, जिला-रत्नागिरी (महाराष्ट्र)
 14727 Shri Vikaramji Bohara, Chennai (Tamilnadu)
 14728 श्री राजकुमारजी डागा, भैरूजी के बगल वाली गली, बीकानेर (राजस्थान)
 14729 श्री मनोज कुमारजी सुराणा, सुमलडेरी रोड़, सूत (गुजरात)
 14730 श्री पारसमलजी कोचेटा, पोस्ट-बोरावड, जिला-नागौर (राजस्थान)
 14731 श्री भँवरलालजी मुथा, मुथा का बास, बोरावड, जिला-नागौर (राजस्थान)
 14732 श्री विनोद कुमारजी चोरड़िया, गाँधी चौक, मेड़तासिटी, जिला-नागौर (राज.)
 14733 Shri Goutam Chandji Chhajerh, Chennai (Tamilnadu)
 14734 Shri Kailash Chandji Dudheriya, Chennai (Tamilnadu)
 14735 श्री लखपतराजी नाहटा, दासपा हाउस, रातानाड़ा, जोधपुर (राजस्थान)
 14737 Shri Tapan Kumarji Bhandari, Bangaluru (Karnataka)
 14738 श्री अक्षयजी सोनी, ओसवाली मौहल्ला, मदनगंज, जिला-अजमेर (राजस्थान)
 14739 श्री नरेन्द्र कुमारजी जैन, चौथ का बरवाड़ा, जिला-सवाईमाधोपुर (राजस्थान)

जिनवाणी हेतु साभार-प्राप्त

- 5100/- श्रीमती वन्दनाजी सुभाषजी भण्डारी, दुबई, सुपुत्री सौ.कां. प्रेक्षा का शुभ-विवाह चि. हिमांशुजी बाफना के संग दिनांक 5 फरवरी 2013 को सुसम्पन्न होने जा रहा है, उसकी खुशी में सप्रेम भेंट।
- 5100/- श्री घीसूलाल जी, वीरपिता श्री प्रकाशमल जी, रौनककुमार जी छल्लाणी (हीरादेसर) चेन्नई, मुमुक्षु सुश्री आशा जी छल्लाणी की भागवती दीक्षा के उपलक्ष्य में भेंट।
- 5000/- श्री गौतमचन्द जी बोहरा, जैतारण, अपनी पूज्य माताजी श्रीमती सुगनकंवर धर्मपत्नी श्री जैवतराज सा बोहरा जैतारण का 09 जनवरी, 2013 को स्वर्गवास होने पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।
- 3100/- श्रीमती विजयाकुमारी जी लोढ़ा, श्री कुलदीप लोढ़ा सुपुत्र श्री अभयकुमार जी लोढ़ा, सुपौत्र श्रीमती विजयाकुमारी जी-स्व. श्री अमरचन्द जी लोढ़ा के सी.ए. फाइनल में उत्तीर्ण होने के उपलक्ष्य में भेंट।
- 2100/- श्री अनिल जी-श्रीमती सुधा जी बोहरा, जोधपुर, अपनी सुपुत्री राजुल जी (सुपौत्री श्रीमती सुशीला जी बोहरा) का शुभविवाह श्री श्रेयस जी भंडारी (सुपुत्र श्री राकेश जी इन्दुजी) के संग होने के प्रसंग पर सप्रेम भेंट।

- 1101/- श्री अमरचन्द जी, सुरेन्द्र जी, नरेन्द्र जी सदावत मेहता, जोधपुर, परमपूज्य महासती शासन प्रभाविका साध्वी प्रमुखा मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा 7 के सरस्वतीनगर तथा सरस्वती नगर के उपनगरों में पधारकर प्रवचन दर्शन वंदन का लाभ लेने के उपलक्ष्य में भेंट।
- 1100/- श्रीमती ललिता धर्मपत्नी श्री राजाबाबू जी चौपड़ा, जोधपुर, अपने सुपुत्र सौरभ चौपड़ा (सुपौत्र स्व. श्रीमती सज्जनकंवर धर्मपत्नी स्व. श्री हीरालाल जी चौपड़ा) के सी.ए. फाइनल में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होने की खुशी में भेंट।
- 1100/- श्रीमती सुशीला जी-श्री कंवलराज जी मेहता, जोधपुर, सुपौत्री सुश्री स्मिति मेहता सुपुत्री श्रीमती नूतन जी-नरेन्द्र जी मेहता-दिल्ली के सी.ए. बनने पर सप्रेम भेंट।
- 1100/- श्री पदमचन्द जी सुरेशचन्द जी बाफना (भोपालगढ़), जोधपुर, श्री आशीष बाफना, सुपुत्र सुरेशचन्द जी बाफना के सी.ए. बनने पर सप्रेम भेंट।
- 1100/- श्री रूपकुमार जी-श्रीमती देवी जी चौपड़ा, पाली, अपने सुपुत्र श्री प्रिन्स चौपड़ा के सी.ए. बनने पर सप्रेम भेंट।
- 1100/- श्रीमती केसरकंवर जी, मंजु जी, श्री संदीप जी, श्रीमती शालु जी, ध्रुव जी धारीवाल, जोधपुर, स्व0 श्री मूलराज जी धारीवाल की चतुर्थ पुण्यतिथि पर स्मरणार्जलि स्वरूप भेंट।
- 1100/- श्री शांतिलाल जी, मुकेश कुमार जी पींचा, जोधपुर, परमपूज्य महासती शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. एवं महासती कान्ता जी म.सा. आदि ठाणा के रामेश्वर नगर पधारने पर भेंट।
- 1100/- श्री अशोक कुमारजी, मंजूजी, आशिषजी जैन (हरसाना वाले), मानसरोवर-जयपुर, चि. अभिषेक सुपुत्र श्री अशोककुमारजी जैन का शुभविवाह सौ.कां. नेहाजी सुपुत्री श्री अभिनन्दनजी जैन, अलवर के संग 16 जनवरी 2013 को सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।
- 1100/- श्री प्रसन्नमलजी, अनिल कुमारजी लोढ़ा, मालवीय नगर-जयपुर, सौ.कां. तृप्तिजी, सुपुत्री श्री अनिल कुमारजी, सुपौत्री श्री प्रसन्नमलजी लोढ़ा का शुभ-विवाह चि. अभिमन्युजी चौधरी के संग दिनांक 16 जनवरी, 2013 को सुसम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।
- 1001/- श्री अमीरचन्दजी जैन, गंगापुरसिटी-सवाईमाधोपुर, चि. सौरभजी सुपुत्र श्री सतीशचन्दजी, सुपौत्र श्री अमीरचन्दजी जैन का शुभ विवाह दिनांक 24 नवम्बर 2012 को सौ.कां. नीतूजी, सुपुत्री श्री सुमतचन्दजी जैन के संग सुसम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।
- 1000/- श्रीमती कमला जी सुराणा-श्री हणवन्तमल जी सुराणा, जोधपुर द्वारा सप्रेम भेंट।
- 501/- श्री सौभाग्यमलजी, हरकचन्दजी, हनुमानप्रसादजी, महावीर प्रसादजी, कपूरचन्दजी जैन (बिलोता वाले), सवाईमाधोपुर मातुश्री की पुण्य स्मृति में भेंट।
- 501/- श्री रतनचन्द, जतनचन्द, दौलतमल, इन्द्रचन्द, प्रेमचन्द व कुशलचन्द लोढ़ा, किशनगढ़ शहर, अपनी पूज्या माताजी श्रीमती नरकल बाई जी लोढ़ा का 29 दिसम्बर, 2012 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।
- 501/- श्री राजेन्द्र जी-सरिता जी गांग, जोधपुर, श्री राहत गांग सुपुत्र राजेन्द्र गांग सुपौत्र स्व. श्री मनोहरमल जी गांग के सी.ए. बनने एवं कृति-राहत गांग के जन्मदिवस के प्रसंग पर भेंट।
- 500/- श्रीमती सुशीला जी एवं संजय जी-नीतू जी मेहता, जोधपुर, श्री अर्जुनराज जी मेहता सुपुत्र स्व. श्री गुलराज जी मेहता को जिला कलेक्टर, जोधपुर द्वारा गणतन्त्र दिवस पर सम्मानित करने के प्रसंग पर सप्रेम भेंट।
- 500/- श्री हीरेशचन्दजी, राजेन्द्रजी, अनिलजी, सुनीलजी पोरवाल, जयपुर, श्रीमती कांतादेवीजी

धर्मपत्नी श्री हरिशजी पोरवाल का दिनांक 25 दिसम्बर 2012 को संथारे सहित समाधिमरण हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

- 500/- श्री वीरेन्द्र जी सिंघवी, जोधपुर, अपने पूज्य पिताजी श्री कनकमल जी सिंघवी का 5 जनवरी, 2013 को स्वर्गवास होने पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।
- 500/- श्री देवेन्द्रनाथ जी-कमला जी, लोकेन्द्रनाथ जी-रितु, लोरी मोदी, जोधपुर, श्री हुकमनाथ जी एवं श्रीमती कृष्णा जी मोदी की 31 वीं एवं 11 वीं पुण्यतिथियों पर भावांजलि स्वरूप भेंट।
- 500/- श्री देवेन्द्रनाथ जी-कमला जी, लोकेन्द्रनाथ जी-रितु, लोरी मोदी, जोधपुर, श्री विश्वम्भरनाथ जी मोदी के स्वर्गगमन 5 जनवरी, 2013 पर श्रद्धांजलिस्वरूप भेंट।
- 500/- श्री निर्मल जी भण्डारी, जोधपुर, शासनप्रभाविका साध्वी प्रमुखा महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा 7 के रामेश्वर नगर पधारने एवं दर्शन-वन्दन, प्रवचन का लाभ लेने के उपलक्ष्य में भेंट।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को साभार प्राप्त

- 5000/- श्रीमती वन्दनाजी सुभाषजी भण्डारी, दुबई, सुपुत्री सौ.कां. प्रेक्षा का शुभ-विवाह चि. हिमांशुजी बाफना के संग दिनांक 5 फरवरी 2013 को सुसम्पन्न होने जा रहा है, उसकी खुशी में सप्रेम भेंट।
- 5000/- श्री बुद्धिप्रकाश जी, नरेन्द्रकुमार जी, महेन्द्रकुमार जी जैन, कोटा, चि0 गौरव सुपुत्र नरेन्द्र जी जैन का शुभविवाह 10 दिसम्बर, 2012 को सम्पन्न होने पर भेंट।
- 1151/- श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, श्यौपुर (मध्यप्रदेश), पर्वाधिराज पर्युषण पर्व-2012 सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।
- 500/- श्री मुकेशकुमार जी राकेशकुमार जी लोकेशकुमार जी जैन करेला वाले, बजरिया-सवाईमाधोपुर, पूज्य पिताश्री सुश्रावक श्री प्रभुलाल जी जैन की पुण्य स्मृति में सादर सविनय भेंट।

अ.भा.श्री जैन रत्न.आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड को साभार प्राप्त

- 9101/- श्रीमती ताराबाई मदनलाल जी डाकलिया, जलगांव, वरिष्ठ स्वाध्यायी सम्मान से 18 नवम्बर, 2012 को वृहद् अधिवेशन, जयपुर में सम्मानित होने के उपलक्ष्य में सादर सप्रेम भेंट।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल हेतु साभार प्राप्त

- 5001/- श्रीमती कुशलदेवीजी धर्मसहायिका श्री प्रकाशचन्दजी डागा, जयपुर, आचार्य भगवन्त एवं उपाध्याय भगवन्त की दीक्षा अर्द्धशती के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

मंडल के सत्साहित्य प्रकाशन हेतु साभार प्राप्त

- 31000/- श्री प्यारेलाल सायरकँवर कोठारी चेरीटेबल ट्रस्ट से प्राप्त अर्थसहयोग से मण्डल से प्रकाशित पुस्तक मान व्याख्यान माला के तृतीय संस्करण हेतु सप्रेम अर्थ सहयोग प्राप्त।

**गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना
(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)
दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची**

- 12000/- श्री उमरावमल जी श्रीपाल जी सुराणा, चेन्नई, पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं पंडितरत्न उपाध्यायश्री मानचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के उपलक्ष्य में।
- 12000/- श्री पुखराज जी आयुष कुमार जी आबड, पलासनी वाले, चेन्नई, पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं पंडितरत्न उपाध्यायश्री मानचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के उपलक्ष्य में।
- 12000/- श्रीमती गीता शर्मा सुपुत्री श्री रामगोपाल जी शर्मा, जयपुर, सहायतार्थ।
छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य श्री हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट (Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- श्री अशोक जी क्वाड, 33, Montieith Road, Egmore, Chennai-600008 (Mob. 9381041097)

आगामी पर्व

माघ शुक्ला 2, मंगलवार	12.02.2013	आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. का 93 वां दीक्षा-दिवस
माघ शुक्ला 8, सोमवार	18.02.2013	अष्टमी
माघ शुक्ला 14, रविवार	24.02.2013	चतुर्दशी, पक्खी
फाल्गुन कृष्णा 8, मंगलवार	05.03.2013	अष्टमी
फाल्गुन कृष्णा 14, रविवार	10.03.2013	चतुर्दशी
फाल्गुन कृष्णा 30, सोमवार	11.03.2013	पक्खी
फाल्गुन शुक्ला 8, बुधवार	20.03.2013	अष्टमी
फाल्गुन शुक्ला 14, मंगलवार	26.03.2013	चातुर्मासिक पक्खी, चतुर्दशी

आवश्यक सूचना

27 जनवरी, 2013 को जयपुर में आयोजित सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल की कार्यकारिणी बैठक में "जिनवाणी" की उत्कृष्टता हेतु कतिपय निर्णय लिए गए हैं, जिनमें से कुछ नियम निम्नानुसार हैं-

1. साभार-प्राप्ति-स्वीकार के अन्तर्गत अब आजीवन सदस्यों के नामों का उल्लेख नहीं किया जाएगा।
2. 1100 रुपये या इससे अधिक राशि प्रदान करने पर ही जिनवाणी में नाम प्रकाशित किया जाएगा।
3. जिनवाणी की सदस्यता अब 20 वर्षों के लिए प्रदान की जाएगी तथा सदस्यता शुल्क 500 रुपये से 1000 रुपये किया जाएगा।

-मंत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर (राज.)

जयगुरु हस्ती

जयगुरु हीरा

जयगुरु मान

क्रोध पर विजय प्राप्त करनी हो तो क्षमा धारण करें।

- आचार्यश्री हस्ती



जोधपुर में प्लॉट, मकान, जमीन, फार्म हाउस
खरीदने व बेचने हेतु सम्पर्क करें।

पद्मावती

डेवलपर्स एण्ड प्रोपर्टीज

महावीर बोथरा

09828582391

नरेश बोथरा

09414100257

292, सनसिटी हॉस्पिटल के पीछे, पावटा, जोधपुर 342001 (राज.)

फोन नं. : 0291-2556767



जयगुरु हस्ती

जयगुरु हीरा

जयगुरु मान



अहंकार की तुष्टि ही सबसे बड़ी विकृति है।

- आचार्य श्री हीरा

**C/o CHANANMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIERS
S. RAJAN FINANCIERS**

218, Ashoka Road, Lashkar Mohalla,
Mysore-570001 (Karnataka)

With Best Compliments from :

*C. Sohanlal Budhraj Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurav, Akhilesh Baghmar*

Tel. : 821-4265431, 2446407 (O)

Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)



जयगुरु हस्ती

जयगुरु हीरा

जयगुरु मान

सामायिक वह महती साधना है, जिसके द्वारा जन्म-जन्मान्तरों
के संचित कर्म-मल को नष्ट किया जा सकता है।

BALAJI AUTOS

(Mahindra & Mahindra Dealers)
618, 619, Old No. 224, C.T.H. Road
Padi, Mannurpet, Chennai - 600050
Phone : 044-26245855/56

BALAJI HONDA

(Honda Two Wheelers Dealers)
570, T.H. Road, Old Washermenpet, Chennai - 600021
Phone : 044-45985577/88
Mobile : 9940051841, 9444068666

BALAJI MOTORS

(Royal Enfield Dealers)
138, T.H. Road, Tondiarpet, Chennai - 600081
Maturachaiya Shelters,
Annanagar
Mobile : 9884219949

BHAGWAN CARS

Chennai - 600053
Phone : 044-26243455/66



परस्मलसुरेश कुमार कोथारी

With Best Compliments from :



परस्मलसुरेश कुमार कोथारी

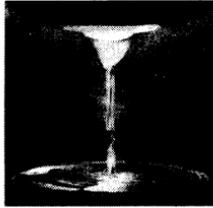
Parasmal Suresh Kumar Kothari

Dhapi Nivas, 23, Vadamalai Street,
Sowcarpet, Chennai - 600079
Phone : 044-25294466/25292727

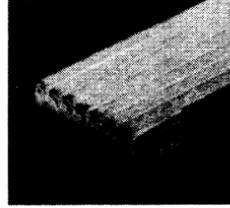
Gurudev



DRI Plant



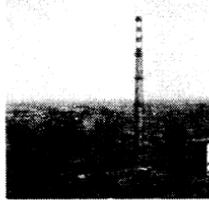
Electric Arc Furnace



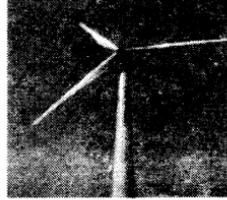
Billets



Rolling Mill



Captive Power Plant



Windmill

With best wishes from



SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL | POWER | MINING

॥ श्री महावीराय नमः ॥

हस्ती-हीरा जय जय !

हीरा-मान जय जय !



छोटा सा नियम धोवन का ।
लाभ बड़ा इसके पालन का ॥

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजाने के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.

एवं समस्त

रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल

के चरण कमलों में भावभरा कोटिशः वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHIVIRAJ PREM KUMAR KAVAD

690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056

Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273



MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD

GURU HASTI THANGA MAALIGAI

(JEWELLERS & BANKERS)

5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056

Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55



जयगुरु हस्ती

जयगुरु हीरा

जयगुरु मान



प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899



गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

(संरक्षक - अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ)

दीक्षा अर्द्धशती के पावन प्रसंग पर छात्रवृत्ति में सहयोग कर लाभ लिरावें...

आचार्य हस्ती के पट्टधर आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द जी म.सा. एवं पंडितरत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के 50वें दीक्षा वर्ष के उपलक्ष में छात्रवृत्ति योजना में 50,000/- रुपये या एक छात्र के लिए 12,000/- रुपये अथवा उनके गुणक में छात्रवृत्ति राशि का अतिशीघ्र सहयोग करावें।

**दीक्षा अर्द्धशती महान्
जय गुरु हीरा, जय गुरु मान**

अनन्य गुरुभक्त जो भी इस योजना में अर्थ सहयोग करना चाहते हैं, वे बैंक, ड्राफ्ट या नकद राशि द्वारा जमा कर या भेज सकते हैं। कोष का खाता विवरण इस प्रकार है-

A/c Name - Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund

A/c No. - 168010100120722

Bank Name & Address - AXIS BANK LTD. Anna Salai, Chennai (TN)

IFSC Code - UTIB0000168

PAN No. AAATG1995J

Note : Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

सहयोग के लिए बैंक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें-

B.BUDHMAL BOHRA

No.-53,Erullappan street, Sowcarpet, Chennai - 600079 (T.N.)

Telefax No - 044-42728476

अधिक जानकारी एवं सहयोग करने के लिए सम्पर्क करें-

बुधमल बोहरा संयोजक मो. 9444235065	हरीश कवाड़ सह-संयोजक मो. 9500114455	मनोज कांकरिया सह-संयोजक मो. 9414563597	रविन्द्र जैन सचिव मो. 9413401835
---	---	--	--

**अनूठा दान छात्रवृत्ति का,
जीवन बनता एक विद्यार्थी का।**

जयगुरु हस्ती

जयगुरु हीरा

जयगुरु मान

सांखला परिवार की ओर से निवेदन

हम :

मदन मोहन सांखला,
 सौ. हेमलता मदन सांखला
 मेहुल मदन सांखला
 सौ. प्रणिता मेहुल सांखला और
 बेबी बुणम मेहुल सांखला

चौबीसों तीर्थंकरों के चरण
 कमलों पर मस्तक रखते हैं
 और

विनम्रता तथा गौरव के साथ
 जाहिर करते हैं कि

“जिनवाणी” के

उत्कर्षदायी तथा पुण्यात्मक कार्यों में

हमारा सहर्ष

सदैव सहकार रहेगा।



*Jai Guru Hasti**Jai Guru Heera**Jai Guru Maan*

BHANSALI GROUP

Dhanpatraj V. Bhansali

BHANSALI DEVELOPERS

Sharda Bhawan, 2nd Floor, Nandapatkar Road,
Vile Parle (E), Mumbai - 400 057

Tel. : (O) 26185801 / 32940462

E-MAIL : bhansalidevelopers@yahoo.com

JAI GURU HASTI

JAI GURU HEERA

JAI GURU MAAN

प्यास बुझाये, कर्म कटाये फिर क्यों न अपनायें धोवन पानी

With best compliments from :

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDI WAL



S.UMEDRAJ JAIN (HUNDI WAL)

☎ 098407 18382

2027 'H' BLOCK 4th STREET, 12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
☎ 044-32550532



BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.

S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
☎ 044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.

NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
☎ FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL: appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES

NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
☎ 044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS

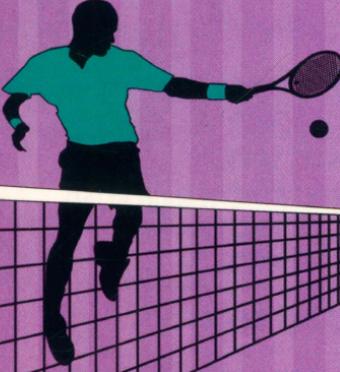
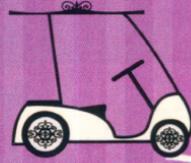
NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
☎ 044-26250564



आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-21/2012-14
वर्ष : 71 ★ अंक : 02 ★ मूल्य : 10 रु.
10 फरवरी, 2013 ★ माघ, 2069

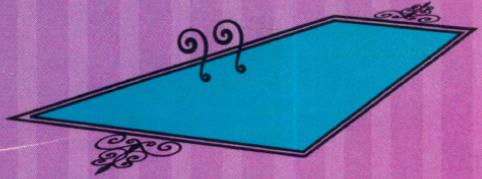
THE AURA TOUR

Take a journey that's sure to change
the way you live forever.



Challenge your neighbours to a quick
game of tennis, squash or basketball.

Or dive in for a couple of laps while the
children splash about in the toddlers' pool.



The Aura Tour is a unique excursion into one of the finest addresses in the central suburbs. The minute you arrive, a well-informed representative will be at hand to lead you to your personal golf cart. For it's only as you coast down the winding, tree-lined pathways that you will truly appreciate the magnitude and magnificence of this sprawling enclave. To experience the life that awaits you at Kalpataru Aura, we suggest you schedule an appointment right away.

KALPATARU
aura

Ghatkopar (W)

READY POSSESSION

Call +91 99302 53024 or +91 96190 93781 | Email: auratour@kalpataru.com | Visit: www.theauratour.com

Kalpataru Aura Clubhouse awarded 'Best Leisure Development, India' at the Asia-Pacific Property Awards 2012 | Luxurious 2 & 2.5 BHK apartments
Two clubhouses with gymnasium, spa and yoga room | Mini-theatre and multi-function room | Swimming pool | Gardens & play area

Site Address: L.B.S Marg, Ghatkopar (W), Mumbai - 400 086. Head Office: 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai- 400 055.

Tel: +91 22 3064 3065 | Fax: +91 22 3064 3131 | Email: sales@kalpataru.com | Website: www.kalpataru.com

All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purpose only. Conditions apply. Kalpataru Aura is secured with Standard Chartered Bank. The No Objection Certificate/Permission would be provided, if required.

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक - विनय चन्द डागा द्वारा दी डामयण्ड प्रिंटिंग प्रेस, जौहरी बाजार, जयपुर
से मुद्रित व सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर - 302003 से प्रकाशित। सम्पादक - डॉ. धर्मचन्द जैन